समकालीन कहानी सन्दर्भों के घेरे मे
(आलोचना)



दीपक पब्लिशर्ज़, माई हीरा गेट, जालन्धर 144 008

समकालीन कहानी : सन्दर्भों के घेरे में

गीताली वर्मा

समकालीन कहानी सन्दर्भों के घेरे मे
(आलोचना)
गीताली वर्मा
प्रथम सस्करण 1990

प्रकाशक
दीपक पब्लिशज,
माई हीरा गट,
जालन्धर-144 008

कम्पोजिंग
पलाहा कम्पोजिंग हाऊस,
एन० एच० 386, नीला महल, जालन्धर ।

मुद्रक
सटी प्रिंटज,
फगवाडा गेट, जालन्धर ।

आवरण चित्र
सुव्रत

मूल्य 40 रुपय

SAMKALEEN KAHANI SANDARBHON KE GHERE MEIN
(Criticism)
Geetali Verma
First Edition 1990
Price Rs 40

समर्पण

साहित्यमर्मज्ञ विदुषी ममतामयी माँ
उषा निराला को
जिनका प्रकाश पुंज सदैव मुझे
प्रेरणा देता रहेगा

पूर्व आत्मकथ्य

'समकालीन कहानी सन्दर्भों के घेरे मे' के रूप मे नयी कहानी को एक और सोपा न प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रयत्न मे कितनी सफलता मिली या यह प्रयत्न कितना साथक रहा, यह मेरे वश की बात नहीं है। इस पुस्तक को लिखना मेरे लिए सिफ लिखना ही नहीं था, बल्कि आधुनिक जीवन की पीडाओ को झेलते हुए व्यक्ति की सहभोक्ता भी बनना था, इसके जीवन को कही गहराई से, तमस से निकल कर एक नये उजास को देखने का अवमर मिले। इस पुस्तक को लिखने की अवधि मे मुझ सामान्य व्यक्ति की नजदीकी प्राप्त करने का अवसर मिला और अमूल्य साहित्य का अध्ययन करने का भी, जो मेरे लिए अत्य त लाभकारी सिद्ध हुआ।

मैं यह तो नही कहती कि यह पुस्तक हर दृष्टि से नवीनता लिय हुए है, लेकिन फिर भी नव्यता प्रदान करने का भरसक प्रयत्न किया गया है। समकालीन कहानी मे सदर्भों के माध्यम से व्यक्ति की स्थिति को आकने का केवल प्रयत्न कर दिया गया है।

इस पुस्तक को लिखत हुए मैंन सभी रूढिबद्ध औपचारिकताओ को तिलाजलि देते हुए किसी भी प्रकार के क्रम का पालन करन का प्रयत्न नही किया और न ही किसी प्रकार के शीपका मे व्यक्ति और उसकी स्थितियो, विकृतियो को बाधन की चेष्टा की है। जिस प्रकार एक सामान्य व्यक्ति क जीवन मे जाने अनजान पडाव दर पडाव आत है चले जाते है, जिसका उसे गुमान भी नही होता और वह उन्हे झेलन को तत्पर रहता है, वही इस पुस्तक के साथ हुआ। न कोई सिलसिला रहा और न कोई औपचारिकता। केवल आधुनिक परिवेश मे जीने वाले सामान्य व्यक्ति की जिन्दगी का खुला दस्तावेज है, जो न जाने कितन मोड ले रहा है, और लेने की सभावनायें अपन अन्दर सजाय है, जिसका उसे पुर्वाभ्यास तो कतई नही है, इसलिए एसे व्यक्ति का शीपको और अध्यायो मे विभक्त करना मैंने उचित नही समझा। एक प्रवाह है जो कहीं उठता, गिरता और टकराता है, सिफ आग बढन की आकाक्षा में।

इस पुस्तक को लिखत हुए मैंने डा० पुष्पपाल सिह, डा० वेद प्रकाश अमिताभ, डा० गोविन्द मिश्र, कृष्णा अग्निहोत्री की पुस्तको से पूरा पूरा लाभ प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से लेखको की पुस्तका से सहायता मिली है, जिनका उल्लेख मैंने अन्त म किया है। जिनका उल्लेख मैं, जाने अनजाने या स्मृतिवश नही कर

पायी उनकी मैं हृदय से क्षमाप्रार्थी हू । नय कहानीकारा की कहानियों और कहानी सग्रह, जितने मेरी दृष्टि और पहुच म आ सके, उन्ह पढने और लाभ लेने का भरपूर प्रयत्न किया, फिर भी जो सयोगवश उपलब्ध नहीं हो पायी, उनके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हू ।

डा० हरमहेन्द्र सिंह बदी, जो इस काय के प्रेरणा स्रोत रहे, उन्हें मेरा नमन । इसके अतिरिक्त श्री रणधीर सिंह बदी, पुस्तकाल्याध्यक्ष नगर निगम, जालन्धर की मैं हृदय से आभारी हू, जिन्होंने मुझे इतनी अमूल्य पुस्तकें उपलब्ध कराइ, उनका स्मरण मैं अपना कत्तव्य समझती हू । इन सब के स्रोत मे स्थित मेरे श्रद्धय माता पिता, जिनके बारे मे मैं जितना भी कहू कम ही होगा, वैसे भी, जो भी किया गया है, उनका ही देय है, उसका मापन क्या करू ? उनके विषय में अधिक कुछ कहना औपचारिकताओं का पालन करना होगा । यह सब उन्हीं की असीम मेहनत, लगन और निष्ठा का प्रतिफल है । मैं उनकी दीर्घायु होने की कामना सवव्यापी से सदव करती रहूगी ।

1171/8 सुरजीत नगर, गीताली वर्मा
नकोदर रोड,
जालन्धर शहर 144001

समकालीन कहानी सदर्भो के घेरे मे

आधुनिक हिन्दी कहानी अपने परिवेश के प्रति एक गहरी जागरूकता लिए हुए है। परिवेश के प्रति यह गहरी जागरुकता उसके चरित्र को सामाजिकता से सलग्न कर देती है। इस प्रकार अपने समाज का जीवन साक्षात्कार आधुनिक कहानी की सवेदना का मूल आधार कहा जा सकता है। कहानी के जीवन से गहर रूप मे जुडने के कारण स्वाभाविकता आयी, उसके कारण कहानीकार न समाज और उसकी बहुविध समस्याओ का विविध आयामो मे सशक्त चित्रण किया है। आज कहानी की मुख्य सवेदना सामाजिक समस्याओं के चित्रण से सबद्ध है। आज वह मनुष्य के उस भयावह और त्रासद यथाथ को उकेरती है, जिसके कारण व्यक्ति की जीवन जीने की स्थितिया विषम से विषमतर होती जा रही हैं। इस प्रकार आज कहानी मे सामाजिक परिदृश्य इस रूप म मूत हुआ है। एक ओर तो वह जीवन की विषमताओ और विसगतिया को प्रत्यक्ष करता है साथ ही दूसरी ओर उसमे एक लेखकीय सोच भी है, जा निश्चय वी सडी गली व्यवस्था और भष्ट आचरण को जडमूल से उखाड फेंकने की समानातर सोच, एक सटीक, स्पष्ट सोच विकसित करने का श्रेष्ठ उपक्रम सिद्ध होती है। इसी रूप मे आज का कहानीकार एक रचनात्मक दायित्व का निर्वाह करता हुआ अपने सजनशील व्यक्तित्व को स्थापित करता है।

आज की कहानी के प्रारभिक दौर 'नयी कहानी' के समय से ही सामान्य व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की आर्थिक तगियों से गुजरना पडा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही जनता ने जो खुशहाली के स्वप्न पाले थे, स्वतन्त्रता के बाद के वर्षो मे व बुरी तरह भरभरा कर टूट गए। नयी कहानी मे सामान्य व्यक्ति की इस आर्थिक तगी का सशक्त चित्रण कुछ कहानिया मे हुआ है। 'राजा निरबसिया' कमलेश्वर की, 'दोपहर का भोजन', अमरकात की 'मास का दरिया', कमलेश्वर की कहानियो म 'राजा निरबसिया मे चदा का पैसे के अभाव मे कंपाउडर वचनसिह के हाथा स्वय को सौंपना, जुगनू की बीमारी के साथ ही आर्थिक स्थिति स बिल बिलाना (मास का दरिया) माकण्डेय की कहानी 'दूध और दवा' की मुन्नी और उसकी मा का आर्थिक मार से टूटना, जिन्दगी और जोक (अमरकान्त) नन्हो (शिव प्रसाद सिह) 'आदमी का आदमी' (काशीनाथ सिह) आदि अनेक कहानियो मे सामान्य व्यक्ति के अर्थाभावो का अत्यन्त सजीव चित्रण प्राप्त होता है। सत्तर के दशक मे मनुष्य की आर्थिक विपन्नता और

वढ गयी । सन० 1962 मे चीन से हुए प्रथम युद्ध और फिर 1965 एव 1971 मे हुए भारत पाक युद्ध की श्र खला ने हमारी कमजोर आर्थिक व्यवस्था के ढाचे को बुरी तरह चरमरा दिया । इन युद्धो ने अनेक रूपो म अथव्यवस्था पर दवाव डाल कर सुरसा की तरह मु ह फाडती महगाई को और भी वढा दिया । अकाल, सूखा, अनिवष्टि ने दश मे अ न और दूसरे खाद्य पदार्थों का सकट उत्पन्न कर दिया । मुद्रा-स्फीति और मुद्रा-अवमूल्यन के कारण मुद्रा की क्रय शक्ति का ह्रास कर जनता के लिए कमरतोड महगाई, करो का न वहन कर पाने वाला भार देकर सामान्य वग को ऐस जजाल मे फसा दिया कि उसका पार पाना कठिन हो गया । चारो ओर व्याप्त भ्रष्टाचार, नौकरशाही की अकमण्यता न उसे जीवन की हर जरूरत म जोड तोड लगाने वाला बना दिया । आज व्यक्ति किसी प्रकार पैसा जुटाकर उसे हाथ मे लेकर वाजार म घूम रहा है तो उसकी जरूरत की चीजें गायव होती जा रही हैं । जिन्दगी की छोटी जरूरत के लिए व्यक्ति को कतार मे घटा खडा होना पडता है । वढती हुई जनसख्या के भयानक आकडा न तो इन समस्याओ को और भी उलझाकर शिक्षित वेरोजगारी, वरोजगारी, आक्रोश और हिंसा को जन्म दिया है ।

जीवन म ये अथ सकट सामान्य व्यक्ति या निचले स्तरीय जीवन जीने वालो को ही भोगने पडे हो, एसा नही है । समाज के उच्चवग केवल पू जीपति वग और उस वग को छोडकर जो काल धन क पक्ष के वल पर जीता है, को भी आर्थिक समस्या का सामना करना पडता है । यही कारण है आज का साहित्यकार भी अधिकाशत मध्यम वग से ही उठकर आया है और उसन भोगी हुई त्रासदी को अपने लेखन का विषय वनाया है । सामान्य व्यक्ति द्वारा जीवन के प्रत्यक क्षेत्र म आर्थिक मोर्चों पर जा लडाई लडी जा रही है उसे आधुनिक कहानी मे अत्यत विस्तार और गहराई स चित्रित किया गया है । आज के व्यक्ति को जीवन म 'अधरे का सैलाव' (से० रा० यात्री) उमड आया है । आज की कहानी का व्यक्ति त्रस्त है आर्थिक पीडा से और कुछ रुपये अपने खर्चों मे से बचा कर दीवाली, होली की खुशिया खरीदना चाहता है । वही अपन से अधिक अमीर को देखकर मृगतष्णा का शिकार हो जाता है । वह भारी भूल तव कर वठना है जवकि अपनी स्थिति को दूसर अफसरो से तोलन लगता है । इस प्रकार उसे अपनी विपन्नता और भी सालने लगती है । सामान्य सी आय वाला व्यक्ति जिन इच्छाआ को लेकर जीवित रहता है वे उसकी विवशता स परिचित कराती हुई उसके जीवन मे दूर तक फैले तमस का परिचय देती है ।

आज का आदमी इस अथ समस्या से जूझते हुए जिन्दगी का भार ढो रहा है और इधर सरकार 'गरीबी हटाओ' का खोखला नारा लकर आयी । इस नार ने गरीबी तो क्या ही हटायी, वल्कि व्यक्ति के अन्दर आक्रोश और भर दिया । रवीन्द्र

कालिया ने तो इस गरीबी को देखते हुए, महसूस करते हुए 'गरीबी हटाओ' नाम का कहानी सग्रह ही लिख डाला। इस सग्रह ने इस नारे के थोथेपन को उजागर किया है।

आज का युवा वग शिक्षित हो कर भी बरोजगार है। पढ लिख कर भी शिक्षित बेरोजगारी भी आज के जीवन का एक तरह से अर्थाभाव का ही शाप है। समकालीन कहानी ने इसे बहुत ही विस्तार स और उसके सभी सदर्भों मे चित्रित किया है।

आज के जीवन की सबस बडी समस्या युवा वग मे बेरोजगारी है। बरोजगारी का एक सबसे बडा कारण उचित व्यक्ति को समुचित रोजगार का न मिलना ह। आज के युग म योग्यता और शिक्षा को महत्व न देते हुए सिफारिश को अधिक महत्व दिया जाता है। इस स्थिति न युवा मन मे एक गहरी निराशा और आक्रोश का ज म दिया है।

निमल वर्मा की कहानी 'ल दन की एक रात' मे इस समस्या का बहुत ही जीव त चित्रण हुआ है। "मैं दूसरी बार वहा गया था। पहली रात देर से पहुचा था। जाने से पहले ही सारा काम बट चुका था। मैं फिर भी अनिश्चित सा गेट के बाहर खडा था, सोच रहा था शायद आखिरी क्षण उ ह किसी आदमी की जरूरत पडेगी और वे मुझे बुला लेंगे। देर तक धडधडाती मशीनो के भीतर सोडे की बातला का स्वर सुनाई दे रहा था। हमम से जि ह काम मिल गया था, वे जल्दी-जल्दी अपने सूट उतार कर काम के कपडे पहन रह थे।" मजुल भगत की 'नालायक बहू' कहानी मे भी शिक्षित बरोजगारी और नियुक्तियों मे होने वाले घपलो का सशक्त चित्रण प्राप्त होता है। अधिकाश नियुक्तिया कॉलम व्यर्थ ही निकलते हैं। इसी प्रकार रमश बत्तरा की कहानी 'जिदा होने के खिलाफ' का नायक अपरिचय, अकेलापन, एकाकीपन तल्खियत और खीझ स भरा रहता है। इसके साथ ही सबधो की निममता भी परिलक्षित होती है। इस प्रकार की बरोजगारी की समस्या पर समकालीन कहानी ने महत्त्वपूण योगदान दिया है, जो सशक्त भी है और साथक भी।

अर्थाभाव के कारण ही सबधो पर भी प्रभाव पडा है। इस अभाव के रहते आज या तो सबध बिखर चुके है या फिर शेष होने को हैं। आज के रिश्ते हमारी अथस्थिति पर टिके हुए हैं और चू कि अर्थाभाव है इसलिए वे दरक रहे ह, विघटित हो रहे हैं। समकालीन कहानी सबधो के बिखराव की कहानी है। कही सबध प्रेम के अतगत टूटत दिखाई देते है तो कही पति पत्नी के बीच। इन सबधो पर उषा प्रियवदा की कहानी 'वापसी जिसम गजाधर बाबू अपनी रेलवे की नौकरी से रिटायर होकर जब अपने भर पूर परिवार मे लौटते हैं तो उ ह लगता है, य सब अपन होकर भी पराये हैं, यहा तक कि उनकी पत्नी भी। और अत म यही परायापन उ ह 'वापसी पर विवश कर देना है। यशपाल की कहानी 'समय' भी वृद्ध पिता की बेचारगी और टटन का

दर्शाती है। विघटन के क्षण पिता पुत्र, भाई-बहन, भाई भाई सभी म बीच दिखाई देने लगे हैं।

इसी अपरिचय को बताते हुए कहा गया है कि हम अभिशप्त हैं। अपरिचित होने के लिए सिद्धेश की कहानी 'आश्रय' भी सबध विघटन का सही स्वरूप हमारे सामने लाती है, जिसमे नदलाल बाबू एडवोकेट का छोटा पुत्र अपनी पत्नी को लेकर घर से अलग हो जाता है। वे सबधो के इस अलगाव स दु खी होते हैं। ज्ञानरजन की कहानिया इस दृष्टि से अवलोकनीय हैं—'कलह' 'पिता' 'सबध' 'फेंस के इधर उधर', 'शेष होते हुए', आदि कहानियो म सबधो के दरकन की पीडा का अहसास कराया गया है। शेष होते हुए कहानी का मझला इसी दरकन का भोक्ता है। जब वो घर लौट कर देखता है कि एक ही घर के कई हिस्से हो गये हैं मानो य सब अपने अपने पडाव डाले हुए हैं पास पास। इसी प्रकार 'सबध' और 'कलह' कहानी मे भी परिवार के इसी टूटन की स्थिति का चित्रण है, जिससे आज का मध्यम वर्गीय जन गुजर रहा है। इसी प्रकार महीप सिंह की कहानी 'नाला' की प्रमुख पात्र सबधो के इस बिखराव को तीव्रता से अनुभव करती है। इस परिवार के सब सदस्य सबसे कटे हुए और घुटन म दिन गुजार रहे हैं। रमेश बक्षी की कहानी 'मातम' मे सबधो के शेष होने की स्थिति को बहुत ही महत्वपूर्ण स्तर पर ले जाकर चित्रित किया है। सयुक्त परिवार के बिखरने की स्थिति को इस महानगरीय परिवेश मे कथित नहीं सर्जित किया गया है। मा अपने पुत्र और बहू को अपने देवर और चाचा के मातम क लिए जबरदस्ती भेज देती है, किन्तु वे बेलूर म चाचा के घर ढूढने की परेशानी से बच कर निर्णय लेते हैं "चाचा स्वर्ग से उतरकर भी मा से शिकायत करने थोडे ही आयेंगे। क्या मतलब ? लौट चलो ना।" वास्तव म चाचा का सबध बोध अगली पीढी को नही है, केवल मा ही शोकग्रस्त है। रश्मि तन्खा की कहानी 'चौथा बेटा' म भी परिवार के लोग एक दूसर से कटे हुए हैं कि कोई भी उन्हे एक परिवार का नहीं कह सकता।

"अपने घर मे उसने खुद को सदा एक बाहरी व्यक्ति जसा महसूस किया है। उसे लगता है एक ही परिवार मे रहने वालो, एक ही भाषा बोलने वालो के बीच भी 'लैंग्वेज प्राब्लम' हो सकती है। अगर उन्हे बराबर यह महसूस होता रह कि दे आर नाट आन दी सेम वेव लैंथ।"

ममता कालिया की कहानी 'खाली होता हुआ घर' मे लडकी सुमित्रा ससुराल से मायके आकर पिता को रिटायरमट और बुढौती के लिए तैयारी करती देखती है तो वह उनका अतीत से मिलान करती हुई देखती, सोचती है, "इन्हे तो बूढा होने मे अपार श्रम करना पडेगा"। गोविन्द मिश्र की 'घेरे' का कथानक भी ऐसा ही है जिसम बुढापे और रिटायरमट को सही रूप मे परिभाषित किया गया है, "रिटायरमेंट

अवकाश प्राप्ति छुट्टी वधन से मुक्ति की ओर या जीवन मे ही मत्यु का पूर्वाभ्यास दोनो मे से क्या माना जाये इसे।" राजी सेठ की 'उसका आकाश' मे बडी बहू का उपक्षापूण, रूखा व्यवहार, इस सबके बीच, अपने एकाकीपन मे समर्पिता मत पत्नी की याद उसे रह रह कर सालती है। उस पत्नी के चले जाने पर शारीरिक स्तर पर ही नही, मानसिक स्तर पर भी पक्षाघात हुआ है।

सुरेन्द्र सुकुमार की कहानी 'पोषक भक्षी' के पात्र मिश्रा जी की वद्धावस्था की पीडा उभारी गयी है, जिन्हें अपने भरे पूर घर मे कही भी पत्नी के स्मृति चिन्ह, पान की डिबिया रखने की आज्ञा नही है। आखिरकार वे पडासी के घर सभालने को कह कर ही निश्चित हो पाते है। इस अवहलना से क्रुद्ध होकर वे अपना आक्रोश भी व्यक्त करते है, "बच्चू, मुझे भी तुडवा डालो। मैं भी भददा और पुराना हो गया हू। आखिरकार क्या चाहते हो तुम लोग ?" ये कहानी ऐसे व्यक्ति की पीडा को दर्शाती है जिसने जिन्दगी भर गहस्थी बनाने के लिए कडा परिश्रम किया। राकेश वत्स की 'गुलाम मे उस पिता की पीडा को उकेरा है जो अपनी बेटी के यहा उसका नौकर भी न होकर गुलाम बन गया है। जो उसे मानसिक स्तर तक पीडित करता है। नीता जैन की 'बाट' मे वद्धा मा का ऐसा ही हाल है, जिसका पति मर चुका है और वह अपने बहू बेटे की देहलीज पर एक शरणार्थी बन कर रह गयी है। मानो उसका यह अधिकार या कहना चाहिये कत्तव्य और गलती थी कि उसे शहर मे पढा लिखा सुख का स्वप्न देखा। सभी सबधो की सलीब ढो रहे हैं बेमन से, आत्मीयता का नामोनिशान तक नही हैं।

इस प्रकार नई कहानी ने सबधो की दरार को बहुत बारीकी से देखा है और बहुत गहरे जाकर पहचाना है। विभाजन भारतीय समाज के जीवन मे भयकर विस्फोट के रूप म प्रकट हुआ, जिसके कारण आर्थिक समस्या के साथ 2 राष्टीय जीवन की आत्मा भी स्वाहा हो गयी। शताब्दियो से सहेजी गयी परम्परायें, सस्कृति, भाषा, सस्कार, मानवीय सघर्ष, मानवीय मूल्य और विवेक, साम्प्रदायिकता की बलि चढ गये। राजनतिकता के उलझाव ने भयाक्रान्त किया कमजोर वग का और उसकी नीव जो सबधा की आस्था और पारिवारिक बधनो पर टिकी थी, *हिला दिया। यह विभाजन जितना* राजनतिक स्तर पर दुखदायक था, उससे भी कही ज्यादा सास्कृतिक स्तर पर। हिन्दू और मुसलमान एक ही धरती पर रहने के कारण एक दूसरे से भावनात्मक स्तर पर जुडे हुए थे। पाकिस्तान चाहने वाले इस लगावट को खत्म कर देना चाहते थे। इसलिए उन्होने दगा का माहौल बना कर साम्प्रदायिक घणा की अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी। फिर भी कुछ लाग जो दोना ही वर्गों स सम्बद्ध थे, एकता स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे।

महीपसिंह की कहानी 'पानी और पुल' मानवीय करूणा के संदभ म राजनतिक दुघटनायें विभाजन की निरथकता को बडे ही मार्मिक ढग से निरूपित करती हैं। राजनैतिक हितो ने धरती को तो टुकडो म बाट दिया, परन्तु उनके हृदयो म अमिट छाप छोडी हुई सस्कृति, पत्थर और लोहे के पुल के नीचे आज भी प्रवाहित हो रही है। "मरी दृष्टि नीचे की ओर जा रही थी। वहा घुप अधेरा था, पर मैं जानता था कि वहा पानी है, जेलम नदी का कल कल करता हुआ स्वच्छ जल जो पत्थर और लोह के बने पुल के नीचे बह रहा था।'

अज्ञेय की कहानी 'शरणदाता' म बाह्य परिस्थितियो के दबाव म सबधो की और मूल्यो को विघटित होने की प्रक्रिया के बीच मानवीय करूणा की शाश्वतता के प्रति आस्था के स्वर को गूज है। विषाक्त वातावरण, द्वेष, घणा, हिंसा फैलाने के लिए सम्प्रदायो के अपने सगठन और उसे शह देने को पुलिस और नौकरशाही से सबधित विवरण वातावरण की ओर उस वीभत्सता की ओर सकेत करत हैं जिससे व्यक्ति का आत्मविश्वास और मनोबल डोलने लगता है। कहानी का रफीकुद्दीन पात्र अपने पुराने मित्र का शरणदाता है, जिसका नाम देविन्दर लाल है। साम्प्रदायिक हिंसा से विषाक्त परिस्थितियो म उसकी मानवीय दृष्टि भी घणा और प्रतिशोध के लिए हिंसक हो उठी है। वह देवि दर लाल के खाने म जहर मिला देता है परन्तु शरणदाता की पुत्री जेबुन्निसा मानवीय करूणा के धम को निभा देती है, जिससे देविन्दर लाल बच जाता है। जेबू का कहना है, "हिन्दुस्तान मे भी अकलियत का कोई मजलूम हो तो इस धम को याद रखा जाय, भुला न दिया जाए यही क्या कम है साम्प्रदायिक अग्नि म नफरत के विषले धुए मे मानवीयता, दया, करूणा को बचा कर रखा जाये।

विष्णु प्रभाकर की 'मेरा वतन' अपनी धरती से अपनी सभ्यता, सस्कृति और समाज से उखडे टूटे हुए उन व्यक्तियो की यातना यात्रा है जो विभाजन के हान्स का नही सह पा रहे है और उनकी विक्षिप्तता उन्ह आग नही, पीछे की ओर खीचती है। इस आग के जलते उसे भारत म पाकिस्तान का समझ कर गोली मार दी जाती है। पाकिस्तान म भारत का जासूस समझ कर। व्यक्ति हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी हो गया है। विभाजन से टूटा हुआ व्यक्ति न अतीत को भूल पाता है, न वतमान से जुड पाता है। इस अवस्था मे वह विक्षिप्त सा हो गया है। कहानी की मूल सवेदना गहरी है और त्रासदी को झेलते हुए मत्यु तक की यातना का चित्र प्रस्तुत करती है जो बहुत ही कारुणिक है।

मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक' के विरोधाभास का उद्देश्य, सास्कृतिक सहिष्णुता और मानवीय करुणा की निरन्तरता पर राजनीति के आधार आघात की

ऐतिहासिक व्यथता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। विभाजन के साढे सात साल बाद मुसलमान की टोली हॉकी मैच देखने लाहौर से अमृतसर आयी है। टोली का एक सदस्य गनी मिया भी है। उसने अपने मकान के मलबे को पहचान लिया है। पहलवान रक्खा अपने आपको उसका मालिक कहता है। वह गनी परिवार का मित्र और विश्वासपात्र था। घृणा के उन्माद मे उसने गनी के पुत्र को मार डाला और पुत्रवधू का बलात्कार करके नदी मे बहा दिया। गनी इस सच्चाई को नही जानता था। परन्तु रक्खा के हृदय मे पश्चाताप की ज्वाला धधक रही थी। "उसके होंठ सूख रहे थे और उसकी आँखो के इर्द गिर्द दायरे और गहरे हो आए थे।" एक ओर रक्खा का निर्मम रूप और दूसरी ओर गनी का सहज, सरल विश्वास, और स्नेह विरोधी स्थितियों की विडम्बना को उभारता है। "मेरे लिए चिराग नही तो तुम लोग तो हो। मुझे आकर इतनी तसल्ली हुई कि उस जमाने की यादगार तो है। मैंने तुम को देख लिया तो चिराग को देख लिया।" रक्खा का पश्चाताप और गनी का सहज विश्वसनीय मानवीय करुणा के आधार को मजबूत बनाता है। विभाजन से हुए मलबे का मालिक न गनी है, न रक्खा है बल्कि एक कुत्ता है, जो अलगाववादी राजनीति का प्रतीक प्रतीत होता है। विभाजन के व्यथता बोध मे मानवीय करुणा की निरंतरता का बोध उपजा है। यही स्वर अज्ञेय की कहानी 'बदला' और 'लैटर बाक्स' मे भी उभरा है।

भीष्म साहनी की 'अमृतसर आ गया' और कृष्णा सोबती की 'सिक्का बदल गया' स्थिति सापेक्ष और परिस्थिति सापेक्ष क्रूर मानसिकता का परिचय देती है। 'अमृतसर आ गया' मे दुबला पतला बाबू भौगोलिक स्थिति बदलते ही हत्यारा बन गया और उससे पहले मुसलमान अपने स्थान मे उग्र थे और बाबू भयभीत था। इसी प्रकार 'सिक्का बदल गया' के साहनी और शेरा की परिस्थिति मे परिवर्तन के समान मानसिकता भी परिवर्तित होती है। विभाजन से संबंधित कुछ कहानियां समाज और व्यक्ति के जीवन मे सांस्कृतिक परिवर्तन की यातना के अनेक पक्ष सामने आये हैं। अपहरण की गयी, विस्थापित महिलाओं की समस्या से पारिवारिक वातावरण मे जो कलह और संकट पैदा हो गया है, जिसने पारिवारिक संबंधों को ही नही, सांस्कृतिक मूल्यों को भी प्रभावित किया। इससे उत्पन्न मानसिक विकृतियों और प्रक्रियाओं से कई कहानियों का सृजन हुआ है। अज्ञेय की कहानी 'रमन्ते तत्र देवता' मे हिन्दू मुस्लिम दंगे मे कलकत्ते मे रहने वाली एक स्त्री अपने पति से बिछुड गयी है। सरदार बिशन सिंह उसे संकट मे देखकर उसकी सहायता करता है। उसे पति के साथ मिलन के लिए निश्चित किए गये स्थान पर पहुंचाते हैं। किन्तु पति वहां नही मिलता और रात हो गयी। सरदार साहब उस स्त्री को अपनी विधवा बहन के साथ

गुरुद्वारे में शरण दे देते हैं। सुबह होने पर बिशन सिंह उसे उसके घर पहुचान जाते हैं तो पति जिसने मुसीबत की रात स्वय भी घर से बाहर ही बिताई थी सहसा उसके चरित्र और बिशन सिंह के चरित्र को ही चुनौती देने लगता है। बिशन सिंह को अपना ही नही सिख जाति के अपमान का अहसास होने लगता है। वह पुन सम्मानित सिखो के साथ उस स्त्री को उसके पति के पास लेकर जाते हैं। पति भयवश उसे घर मे रा रख लेता है किन्तु बिशन सिंह को उसके व्यवहार स लगता है कि स्त्री पर लाछन और स्त्री पुरुष सबध की बात खत्म नही हुई और उस स्त्री का क्या होगा ? यह प्रश्न उसके सामने है। ऐसी स्थिति म स्त्रियो की समाप्ति हत्या या आत्महत्या म होती है। वापस लाई गयी स्त्रियो को उनके सबधियो द्वारा पहचानने स इकार कर दिया गया था, स्त्री का चरित्र समाज की दृष्टि मे इतना कच्चा धागा है कि केवल सदेह मात्र का झटका ही उसे जीवन जीने के अधिकार से वचित कर सकता है।

अज्ञेय की कहानी 'मुस्लिम मुस्लिम भाई-भाई' मे मुस्लिम स्त्रियो सकीना और आमिना को पाकिस्तान स्पेशल गाडी मे जगह नही मिलती। अमजद उन्ह गाडी मे धकेल देता है। सकीना खुदा की, इस्लाम की दुहाई देती है तो गाडी मे सवार मुसलमान औरत कहती है "बडी पाक दामन बनती हो। अरे हिन्दुओ के बीच मे रही और अब उनके बीच से भाग कर जा रही हो ! आखिर कसे ? उन्होने क्या यो ही छोड दिया होगा ? सौ सौ हिन्दुओ स ऐसी-तैसी कराके पल्ला झाड चली आई अपनी पाक दामनी का दम भरने।" सकीना और आमिना अब कौन सा प्रमाण दें कि उनकी पाक दामनी की सच्चाई सिद्ध हो सके। बबरता के बीच भी सास्कृतिक प्रश्न व्यक्ति की विवशता नही देखते। वैसे तो विभाजन का आधार तो दो राष्ट्रो के सिद्धात की राजनीति थी किन्तु इस राजनीति के कारण हिन्दू और हिन्दू के बीच और मुसलमान मुसलमान के बीच सास्कृतिक सकट पैदा हो गया है। इसी सकट की अभिव्यक्ति देवेन्द्र इस्सर की 'मुक्त' श्रवण कुमार की 'मामूली लोग' मे भी हुई है।

ये कहानिया विभाजन की राजनैतिक त्रासदी और मानवीय सवेदनाओ का एक दस्तावेज हैं। य त्रासदी भारतीय समाज को अनेक वर्षों तक प्रभावित करती रही है, इसलिए नयी कहानी के रचनात्मक परिवेश मे इसकी अपनी विशिष्ट पहचान है। यह सौ फीसदी मान्य है कि विभाजन के प्रसग की कहानियो न अपने श्रेष्ठ सजन स भौगोलिकता को समेट कर रखा हुआ है, बिखरन नही दिया, फिर चाहे वह सगीत का क्षेत्र हो, शायरी का क्षेत्र हो, सुर और ताल की पहचान हो। इनमे सीमा या सरहद जैसी कोई बात नही दिखती।

समकालीन कहानी सबधी के दरकन की कहानी है। इन कहानियो मे सारे

सबधो से टूटता हुआ आदमी नित-ब दिन अकेला और अपरिचय का शिकार होता जा रहा है। विगत पीढी के प्रति नफरत, अविश्वास, सदेह, अपरिचय, अनिश्चय को ही अभिव्यक्ति प्रदान करती है। सारे पारिवारिक सबध टूटने लगते है। इस टूटन के क्षण बाप-बेटे, भाई-बहन सभी के जीवन मे उभरने लगते है। इसकी व्याप्तता सश्लिष्ट रूप मे दिखने लगती है। यही अजनबीपन और आत्मनिर्वासन है। इसके पूर्णत्व पर सारे सामाजिक और मानवीय सबध निरर्थक हो जाते हैं। आज के व्यक्ति का अकेलापन और अपरिचय ही उसकी सबसे बडी त्रासदी है। यह अकेलापन आन्तरिक अधिक है औद्योगिक कम।

गोविन्द रजनीश अकेलेपन से पीडित व्यक्तियो को दो रूपो मे विभक्त करते है: "पहले वे जिनको निर्भर सम्पृक्ति से पहचाना व टटोला जा सकता है। दूसरे वे जिनको मानवीय सम्पर्कों की असम्पृक्ति से जाना व पहचाना जा सकता है। समकालीन कहानी मे मूलत पीढियो के अलगाव से उत्पन्न थोपा हुआ अकेलापन और असम्पृक्ति का अकेलापन है। आज की कहानी ने इसका सजीवता से प्रयोग न करके केवल परिस्थितिगत विषमताओ को ही स्थान दिया है और जिजीविषा के लिए चल रहे सघर्ष के रूप म इसकी आवश्यकता को भी पुष्ट किया है।

समकालीन कहानी मे अजनबियत का प्रयोग 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' जैसे साहित्य मे बडी ही सजीवता से चित्रित हुआ है, जिसम 'वापसी' प्रमुख है। इसी प्रकार निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' का एक वाक्य—"पियानो का हर नोट चिरन्तन खामोशी की अधेरी खोह म निकलकर बाहर फली नीली धुध को काटता, तराशता हुआ एक भूला सा अर्थ खीच लाता है' और बाद की पक्ति— "क्या वे सब भी प्रतीक्षा कर रहे हैं—वह डाक्टर मुखर्जी, मिस्टर ह्यूबर्ट, लेकिन कहा के लिए? हम कहा जायेंगे? इस प्रश्न का उत्तर नही देकर सचमुच अजनबीपन की अनुभूति को गहराया गया है, मानव की अनिश्चित नियति का सकेत दिया गया है।' हम कहा जायेंगे का अजनबीपन एक व्यक्ति का अजनबीपन ही व्यक्त नही करता बल्कि आज के व्यक्ति का भी सामाजिक अजनबीपन व्यक्त करता है। निर्मल वर्मा की ही 'लवस' मे भी अजनबीयत का अर्थ है। 'पिछली गर्मियो मे' अजनबी व्यक्ति की ही कहानी है जो घर के बाहर रहता है। उसके चाहते भी तनाव खत्म नही होता, यह उसकी विडम्बना ही है— उसे अचानक लगा, "मानो वे दोनो जमीन के एक टुकडे के सामने खडे हैं जो बिलकुल अपरिचित और अजाना सा है। उनके बीच भाई बहन के बीच एक मूक समझौता है कि वे इस पर नही चलेंगे। वहा उनकी बढती हुई उम्र थी। उसे वैसा ही छोड देंगे जैसा वह है। वहा वे अकेले थे।" उषा प्रियवदा की कहानियो मे इस अजनबीपन को दो प्रकार से ग्रहण किया गया है—एक स्वच्छा से वरण करना और दूसरे वरण को विवश हो जाना। 'मोहबध' कहानी मे अचला को अकेलापन है जो अपनी इच्छा से वरण

किया हुआ। 'छुटटी के दिन' मे अकेलापन माया के जीवन मे है और 'वापसी' कहानी म इस अकेलेपन को झेलने के लिए गजाधर बाबू रिटायर होन क बाद विवश हैं।

यह अजनबीपन का अहसास नयी कहानी म गहराता गया है।

महानगरो के जीवन मे दो प्रकार का अलगाव, अपरिचय और परायापन देखा जा सकता है। पहले तो अपने परिवश स कट जाने पर और उस चिर परिचिति परिवश के जीवन मूल्य छूटन का दद है और महानगर की दौड धूप और एक दूसर क साथ तादात्म्य न होन का अलगाव और परायापन है। आधुनिक कहानी मे दोनो ही प्रकार की सवदना अभिव्यक्त हुई है। गाव कस्बे स महानगर म आकर सबधो मे एक खोखलापन पाना, औपचारिकता, मानवीय प्रेम की ऊष्मा का अभाव, महानगरीय जीवन म स्वाथ और दिखावे की जि दगी के बीच जिस अकेलेपन और अलगाव को व्यक्ति को भोगना पडता है, उसकी सशक्त अभिव्यक्ति नयी कहानी मे हुई है।

कमलेश्वर की कहानी 'खोयी हुई दिशायें' का नायक चदर जहा अपने परिवश और जीवन मूल्य छूटन के दद से पीडित है, वहा उसे महानगर म एक परायापन और अलगाव सालता है। अपन ही देश की भीड से भरी राजधानी दिल्ली चदर को कस्बे से आन पर अपरिचित और परायी लगन लगती है। इस भीड भरे शहर म उसका अपना कोई भी नही है। "तमाम सडक हैं, जिनपर वह जा सकता है, लकिन वे सडकें कही नही पहुचाती। उन सडका के किनारे पर बस्तिया हैं पर वह किसी घर म नही जा सकता। उन घरा के बाहर फाटक है, जिनपर कुत्तो स सावधान रहने की चेतावनी है, फूल तोडने की मनाही है और घटी बजा कर इतजार करने की मजबूरी है। होटल गलाड मे आय जोडे मे महिला का अपने साथी स अजीब प्रकार का व्यवहार है जिससे बगानापन झलकता है। गराज का मालिक सरदार अपन यहा पद्रह सोलह साल म काम करत हुए भी उस पर विश्वास नही करता, उसकी मामो स परिचित चदर की पूव प्रेमिका के घर जब वह चाय पर जाता है तो उसस यह पूछती है कि 'चाय म कितनी चीनी दू' तो मानो क्षण स उसका भ्रम टूट जाता है कि उसकी प्रेमिका तो उसे शायद अच्छी तरह पहचानती है, उसके लिए पूरी दिल्ली अपरिचय क सागर म डूब जाती है। उसकी पत्नी निमला भी शारीरिक भूख मिटाने पर अजनबी सी लगती है। इस प्रकार 'खोयी हुई दिशायें एक प्रकार म अपरिचय, अलगाव और बगानपन का व्यक्त करती है। एस म प्रतीक्षा भी समाप्त हो गई है। इस राजनीतिक भ्रष्टाचार और अव्यवस्था मे सबके सब तसल्लीदायक वाक्य झूठे और खोखले पडत हुए स्थित हैं। एस म अपरिचय, भीड शोर, तनाव क अतिरिक्त प्राप्त ही क्या किया जा सकता है। यह एक ऐसा बोझ है जिस ढोता हुआ आज का व्यक्ति चेन रहा है। फणीश्वर नाथ रेणु' की कहानी की फातिमा दी उसी शोर के खालीपन में दिन काट रही है। मोहन राकेश की कहानी

'नदी' का बूढा अपनी नियति और परिस्थिति को एक चाय के कप मे तलाश कर रहा है। देवेन गुप्त की 'अजनबी समय की गति' का रिटायड आदमी पुराने अतिपरिचित के अपरिचित हो जाने के कारण सन्त्रस्त है। राजेन्द्र यादव की कहानी 'टूटना' में किशोर एक तकनीकी सभ्यता के बीच पदा हुए मूल्यो म अपने अस्तित्व को झेल रहा है। रघुवीर सहाय की कहानी 'प्रेमिका' म प्रेमी क्लर्क अतिपरिचय के बीच पैदा हुए अपरिचय को झेल रहा है। सबधो की जमीन पर वह शून्य और भी अधिक भयावह और ठोस रूप मे उभरा है। उषा प्रियवन्दा के 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' म सारी ऊष्मता, लगाव और प्रेमजनित उत्साह के बावजूद एक महाशून्य व्याप्त है, जिसमे प्रेमिका-अध्यापिका के लिए जैसे सब कुछ निरथ है—इतना अधिक कि वह ठोस निवेदन का भी साथक नही मानती। इन सब कहानियो मे मानवीय सकट, घर करता अपरिचय, जो किसी भी प्रकार के रुकने की अनुपस्थिति म अनुभूति के धरातल पर होने की नियति, एक शून्य है। यह खालीपन नकारने का नही अपन को इन परिस्थितियो म दफन का है। इस खालीपन को कहानीकार ने वास्तविक रूप मे सशक्तता के साथ रेखाकित किया है। इसी प्रकार मोहन राकेश की कहानी 'पाचवे माले का फ्लैट' मे भी महानगरीय जीवन का यह अलगाव और अपरिचय स्पष्ट रेखाकित हुआ है। बडे नगरो म किसी को किसी का नाम या व्यक्ति को जानने की आवश्यकता महसूस नही होती है। वहा रहने वालो का परिचय पर्दे के पीछे ही छिपा रहता है। "जो भी जानता है घिस पिटे दफतरी नाम से ही जानता है। ए० कपूर के ए० को कोई गिनती म नही लाता। ए० का मतलब अविनाश है या अशोक, यह जानने की जरूरत किसी को नही है।" महीप सिंह की 'सन्नाटा' म मा बेटी के बीच जो बिखराव और परायापन है, वह भी महानगर की व्यस्तता और भागमभाग की देन है। इस कहानी मे भी कोई उसे उसके नाम से जानता ही नही। बल्कि सब लोग मिसेज वर्मा के नाम से जानते है। शायद ही कभी कोई व्यक्ति दिवा के नाम की पहचान कर सबधो की निकटता जताता है। घर मे आया मेहमान जब पूछता है कि उसने अपनी बेटी के साथ कौन सी फिल्म दखी ता लगता है कोई व्यथ सी बात पूछ ली गई है क्योकि व शायद ही कभी य जान पाती हागी कि वे एक दूसर के परिवार का हिस्सा है। "कैसी अजीब बात ह कि हमारे बीच जब तक कोई तीसरा व्यक्ति न आय हमे यह अहसास नही होता कि हम मा-बटी है। हम आपस मे कोई बात किए हफ्तो गुजर जात है। फ्लैट म एक दूसरे की छाया देख कर ही हमे बस एक दूसरे के होने का अहसास होता है। अलग अलग कमरे, अलग-अलग बाथरूम, यहा तक कि टूथपेस्ट भी अलग अलग।" दोना के जीवन का बधा नियम नौ बजत ही अपनी अपनी चाबिया क गुच्छे सभालती, साडियो की चुन्नट पर हाथ फेरती, लिपिस्टिक लग होठो को शीशे म देखती बबई की भीड भरी सडको पर निकलने की नियति उसके स नाट को

और अधिक बढा देती है । इस प्रकार इस फ्लैट म छाया स नाटा महानगरीय अलगाव और परायेपन को सशक्त ढग स उभारता है । महीप सिंह की ही कहानी 'ठडक' अलग ढग से महानगरीय जीवन म अलगाव और बेगानेपन को अभिव्यक्त करती है । पति जो कि काफी समय से महानगर बवई मे रहन का आदी हो चुका है, गाव कस्बे के जीवन की अभ्यस्त पत्नी को जब शहर म लाता है तो पत्नी को महानगरीय बोध होता है । परन्तु इस बोध के रहते भी वह सवेदना को नही खोती और 'एयरकडीशड' पिक्चर हाल मे फिल्म देखते हुए भी पडोसन के खोय हुए लडके के विषय मे सोचती है । इस प्रकार के सवेदना सागर मे डूबी वह फिल्म का भी आन द नही उठा पाती । उसके मुख पर वह 'ठडक' तभी आती है जब पडोसन आकर ध यवाद दती है कि उसकी ही कृपा से बेटा मिल पाया । लेकिन पति जो कि महानगरीय जीवन म घुल गया है पत्नी सत्या की इस मनोदशा को नही समझ पाता ।

समकाल न कहानी म इस ऊब, परायापन, अलगाव सत्रास को लेकर काफी कहानिया लिखी गयी हैं । नयी कहानी के लेखक न कहानिया को अनुभूति के आधार पर ही नही, एक आवश्यकता के लिए भी लिखा है । वे कहानिया जिनम य सोच सहज रूप से उभरी है अत्यत सफल और सशक्त साबित हुई है । निमल वर्मा से लेकर मार्कण्डेय तक इन कहानिया का फैलाव अलग अलग स्तर और परिस्थितियो के आधार पर हुआ है ।

नयी कहानी की कथावस्तु इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आज का साहित्यकार जीवन की सच्चाइयो को बहुत ही पास जाकर देख आया है । उसे य पता चल चुका है कि सबधो म टूटन बिखरन और एकाकीपन बहुत दूर तक जा पहुचा है । वह इन सबधो को भी अपनी कहानी म उदघाटित कर रहा है और वह भी बडी सशक्तता से । मानवीय सबधा म स दाम्पत्य प्रेम सबसे अधिक महत्त्वपूण है । इसीलिए नयी कहानी ऊब और तनाव स घिर दाम्पत्य सबधा की भी कहानी है । इस दरार को उसन अच्छी तरह स पहचाना है ।

आज के युग म नारी का या कहना चाहिय कि पत्नी का आर्थिक रूप स स्वतत्र हो जाना इस टूटन का पहला कदम है क्याकि पहल की नारी आर्थिक रूप स स्वतत्र न होन के कारण पति के अत्याचारों और दबाव को सहन करने को विवश थी । लेकिन कथित स्वतत्रता पा लने के बाद कोई भी पति ऐसा करने की भूल नही कर सकता । भीमसन त्यागी की कहानी 'दीवारें ही दीवारें' मे इस पक्ष का उजागर किया गया है । पति जब य बताता है कि उसकी नौकरी छूट गयी है तो नौकरी करने ।। पत्नी का जरा भी दु ख या अफसोस नही होता—'अच्छा ही तो हुआ, पत्नी के

चेहरे पर विजय की रेखायें उभरी, इसमे चिता की क्या बात है ? नौकरी के भाग जाने पर जब एक दिन पति चाय बनाकर लाता है तो पत्नी पहले तो कहती है—'नही, यह काम तुम नही करोगे ।' लेकिन जब अगले दिन भी पति चाय बना कर लाता है तो उसे कोई ऐतराज नही होता । इसमे पत्नी की जगह पति की दास के रूप मे परिणति हो गयी जो इस स्थिति के रहते अस्वाभाविक नही लगती ।

पति पत्नी का एक ही ढर्रे पर जीवन जिये जाना भी एक प्रकार के तनाव को जन्म देता है जिसमे एक नयेपन की माग छिपी हुई है । जहा यह नयापन नही मिल पाता वहा तनाव जीवन मे जहर घोल देता है । सान्त्वना निगम की 'अधे दायरे' की 'मैं' अपने अपने दाम्पत्य जीवन की बोरियत और एक ढर्रे पर चल जाने के कारण इतनी तग आ जाती है कि फूट-फूट कर रोने लगती है । उसके लिए पति एक पुरानी किताब सा है । वह अपने पन्द्रह वर्ष के दाम्पत्य जीवन का विश्लेषण करते हुए कहती है—"बहुत साल पहले इस घर मे दो प्रेमी रहते थे । एक साल बाद वे मर गये । फिर उनकी जगह एक पति पत्नी ने ले ली । दो साल बाद वे भी मर गये और उसके बाद से यहा सिर्फ दो पेरेन्टस रहते है ।" यह पेरेटस बन कर रह जाने की विवशता तनाव और टूटन को जन्म देती है । 'आखिरी रात' (काशीनाथ सिंह) मे पति पत्नी के साथ पूरी रात बिताने के बाद यह सोचने को विवश है—"हमारी रात का अन्त चाहे जब हुआ होता जैसे होता—वह कुछ इसी प्रकार का रहा होता, बल्कि इस से बेहतर तो शायद न ही होता ।"

दाम्पत्य सबधो मे टूटन का कारण पर-पुरुष और पर स्त्री के साथ सबध होने का भी है । आज के युग मे सतीत्व, एक पत्नी व्रत जैसे शब्द अपना अर्थ खो चुके है । इन अवैध सबधो मे न तो अपराध बोध झलकता है न पाप बोध । उल्टे इस अनैतिकता का कारण ढूढने पर जोर दिया जाता है । शैलेश मटियानी की 'प्रवृत्ति' कहानी की विवाहिता दीपा अपने विवाहित प्रेमी को बडे ही खुले ढग से समझाती हुई कहती है कि प्रेम पति नाम के सज्जन से किया ही नही जा सकता । वह कहती है—"शादी के बाद प्रेम की भावना ज्यादा गहराई से और साफ साफ पहचानी जा सकती है । शादी से पहले तो यह बात स्पष्ट होती ही नही कि लोग वास्तव मे प्रेम कर रहे हैं ।" दीपा जिस प्रेम की बात इस कहानी मे करती है वह प्रेम अशरीरी नही है । आज के युग मे तो प्रेम का सीधा सबध शारिरिक सबधो मे ही सिमट कर रह गया है ।

दूधनाथ सिंह की 'शिनाख्त' के 'मैं' और 'वह' का सबध प्लेटोनिक न होकर देह के स्तर पर कायम है । पत्नी खूटी पर टगे अपने स्लीपिंग गाउन पर पति के उल्टे टगे बुशर्ट को देखकर अपने प्रेमी से कहती है—"यह सच है । हमारे कपडे ही अब

एक दूसर का आलिगन करत हैं।" इससे ज्ञात होता है कि पति पत्नी के सबधा मे दूरी किस सीमा को पार कर चुकी है।

पति पानी के बीच अभिरूचियो और आदतो का अलगाव भी अलगाव को विवश कर देता है। उस पर तो और भी जब दोना ही अलग-अलग वर्गों स आय है। निमला ठाकुर की कहानी 'अकुर' की सुमिता की घुटन और तनाव इसलिए है क्योकि वह प्रशात की नजरो से उन लोगो मे से है, जिनका मानसिक स्तर अभिजात वग के मानसिक स्तर से नीचे है, जिनका कोई टेस्ट नही है। पति समझता है कि उसके टेस्ट को घर मे सब से अधिक घर का नौकर किसन जान सकता है। लेकिन सुमिता जो कि मध्यमवर्गीय श्रेणी स आयी है उसके स्तर तक नही पहुच सकती। इस स्थिति के फलस्वरूप पति पत्नी म प्रेम होने के बाद भी एक दूसरे स कटे रहत हैं और सुमिता उस परिस्थिति मे खुद को अजनबी समझने लगती है। उसे "महसूस होता है कि वह इस घर मे मेहमान की हैसियत से रह रही है। मेहमान की हैसियत से भी नही उसे यहा कोई जबरदस्ती छोड गया है, इसलिए ।"

पति पत्नी के बीच दूरिया, अधूरापन, अकेलापन दाम्पत्य सबधा को खोखला बना रहा है। जीने को विवश दपती चुपचाप इस अकेलेपन को ढो रहे हैं, चाहे जहर समझ कर ही। यह जहर दीप्ति खडेलवाल की कहानियो म स्पष्ट रूप से पता चलता है। इस कथावस्तु को विभिन्न स्तरो पर उठाया गया है। इनका कथ्य एक होते हुए भी अलग-अलग प्रकार स चित्रित किया गया है। इन कहानियो मे 'कडवे सच' और 'धूप के अहसास' जस कहानी सग्रह तथा 'क्षितिज', 'शेप अशेप', 'एक पारा पुरवैया' 'धोखा', 'देह की सीता', 'म भी कोई गीत है', 'वह' जैसी कहानिया हैं जो एसी नारिया की जीवन गाथा बखान करती हैं जिसमे वह दाम्पत्य जीवन को स्थापित करने क लिए सघप कर रही है—"बार बार हाता है ऐसा अनावृत्त शरीर निकट आत हैं, मन आवरणों मे जा छिपता है गम आलिगनो म एक ठडी ऊब का अहसास है। पाश्व म सिमटता अस्तित्व बियाबानो मे भटकन लगता है। निकटता म दमघाटू दूरी का अहसास होता है—किसी के मुस्कराते रहते होंठ दद करने लगते हैं। और किसी तृप्ति के लिए नारी चेतना होश और मूर्च्छा के बीच छटपटाती रही।' पति पत्नी क इन सामीप्य क्षणा म भी जो तनाव है वह असहनीय है। इसकी अभिव्यक्ति लेखिका न बडे ही सशक्त ढग से की है।

जब दोना म स एक खुद को दूसरे पर थोपने की कोशिश करता है तो स्थिति अलगाव की ओर बरबस ही ले जाती है। लेकिन यह अलगाव भी पूरी तरह स पूणत समस्या का समाधान नही है। यह अलगाव पलायन को जन्म देता है। गगा प्रसाद

विमल की 'सिद्धाथ का लौटना', म कहानीकार एक दब्बू आदमी है और वो सिद्धार्थ के पलायन को एक अलग व्याख्या देत हुए लिखता है—"अभी न जाने कितने ऐसे लाग होंगे जो अपनी बीवियो के व्यवहार से तग आकर भागने की सोचत होंगे। हमे लोगा के दोस्तो म चार पाच ऐसे लोग जरूर हैं, जिह घर से भाग जाना चाहिए था।" कुछ कहानिया ऐसी है, जिनमे सामाय स कुछ भी अधिक नजर नही आता, लेकिन उनम छिपी हुई तीव्रता, कडुवाहट, असहनीयता, क्रूरता, विवशता उह विशिष्ट बना देती है। ममता अग्रवाल की 'स्वामिनी' मे सुप्रिया की पीडा का कारण कोई घटना, वस्तु या व्यक्ति न होकर एक अजीब सा अहसास है। उस अक्सर लगता है कि आनन्द की पहली पत्नी मर कर भी जिदा है। घर पर एकछत्र राज्य कर रही है वह और द्वितीय स्वामिनी की भूमिका निभा रही है। पति पत्नी के बीच हमेशा कोई दूसरा उपस्थित रहता है और वे अपनी सहजता खोकर एक विशेष साचे म ढली जिन्दगी जीते रहत हैं। सुरेश सिन्हा की कहानी 'तट से छूटे हुए' के परमात्मा बाबू और भगवती का दद अलग तरह का है। जीवन के आखिरी पडाव पर पहुचे वृद्ध दम्पती को पुत्र की उपेक्षा ने अन्दर ही अन्दर खोखला बना दिया है। पुत्र स निराश परमात्मा बाबू अपनी पत्नी के बत्तीस वर्षों के रिश्ते के प्रति भी सन्देह करने लगते है। एक ही घर मे रहते हुए भी पति पत्नी एक अजनबी की तरह सराय म टिके हुए हैं। 'अनावत्त कौन' मे पति पत्नी के बीच असताप को अभिव्यक्ति मिली है, जिसमे सबधों के चुक जाने की पीडा को उकेरा गया है। दाम्पत्य सबधों के विषय मे जो कहानिया लिखी गई हैं उनम सबधा की कडुवाहट, अलगाव, असतोष, आर्थिक विवशता, रुचियो की भिन्नता, अनैतिक सबधा जैसे पक्षो का चित्रण अलग अलग तरीके स हुआ है। आज के साहित्यकार को उनके बीच की दरकन का पूरी तरह से अहसास है। इन सब स्थितियो को वह बेहद ईमानदारी से उतार रहा है अपनी कहानियो म।

आधुनिकता के बहाव मे बहते-बहते जीवन म किसी बदलाव के आते मूल्य परिवतन बडी तेजी से घटा है। तकनीकी और मशीनी युग के कारण मूल्य परिवर्तन घटने के कारण पिछली पीढी का व्यक्ति, जो परम्परा से जुडा हुआ था, भीतर से टूट गया है। यहा तक कि आज का व्यक्ति भी इस परिवतन को स्वीकार नही कर पाया। यह मूल्य टूटने का दद बडे ही व्यापक रूप से व्याप्त है।

सामाजिक वग मे प्रेम विवाह, काम सबध, यौन नतिकता के स्तर पर भी यह परिवतन देखा जा सकता है, जिसे आज के कहानीकार ने अभिव्यक्ति प्रदान की है। मन्नू भडारी की कहानी 'त्रिशकु' स्पष्ट करती है कि हम परपराओ को झुठला कर भी नयी मूल्य दृष्टि को विकसित नही कर पाये हैं। इन परिवर्तित मूल्यो के बावजूद

भी हम त्रिशकु की स्थिति मे फस है। क्योंकि हम आज भी नियतिवादी हैं और परपराओ का पालन करने वाले हैं। नयी-नयी मान्यतायें और तेजी से बदलती जा रही परपरायें हम सभी को घोर वितृष्णा देती है। 'पग-डडिया', मे (गिरिराज-किशोर) 'डिनर' पर जाते हुए पुत्र को देखकर पिता कहता है, "लुकिंग स्मार्ट', तो बेटा राजीव थोडे बचपने के साथ हस कर तुरन्त उत्तर देता है—"थैंक यू मोर दैन यू।" भारतीय परपराओ मे रगे समाज के लिए य पाश्चात्य सस्कृति से आयी स्थिति असह्य है। ये स्थिति कहीं हास्यास्पद हो जाती है तो कहीं खडित।

पुराने मूल्यो के खडन को देखत हुए आज महसूस करना है कि उसकी हसी उडायी जा रही है। इसका सबसे बडा कारण पाश्चात्य सस्कृति का प्रभाव है तो उसकी दूसरी ओर नास्तिकता। ज्ञान रजन की कहानी 'सबध' मे नायक कहता है—"कई बार मुझे ईश्वर को भद्दी गालिया देने का ताव भी आया, लेकिन यह सोच कर रह गया कि ससार के अधिकाश लोगो का अब ईश्वर से कोई प्रयोजन नही है।' ये विचार आज की पीढी के हैं। लेकिन पुरानी पीढी आज भी आस्तिक है। आज की कहानी म नयी और पुरानी पीढी के बीच आय गैप को नयी कहानी ने बडी खूबी स रखाकित किया है। गोविन्द मिश्र की कहानी 'उखडता हुआ बरगद' प्रभु जोशी की कहानी के बूढे ज्योतिषी अपने पुत्रो के पास पहुच कर नयी पीढी की जीवन पद्धति स बुरी तरह खीझे हुए है और कदम कदम पर उनकी निरर्थकता महसूस करत है।

मृदुला गर्ग की कहानी 'अलग अलग कमरे' का नयी पीढी का डाक्टर सुरेन्द्र अपन किसी भी निकट व्यक्ति के लिए भी बिना फीस इलाज करने को तैयार नही है, जबकि फालिज स पीडित होन पर अपने मित्र को बिना फीस देखने जाता है, क्योंकि वह भी एक डाक्टर है। वह अपने बेटे की तरह परपराओ और सवेदनाओ की हत्या नहीं करता, बल्कि उनको निभाता है, उन पुरातन मूल्यो का सम्मान करता है।

आज समकालीन कहानी ने खडित मूल्य वाल समाज को दखकर दुख का अनुभव किया है। कभी कभी यह दुख आक्रोश के रूप म प्रकट हुआ है। सत्य और ईमानदारी जस शब्द खोखले साबित हो चुके हैं। सुधा अरोरा की 'दमन चक्र' म दामू अपने पिता के आदर्शों और ईमानदारी का मजाक उडाता हुआ कहता है—"बाबा, आपका जमाना गया। लात खा लो, चुप रहो। आपन बहुत ईमानदारी स काम किया न, क्या किया हम? और आपके साथ के लोग, जिन्होंने बेईमानी की, आज बालीगज, टालीगज म दो मजिला मकान बनवा कर ठाट से रह रहे हैं, और उनके लडके-लडकियां जाने किस किस की सिफारिश पर एसी-ऐसी नौकरियों पर लग हैं, जिनके काबिल उनके पास डिग्री भी नही है।' आज ईमानदार आदमी भाड झोंक रहा है, और दर-दर की ठोकरें खा रहा है, इसलिए इन आदर्शों की खिल्ली युवा वर्ग द्वारा उडाई जाती है।

दाम्पत्य सबधो मे आयी कडवाहट, अलगाव और खालीपन की समाप्ति सबधो के खत्म हो जान मे होती है। कभी कभी पत्नी और पति के बीच का यह सबध कानूनी रूप ले लता है तो कभी आपसी समझौत के आधार पर अलगाव पैदा करता है। नयी कहानी न इन दानो ही पक्षो को उजागर किया है। इन सबधा के अलगाव के बाद एक पक्ष आता है मन स्थिति और आत्मसघप का। पुरुष तो फिर भी अपनी पूव पत्नी क सबध को एक बार म ग घो कर भुला दे लेकिन नारी कोमल हृदया और सवदनशील होने के कारण ऐसा नही कर पाती। वह न तो पूरी तरह से अपने अतीत को भूल पाती है न सभाल पाती है और एक ऊहापोह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। 'पारू ने कहा था' (मणिका मोहिनी) की कहानी इस पक्ष को अलग ढग से रखाकित करती है जिसमे पति की इच्छा होती है कि सबधा मे दरार आने के बाद, भी गहस्थी की गाडी किसी तरह चलती रहे, लेकिन नारी इस दोहरी स्थिति की सलीब को ढोने मे असमथता अनुभव करती है और इसे ढोने की अपेक्षा एक ही बार खत्म करन की कामना करती है।

दोना के बीच जब कोई भावनात्मक और रागात्मक लगाव ही नही रह जाता तो उसे ढोने से क्या लाभ? इसलिए इस किस्से को वही तमाम करना ही बेहतर है। इस कहानी मे दूसरा पक्ष यह है कि पत्नी पूव पति से अलग होकर भी उससे पूण रूपेण नफरत नहीं कर पाती है। अपने वतमान प्रेमी मनीष की बाहो मे घिर कर भी अपने पूव पति का स्मरण करती हुई कहती है—"मुक्त होकर भी हम चाहे तो किसी को बहुत बहुत प्यार करते रह सकते हैं।" इसी मन स्थिति पर आधारित निमल वर्मा की 'वीक एण्ड' है जो नारी मन को सूक्ष्मता से अकित करती है और पयाप्त प्रभाव छोडने मे सफल हो जाती है।

सूयवाला की 'गुमनाम दायरे' भी इसी मन स्थिति को उभारती एक कडी है। पुरुष का अह और नारी का दप वैवाहिक सबधा की नीव को हिला देता है। दोनो एक दूसरे से अलग होते हुए अपने अपने अह और दप मे खो जाते हैं। उनकी बेटी निधि वह सेतु है जो दोना अधेरो म प्रकाश का काम करती है। लेकिन वही अब उन लोगो स दूर होस्टल मे रह रही है। उसकी सहेली उसके घर माता पिता मे सुखी ससार की छाया दिखाने जा रही है, यह विडम्बना ही तो है जिसके पिता मा से अलग हैं, किंतु यहा भी मा शेष रह जाती है। पिता बेटी के लिए, उसके छुट्टी आने तक के लिए, दो हफ्ते के लिए भी अपना नया विवाहित जीवन जीना शुरू करने से नहीं रुकना चाहते। लेकिन मा बिना पिता के ही अपनी बेटी को सब खुशिया और आनन्द देने के सपने देखती रह जाती है। यह कहानी पिता और मा के प्यार और ममता का अकन बडी गहराई से करती है

विजय चौहान की 'तलाक' मे नारी मन की एक अजीब सी मन —स्थिति देखने को मिलती है। कहानी मे पत्नी ने पति से स्वय ही तलाक लिया है किंतु जब वह यह जानती है कि उसका पूव पति विदेश म दूसरा विवाह कर रहा है तो अपने वकील से कहती है उसे विवाह से रोके, विवाह न करने दे। वकील दलील देता है कि तुमने तो तलाक ले लिया है ता उस विवाह का अधिकार है। वह इस एतराज के उत्तर मे अगले महीने पासपोट बनवा कर उसके पास जा कर विवाह करने से रोकेगी। वकील कहता है कि इस सबध म वह स्वय ही पति को लिखे तो वह फिर अजीब सा प्रश्न करती है कि वह कैसे लिख सकती है, उसने तलाक जो ले लिया है। वकील औरत की इस दलील पर और मिजाज पर आश्चय व्यक्त करता है। यही वह स्थिति है जहा नारी की भारतीयता/सबधो के मोह के आडे आती है। केवल पत्नी ही नही, पति भी इन पूव सबधो से छूट नही पाता है। इस स्थिति का रेखाकन दूधनाथ सिह की कहानी 'बिस्तर' म मिलता है। कुमार के बिस्तर का उपयोग करने उसका मित्र अपनी प्रेमिका को लाता है जो दो बच्चा की मा है। इसी क्रम मे कुमार को अपनी पत्नी की याद आ जाती है, जो उसे छोड कर उसके मित्र राकेश से विवाह कर लेती है। कुमार सारी औरत जात को दाप दता हुआ बुरी तरह अपनी बीवी बच्चो की याद से आक्रात है। तलाक के बाद पुरुष का जो घर अव्यवस्थित होता है उसके घर की जो दुगति है, छोटे से लेकर बडे काम तक, जिनमे बच्चो के काम भी शामिल हैं करने की पीडा जो झेलनी पडती है उसको उभारती है। माहेश्वर की 'किसी फूल का नाम लो' पत्नी को अलग करके सकट के बाद सकट आना, पति की नौकरी छूट जाना, आर्थिक अभाव, महगे मकान स सस्ते मकान मे, अच्छे जीवन स्तर स निचले स्तर पर आने की पीडा, 12 वर्षीया बच्ची का घर सभालना, परिस्थितियो द्वारा उसको एक दिन मे ही मानो बुजुग बना देना, आर्थिक और सामाजिक तनाव उस बुरी तरह स झकझोर कर रख देते हैं। यह कहानी अपने स्तर पर सशक्त और विचार अनुभूति मे अद्वितीय है। भूख मानव की मूलभूत कमजोरी है। इसी भूख के कारण आज वह जीवित है। लकिन भूख भी दो प्रकार की है—उदर तथा लैंगिक। इसम पेट की भूख आदमी को अस्तित्व प्रदान करती है तो लैंगिक भूख उसका सजन करती है। जहा तक पेट की भूख का सवाल उठता है वह एक पक्षीय है, व्यक्तिगत है, वही लगिक भूख बहुपक्षीय हो जाती है। व्यक्ति के जीवन के आचरण के साथ इसका सबध घनिष्ट है। इस भूख के साथ 2 सजन का दायित्व और परिवार की जिम्मेदारी भी है। स्त्री पुरुष अपने आप को दोबारा लाने के लिए समाज के प्रति उत्तरदायी हैं। च कि मानव एक भावुक प्राणी है इस लिए वह उदर की भूख के साथ 2 लैंगिक भूख से भी अलग नही हो पाता, जो प्रकृति प्रदत्त है। यदि इस भूख का वह शमन करता है तो वह अ य प्रकार की यौन विकृतियों के रूप मे सामने आती हैं। इस भूख के कारण व्यक्ति रूढियो से टकराने लगा और परम्परा की नीव को हिला

र रख दिया। उपभोग संस्कृति के विकास के साथ साथ आर्थिक दबाव जिस कुत्सित रूप से सामा- जिक जीवन पर पड़ा, उसने भी यौन संबंधों को किसी न किसी रूप प्रभावित अवश्य किया।

समस्त कलाएं मनुष्य की इस लैंगिक भूख से प्रभावित हैं। प्राचीन संस्कृत काव्य में तो यह सौंदर्य और आनन्द की मूर्ति बनकर सामने आई है तो कभी विलासिता के रूप में। आज के साहित्य में यह भूख अब वितृष्णा और घृणा बनकर आयी है। आज की कहानी ने इस भूख को खुले तौर पर प्रयोग किया है, जिसमें आसक्ति की कमी और विरक्ति का बाहुल्य अधिक है फिर भी इस भूख का शमन न तो उन्मुक्त यौनाचार की छूट देने वाले समाज में हुआ है न नैतिकता की दमन कारी व्यवस्था में। समकालीन कहानी में इस लैंगिक भूख को कई प्रकार से उकेरा है।

आज के युग में जहां यौन वर्जनाओं पर पाबंदी लगी है और दूसरी ओर जीवन को पूरी ईमानदारी से जीने की सहज दृष्टि का विकास हुआ है। इस यौन धर्म की स्वीकृति यदि पुरुष कथाकारों ने व्यंग्य और मजाक उड़ाने के लहजे से लिया है तो महिला कथाकारों ने इसके मर्म को पहचान कर बड़े ही दर्द से अपनी कहानियों के माध्यम से जिया है। स्त्री पुरुष की काम विषयक भावना को एक मजाक के तौर पर नारी की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया गया है। लेकिन महिला कथाकारों ने अपने मन की कोमल भावनाओं और अनुभूतियों को बड़े ही सशक्त ढंग से अभिव्यक्ति दी है। इन कथानकों में अधिकतर ऐसे पक्ष हैं, जिन पर अभी ध्यान नहीं गया है या अपनी परम्पराओं में बंधे रहने के कारण उन पर ध्यान देने का साहस नहीं कर पायी। आदिकाल की नारी रूढ़ियों के बीच फंसी हुई अपनी भावनाओं को दबाती हुई सहजता में अलग होती है, इस स्थिति को नयी कहानी में रेखांकित किया गया है।

यौन धर्म की प्राकृतिक लालसा कहानी में दो प्रकार से आती है। पहली तो सामाजिक मुहर के अंतर्गत यानि विवाह के माध्यम से और द्वितीय इन बंधनों से बाहर उन्मुक्त रूप से काम वासनाओं की तृप्ति। लेकिन एक नारी इन दाम्पत्य संबंधों में भी इस लालसा को पूरा नहीं कर पाती, क्योंकि उसने एक अनाम भय और लज्जा के कारण भारतीयत्व और गृहणी का आवरण अपना रखा है, चाहे अनिच्छा से ही। नयी कहानी की महिला कथाकारों ने इसे बड़ी खूबी से चित्रित किया है।

उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि नयी कहानीकारों ने इस पक्ष को बड़ी साफगोई से स्वीकारा है। इन महिला कथाकारों ने नारी के अन्तर्मन की संवेद-

नाओं का उदघाटन किया है और वह भी अनुभूति के साथ। पुरुष कथाकार तो इस स्थिति को केवल घटना या कल्पना के आधार पर ही लिख सका था, जो काम नारी ने अनुभूति के स्तर पर किया है वह कल्पना के तौर पर ईमानदारी से सामने पूर्ण रूप से आ भी नही सकता था। नारी कथाकारो ने इसे बडी हिम्मत से उकेरा है। इस पक्ति म शामिल सुधा अरोरा, कृष्णा सोवती, मन्नू भडारी, कृष्णा अग्निहोत्री, शशि प्रभा शास्त्री, मदुला गग, निरूपमा सेवती, सिम्मी हर्षिता, मणिका मोहिनी आदि कहानीकारो ने विशेष रूप से अपना स्थान बनाया है। इन्होन दो ही स्तरो पर नारी की काम विषयक भावनाओ को उभारा है। पुरुष कथाकारो ने भी इस विषय पर कहानिया लिखी हैं, लकिन वे बहुत कम हैं, जिनमे कमलेश्वर, कृष्ण बलदेव वैद, जगदीश चतुर्वेदी, महीप सिंह, माहेश्वर, अशोक अग्रवाल प्रमुख है।

जगदीश चतुर्वेदी की कहानी म उत्तेजना का ज्वार उतरते ही अपनी सहयोगी मिसेज लाल के गर्भवती होने के अहसास म ऊबता, भ्रूण हत्या का तर्क से उचित करार देता, जीव हत्या के बोध से पीडित होता हुआ अपने ही सच के अर्तविरोधा से आक्रान्त व्यक्ति देखा जा सकता है। मन्नू भडारी की कहानी 'तीन निगाहो की एक तस्वीर' म नारी दर्शना अपने पति से पूर्ण यौन-सुख नही पा पाती। उसकी अतृप्त यौन दशा का चित्रण स्वप्न प्रतीक के द्वारा किया है, जिसमे दर्शना को बडे अजीब से स्वप्न आते हैं जसे "देखा, म छोटी छोटी पहाडियो की चोटिया से जल के झरने झर रहे हैं, पर फिर भी कही आसपास हरियाली नही, रेगिस्तान ही रगिस्तान है। कोई उस जल को पीने वाला नही है, कोई फूल फल उस जल मे मिलने वाला नही है। विचित्र सयोग था, जल के किनारे निर्जन रेगिस्तान। जल की इससे बढकर और क्या निरर्थकता हो सकती है।' इस कहानी म स्त्री पुरुष के बीच शारीरिक सबधो को स्वीकार्य मिला है। जगदीश चतुर्वेदी की कहानी 'मुर्दा औरतों की झील' मे सहज ही प्राप्त किय यौन सुख से उकता कर नींद की गोलिया खाकर सोता है। महीपसिंह की कहानी 'गध' मे लगिक भूख एक विशेष प्रक्रिया के रूप मे देखी जा सकती है।

मन्नू भडारी की 'बाहो का घेरा' म अतृप्त यौन भावना को चित्रित किया गया है। इसम नारी का कहना कि "ये अनभिव्यक्त इच्छायें अब दिन रात उसे मथा करती हैं। किसी को बाहों मे भर कर अपने को उसमे लय कर देने की और उसका सम्पूर्ण पा लने की दुर्दमनीय चाह एक अभिशाप की तरह उसके मन पर छायी रहती है।" पर अपनी इस भावना को तृप्त करने के लिए वह किसी भी पुरुष को चाहती है। उसमे एक ही इच्छा शेष रह जाती है।—दुर्दमनीय चाह, एक ललक कि कोई हो, कोई भी-जो उसे कस कर अपने मे समेट ले, जिसकी आखों में प्यार हो, अपूर्णता हा। कम्मो

को पाने की पिपासा हो, और अपने को पूण बनाने के लिए वह कम्मो को इतना भीचे कि इतना भीचे कि उसकी हड्डिया तक चरमरा जाए, उसका दम ही घुट जाय। मन्नू भडारी की ही 'ऊचाई' मे इस तृप्ति के अभाव मे अपने पूव प्रेमी के समक्ष समपण कर देती है, इसम वह काई बुराई नही देखती न ही अपन सतीत्व मे कोई दोष देखती है। वह इसे पूरी सच्चाई से एक सही कदम मानती है।

दीप्ति खडेलवाल की कहानी 'क्षितिज' म इस काम भावना को स्त्री पुरुष के लिए आवश्यकता माना है। लेकिन स्त्री ने इसम भावना अनुराग भी मिला दिया है, लेकिन पुरुष का विचार है—"लुक हियर बवी", अगर तुम रवि को पसद करती हो, जरूर उससे शादी कर लो। शादी एक बायलाजिकल नसेसिटी है, बाकी सब प्रेम व्रेम बकवास है।" नायिका का प्रेमी पति भी व्यवहार स इसी नैससिटी का पूरा करता है। वह बेबाक कहता है—"बहुत टेन्शन है हनी। क्या ओब्लाइज करोगी ?" इसके बाद पति तो सो जाता है लेकिन पत्नी अपने पति के सबधो के अथ का खोजती रह जाती है। उसम अपन पति के प्रति एक नफरत या वितष्णा, ऊब सी उत्पन्न हो जाती है। नारी की बदलती हुई विचारधारा भी पुरुष के साथ 2 बदली है। "अच्छा होगा मैं रवि से तलाक ले लू, ऐसे ठडे सबध को कैसे निभाया जा सकेगा जो विष बुझी सुइयो सा चुभना रहता है, चुभता रहता है जो स्लो पॉयजन सा धीरे-2 मेरी रग रेशो मे उतरता जा रहा है, जो एक बारगी ही समाप्त नही कर देता वरन मेरी चेतना को अचेत किए दता है।" इससे स्पष्ट होता है नारी भी अपनी एक अलग पहचान, अपना एक ठास अस्तित्व के होने का परिचय द देना चाहती है कि वह भी एक जीवित व्यक्ति है, कोई वस्तु नही।

शशिप्रभा शास्त्री की 'गध' में वह अपना शरीर नकुल को समर्पित करती है क्योकि उसे अपने पति से पूण सतोष नही मिल पाया है। वह कहती है—"वह यह सब कहा चाहती थी, पर जब घर का कुआ बिल्कुल ही सूख जाए तो आदमी एकदम प्यासा तो मरने से रहा। कितनी बार सोच चुकी है स्त्रियो के लिए चक्ले या पुरुष वेश्यालय क्या नही हुए, जहा वे भी स्वतत्रता से जा सकती ? पुरुष और स्त्री की नैतिकता के मानदण्डा मे अन्तर क्यो ? क्या स्त्री के मन नही है ? उसका अस्य नही है ?" शशिप्रभा की यह कहानी नारी के अन्तमन की सच्चाई को हमारे सामने लाती है।

इस प्रकार नारी की बदती हुई विचारधारा स स्त्री पुरुष सबधो मे बदलाव आया है। दाम्पत्य सबधा मे पुनमूल्याकन की स्थिति पैदा हो गयी है। आज की नारी स्वय को पत्नी, कुलवधू और मा के दायित्व के अलावा अपन मानवोचित अधिकार की भी जानकारी रखती है। वह इसके अतिरिक्त मित्र और व्यक्ति के रूप मे भी स्वय को स्थापित करना चाहती है।

मृदुला गर्ग की कहानी 'कितनी कैदें' यौन सबंधो की सीमा का ज्ञान कराती है। मीना के मानस पटल पर विवाह से पहले इन सबधो के कारण जो समाज माता पिता के कठोर और कटु व्यवहार से जो छवि बन गयी थी यौन सबधो से उसे नफरत सी हो गयी है। वह अपने पति की उपस्थिति से आक्रान्त सी रहती है। परन्तु एक दिन भय की स्थिति मे ही कहती है—"तुम्हे पा कर मेरा शरीर ही नही जगा, मैं भी यह जान गयी कि मैं भी प्यार कर सकती हू।" लेकिन मीना के इस विमोचन से पकज के सामने उसका अतीत झकझोरने लगता है—"क्या मैं उसकी पिछली जिन्दगी के शिकजो से बरी हो सकूगा, इस औरत के साथ जी सकूगा ? यही स्थिति एक अन्य कहानी 'निश्चय' (कुलभूषण) मे देखी जा सकती है। 'निश्चय' मे उर्मिला प्रेम के उत्तर दायित्व मे भागने वाले प्रेमी की निशानी को मिटा देना चाहती है। प्रेम के कल्पना लोक से अलग होकर वह यथार्थ के धरातल पर खडे होकर सोचती है—"अपने दान को वह गुलाबी नही बनाएगी।" वह चिकित्सा सुविधाओ का लाभ उठाकर इस पाप से मुक्ति पा चुकी है।

निरूपमा सेवती की कहानी 'सब मे से एक', 'सक्रमण', 'एक और विवाह', मणिका मोहिनी की 'करम की गोट', तथा 'उसका होना न होना' जैसी कहानियो मे अतृप्त काम भावना के अन्तर्द्वन्द्व को बडी सूक्ष्मता से अकित किया है। दीप्ति खण्डेल वाल की कहानी 'आधार' मे एक साधक जो नारी और विवाह से दूर भागता है परन्तु एक नारी के सुगठित यौवन को देखकर उसके हृदय मे सुप्त काम भावनायें करवट लेती हैं और वह उसकी गुलाबी लेस वाली ब्रा चुराकर रात रात भर उसे चूम चूम कर जागता है। व्यर्थ ही काम भावनाओ का दमन व्यर्थ है। 'सीमा' मे भी पत्नी सीमा का प्रथम प्रसव होने पर डाक्टर की सलाह पर पत्नी से तीन महीने अलग रहने के कारण तपन को बडी ही असहजता का अनुभव होता है लेकिन निर्देशित समय के बीत जाने पर उसे लगता है कि मेरे प्राणो का अश कितना सुन्दर और कोमल है। वह व्यर्थ ही असामान्य हो गया था प्रेम मे। दीप्ति की 'वह' मे नीलम का पति उसमे मिलन के चरम क्षणो मे पूछता है—"बाई द वे तुम मेरे पहले कितनों के साथ साई हो डार्लिंग" तो वह एकदम तपाक से उत्तर देती है, "मैंने कोई अकाउंट नहीं रखा, इट हार्डली मैटर्स।'

कमलेश्वर की 'तलाश' की विधवा मा के मन मे यौवन की चाह अभी बाकी है और इस सुख की प्राप्ति के लिए वह अपनी युवा बेटी सुम्मि के जानते अपने प्रेमी के साथ बाहर जाती है। कमलेश्वर के अतिरिक्त अनेक पुरुष कथाकारो की कहानिया मे पात्र-पात्रा सोचते हैं—"हमारे जिस्म बागी हो चुके हैं वह कोई भी मर्द, हम कही भी हो सकते थे। उस समय कोई भी आ सकता था, कुछ भी हो सकता था। 'बहुत

देर बाद', (सीतेश आलोक) मे वीनू के द्वारा अपने पति से कहा जाना वह भी जब, जब कि वह शादी के तीन चार दिन बाद पति के द्वारा प्रेमी से आलिंगनबद्ध स्थिति मे देख ली जाती है—"ओह कम-कम इतने दकियानूस मत बना। तुम भी चाहो तो किसी लडकी से दोस्ती कर लो मैं बुरा नहीं मानूगी।" इस कथन के माध्यम से वह अपनी झेंप मिटा रही है वरना क्या इससे पहले नारी अपने ही पति से ऐसा करने के लिए कह सकती थी। इब्राहीम शरीफ की 'मक्कार' मे 'मैं' मित्र की पत्नी और बहन का उपभोग करता है लेकिन इतने पर भी अपने मित्र के दृष्टिकोण म वह शरीफ है, लेकिन भीतर से मक्कार होने पर भी वह इस बात पर सतोष व्यक्त करता है कि—"उसने खुद को उजागर होने से एक बार नही, कई बार बचा लिया है।"

इस पक्ष को लेकर लिखी गई कहानियो की सख्या कम अवश्य है, लेकिन जो भी लिखी गई हैं उनमे इस पक्ष का बडी खूबी स उभारा और स्वीकारा है। केवल सहज रूप म स्वीकार करके ही इनका मम जाना जा सकता है जो अनुभूति करता है कि यौन धम सचमुच एक आवश्यकता है।

आज का युग और समाज, जिसमे आधुनिक दिखने का प्रदशन करना अच्छा समझा जाता है वही के लोग अपने देश से दूर शिक्षा और नौकरी पाने के लिए विदेश गय हैं। आज भी प्रमुखत पजाब के हर तीसर घर से एक न एक सदस्य काम पाने क लिए विदेश पहुचा हुआ है। लेकिन नयी कहानी मे शिक्षा और नौकरी के लिए गय हैं। इस सदभ मे कुलदीप अग्निहोत्री की कहानी सग्रह 'घेरे के बदी' है। निमल वर्मा की कहानियो मे प्राग चेकोस्लोवाकिया आदि जसे स्थानों पर रह रह प्रवासी भारतीयो की मन स्थितियो का चित्रण जिसम से वहा रहते हुए खुद का अजनबी महसूस करना, 'एडजस्ट' न कर पाना जैसे कारण शामिल हैं, का चित्रण किया गया है।

निमल वर्मा के अतिरिक्त उपा प्रियवदा, सोमा वीरा, सुनीता जन, आदि ने विदेश मे रहते हुए भारतीयो की मन स्थिति का अकन किया है। इसके अतिरिक्त स्वदश वापस लौट भारतीयो की कठिनाई को भी अनुभव किया है। निमल वर्मा की कहानिया विदश के होटल, पब, बार, क्लब, रेस्टा, आदि का मोह जाल बिछा कर भी अदरूनी तौर पर बिखरी हुई मन स्थितियो और समस्याओ स परिचय नहीं करवा पाती न ही उनके पूर्वी पश्चिमी भेदा, सस्कारा को ढोने और छोडन की स्थिति स्पष्ट हा पाती है। इनमे 'लदन की एक रात', 'पराये शहर', 'डेढ इच ऊपर', 'वीक एण्ड' जसी कहानिया ऊपर छूकर निकल जाती है, कुछ सोचने और समझने को मजबर नही करती। उनकी सोच स्पष्ट नहीं हो पाती कि वे क्या कहना चाहते हैं, क्या समझाना चाहते हैं उन लोगों के बारे मे जो इन स्थितियो से दो चार हो रहे हैं।

उषा प्रियवदा की कहानियो म यह स्तर कई जगह देखन को और समझन को मजबूर करता है। पाश्चात्य दशो म जहा नारी के लिए एक स्वच्छद उडान भरन के लिए भरपूर आकाश है, वहा भी वह अपन परम्परागत सस्कारो को नहीं छोड पाती और केवल वैचारिक स्तर तक ही एक प्रकार से असर ल पाती है। कभी वह नशे की 'ट्रिप लेकर हाई होती है और कभी अपने सस्कारो को सहेजन की कोशिश करती है। 'सुरग', 'स्वीकति' आदि कहानियो मे वह दोना सभ्यताओ मे रगे हुए पतिया, प्रेमियों के बीच झूलती है, जो दानो ही है अर्थात भारतीय भी, विदेशी भी। 'मछलियां' और 'कोई एक दूसरा' मे भी नारी की यही स्थिति है। इस प्रकार यदि देखा जाय तो इनकी कहानियों की नारियो ने खुद को जीने के स्तर तक तो विदेशी रग म ढाल लिया है, लेकिन उसके जैसा बन पाने मे कुछ छूट सा गया है। यह दर्शाने की काशिश की गई है कि भारतीय स्त्रिया विदेश जान पर भी अपन परम्परागत मूल्य और सस्कार नहीं छोड पायी है लेकिन वहा जाकर अपने व्यक्तित्व को अवश्य विकसित कर लिया है।

सुनीता जैन की इस पक्ष को लेकर लिखी गई कहानियो मे—'कमाई' 'पावती जब रोयेगी', 'परदेस', 'एक और नील की नागिन', 'कुतिया का पिल्ला' जैसी कहानिया मे विदेश मे रह रहे भारतीयो की मनोदशा का अच्छा वणन किया है। विदेश मे विवाह करने के लिए विवश युवक 'पावती जब रोयेगी' मे भारत मे रह रही पत्नी को छोड देता है, लेकिन फिर भी वह मानसिक स्तर पर उससे अलग नही हो पाता और उसे वह सस्कार और परम्परायें याद आती हैं जिन्हे पावती निभाया करती थी। उसे पावती का तुलसी पूजना, मनौतिया मनाना तथा किसका कथा होगा, कथन याद आते रहते हैं।

कहानी 'कमाई' मे विदेश प्रवास के जीवन को एक दूसरे ढग से चित्रित किया है जहा कि हम अपने देश भारत मे बठे हुए विदेशो को स्वग और सुविधा सम्पन्न मानते नही थकते, लेकिन आशा का वहा जाकर भी घर की बहू सा सुख तो क्या ही मिलता उस पर अपने पारिवारिक सदस्यो की इच्छाओ, जरूरतो को पूरा करने के लिए अस्पताल मे एक नस सहायिका का काम करना पडता है। इसी के लिए उसे भारत मे शौक से छिद्वायी हुई नाक की लौंग उतारनी पडती है और जो टागे सदव टखने तक ढकी रहती थी, उन्ह ही शेव करके स्कट धारण करना पडता है। उसके सामन जब विदश का असली रूप आता है तो उसके लिए बडी दुख की बात होती है। उसका जो विदेश के प्रति एक विशेष आकषण था, एक कल्पना लोक सा सुन्दर था, वही भ्रम से टूट जाता है, वही अब उसे एक दोजख से कम नहीं लगता।

'किधर' कहानी मे रेवा विदेश मे अपने पति के साथ रह रही है। उसके पति जगदीश

के किसी अन्य लडकी से सबध होने के कारण उसके पारिवारिक जीवन मे तनाव उत्पन्न हो जाता है। इस तनाव से तग आकर वह अपने बच्चो के साथ स्वदेश लौट आती है, किन्तु बिना पति के उसे घर मे वह सम्मान नही मिलता । उसके बच्चे जो पहले तो 'इडिया' आने के लिए उत्सुक थे, वे दो चार दिन मे इस जीवन से तग आ गये थे। वे अपनी 'ग्रेड मा' से भी नही जुड पाते भाषा की समस्या के कारण क्योकि उन्हे अग्रेजी नही आती। इसी सघर्ष मे रवा टूट जाती है। उसके सघर्ष का क्षेत्र बदल जाता है, मन स्थिति नही।

विदेश से स्वदेश वापस लौटने पर उनकी क्या मन स्थितिया होती हैं इसका चित्रण भीष्म साहनी की कहानी 'हराम जादे' का नायक पहले तो विदेश मे अकेलापन महसूस करता है और अपने देश भारत की याद आती है। लेकिन भारत लौट आने पर भी उसको अपना जाल धर का पुराना पुश्तैनी मकान टूटा-फूटा लगने लगता है। भाई से भी वह वसा प्यार नही पाता जसा था। क्योकि भाई सोचता है कि वह जायदाद मे हिस्सा लेने आया है। उसकी विदेशी पत्नी हलना भी यहा भारत, जो उसके लिए विदेश है, की धरती पर स्वय को अपरिचित और अजनबी महसूस करती है। इसी अपरिचय से तग आकर वापिस विदेश चला जाता है। लेकिन वहा भी अपने बचपन के मित्र तिलकराज से 'ओ हराम जादे' जैसे सम्बोधन सुनने को तरस जाता है। इस प्रकार वह देशी और विदेशी दोनो धरती पर अजनबीपन की पीडा से पीडित है।

रमेश बक्षी की 'अपरिचय' मे अपने देश वापिस आयी नारी की टूटन की मन स्थिति का चित्रण है। लदन मे ठडे मौसम के बावजूद नशीले पेय पदार्थो का छूती नही और अपनी बेटी को वहा की स्वतत्रता का दुष्प्रभाव न पडे, के कारण स्वदेश वापिस आ कर अपने पूर्व पति के साथ शराब पीना शुरू कर देती है। इनमे भारतीय स्त्री के मूल्य पाश्चात्य मूल्यो से टकराते हैं। इस स्थिति का मूल्याकन बहुत ही सशक्त ढग से किया है।

नयी कहानी इन सब पक्षो को हमारे सामने रखते हुए समाज का जीवन चित्र प्रस्तुत करती है। समाज का एक एक चित्र हमारे सामने इस प्रकार आता जाता है जसे एक फिल्म बनी हुई हम देख रहे हैं और नायक-नायिकाओ की मनोदशा और सघर्षों से एक एक कर दो चार होते है और समाज की तस्वीरो के कई रुख देखते है।

जीवन मे आर्थिक अभाव का कारण कभी अतिवृष्टि है तो कभी अनावृष्टि, इससे देश तो प्रभावित होता ही है, उससे भी अधिक ग्रामीण वर्ग पर प्रभाव पड़ता है, जो सूखा

और बाढ से पीडित हाता है। इसके फलस्वरूप इस वग म बीमारियो का प्रसार हो जाता है। तब इस वग के समक्ष सबसे पहले भूख का प्रश्न उठ खडा होता है और तब मानवता दानवता का रूप धारण कर लेती है। सारे के सार जीवन के श्रेष्ठ मूल्य धर के घरे रह जाते है। कमलेश्वर की कहानी 'इतने अच्छ दिन' म इस प्राकृतिक विभीषिका की संवेदनात्मक स्तर पर प्रस्तुति हुई है, जिसमे मानव इस विभीषिका से पीडित होकर एक घिनौना मुखौटा लगा लना है। कहानी का नायक 'बाला' को जब कोई काम नही मिलता ता वह मानवीय हडिडया का ही व्यापार करने लगता है। इस परिस्थिति म वह अपने आत्मीयजनो की तथा पशुओ की हडिडयों को भी व्यापारिक दष्टि से देखन लगता है। उसे उनके जीवन स नही, बल्कि मृत्यु के बाद उनकी हडिडया से प्यार है। अकाल, सूखा, बाढ जैसी विपत्तिया उसका दानवी और भयानक रूप सामन ला ही दती हैं। बाला को एक बोरी हडिडयों के बदले सवा रुपया चीनी मिल मे मिल जाता है। इस प्राकृतिक विपदा के समय मानव की हडि्डया भी मूल्यवान् हो जाती है। बाला सोचता है कि "गिद्ध और कुत्ते तो लाश को जल्दी साफ नही कर पाते, यदि झुलसता तपती धरती के नीचे लाश दबा दी जाय तो जल्दी साफ हो जायगी।" रात के अधेरे मे कोई लाश को चुरा न ले, इसलिए पहर पर कोमल हृदया बहन कमली को बठा देता है। कमली इम परिस्थिति म ट्रक डाइवरों की सराये म पशा करन लगती है। इस पशे से उस चार पाच रुपये तो मिल ही जाते हैं बाला अपनी दादी की हडिडया के बार को चादी के छल्ल से बचाता हुआ मानवीय सोच पर भी चोट करता है, जिसने उस इम स्थिति पर लाकर पटक दिया है। वही व्यक्ति आज मानवीय हडिडया का व्यापारी हो गया है। इन परिस्थितियों के माध्यम से 'इतन अचछे दिन' कहानी प्राकृतिक विभीषिका ग्रस्त जीवन की दुखद और शाचनीय स्थिति पर सोचने को मजबूर करती हुई दस्तक देती है पाठक के हृदय म उत्प न हुई वितष्णा का। हिमाश जोशी की कहानी 'जलते हुए डैने' म बाढ, सूखा, अकाल जैसी महामारी का चित्रण तो है ही, दूसरी तरफ राजनैतिक अवसरवादिता और सरकारी तत्र म निष्क्रियता, झूठा प्रचार का चित्राकन किया है। इस वस्तुस्थिति को प्रमाणित करते हुए—"इस आदिवासी क्षेत्र म भूख स नौ सौ पद्रह लोग मर सरकारी अनाज चोरबाजारी म बिकता रहा शहरा म दवाए दखन तक को न मिली। दुर्भिक्ष पीडितो न जुलूस निकाले तो उन पर गालिया बरसाई गयी। उन्हे विद्रोही करार दिया गया नेता लोग आय और फोटो खिचवा कर चले गय। थान क आग धरना दन वालो को चौराहा पर घसीटा गया। आदिवासी औरतो के साथ बलात्कार किया गया।'

मधुकर सिंह की कहानी 'बाढ' मे भी प्राकृतिक बाढ और राजनैतिक बाढ, जो निदयता और भ्रष्टाचार की बाढ है जो कि सामान्य जनता को पीसती है, का चित्रण

है "आदमी और प्रकति की निदयता मे कोई फक नही रह जाता है। अफसर और क्लक सब के सब यमराज हैं।" इस कहानी की नायिका को "आफिस वालो के जबडे उतने ही भयावह लगते हैं जितने बाढ के।"

'अजनबी सुख' माहेश्वर की कहानी भी इसी विभापिका को रेखांकित करती है। अकाल म तो उस घरो का जूठा भोजन भी नही मिल पाता है—"जब कोई खाये तो जूठा बचे। खैराती कभी कभी आन गाव भी निकल जाता। मगर अब कही कुछ नही मिलता था। उसे देखते ही लोग दुरदुराने लगते थे। बहुत से लोग गाव छोड कर चले गए थे और रोज जा रहे थे। रात दिन नदी किनारे से चिताओ का धुआ उठने लगा था। खैराती को याद नही पिछली बार उसने क्या खाया था। कुछ दिन वह जामुन के पत्ते तोड कर लाता और नेट कर चबाया करता।' इस यातना का करुण और अमानवीय रूप तो तब देखने को मिलता है जहा गाव से बाहर टूटी फूटी झोपडी म फेंके गये खैराती को उसकी कुतिया अतिम घडियो म खाती है और उसका मालिक खैराती यही समझता है तथा इस अनुभूति को लेकर मरता है कि कुतिया उससे प्रेम कर रही है। परिस्थितिया इतनी क्रूर हो जाती हैं कि कुत्ता जसी वफादार जाति भी अपने मालिक को खा जाती है।

इस प्रकार नयी कहानी न प्राकृतिक विपदाओ बाढ, सूखा का चित्रण तो किया ही है साथ ही इससे उत्प न भूख, बीमारी, गरीबी जैसी यत्रणाओ का भी सजीव चित्रण किया है।

आज के औद्योगिक युग मे नारी विवाह के आधार का मातत्व नही मानती और न ही मातत्व म पूणता जैसे प्राचीन मूल्य मे विश्वास रखती है। तकनीकी सभ्यता ने उसकी सवेदनाओ को जग लगा लोहा बना दिया है। उसके हृदय म मातत्व जैसी भावनायें एक ढकोसला और पिछडापन बनकर रह गयी हैं। 'टैस्ट ट्यूब बेबी' युग मे नारी मातत्व के गुणो को किस सीमा तक अब सुरक्षित रख पायेगी यह कहना कठिन है। आज के आर्थिक युग मे जब अभिभावक रात दिन पैसा कमाने के लिए पिले हुए हैं, क्या वही नारी मातत्व का बोझ सहने को तयार होगी? क्योंकि आज की नारी उच्च शिक्षित भी है। लेकिन उच्च वग से सम्बद्ध नारी को भी मातृत्व बोझ लगता है यह मानना पडेगा। क्योंकि नारी को इससे अपनी स्वतत्रता का बलिदान करना आवश्यक होता है।

निरुपमा सेवती की कहानी 'तलफलाहट' की नारी मातत्व को बोझ मानते हुए भी सतान के प्रति आकर्षित है। वह कहती है—"क्या बिट्टू मेरी नौकरी की वजह से मेरे पास नही रह सकता।" लेकिन आर्थिक सामर्थ्य को भी वह बहुत

आवश्यक समझती है। शायद संतान से भी अधिक—वह कहती है कि वह बच्चो को जीवन म "कुछ बनाने के लिए ही नौकरी कर रही है।" इस प्रकार वह नारी मातृत्व के स्वीकार और अस्वीकार के बीच लटकी हुई है।

'ढाई आखर प्रेम' मे नारी एक ओर तो पति द्वारा तलाक लेने पर और बच्चे छिन जाने पर स्वय को मुक्त अनुभव करती है और दूसरी ओर अपनी मन स्थिति का वणन करती हुई कहती है—"बच्चे के लिए मैं इतनी व्याकुल हो उठती हू कि नियोग से सन्तानोत्पत्ति की बात तक सोच जाती!" राजी सेठ की 'गलत होता पचतन' मे नारी बच्चे के आने को अपने व्यक्तित्व के विकास को रुकावट मानती है। "बच्चे के आने से पहल वह जीवन मे कुछ करना और बनना चाहती है। इसीलिए वह पति अतीत से लडती है।" कभी कभी नारी आर्थिक अभाव के कारण भी सतान की इच्छा नही रखती। सूयबाला की कहानी 'गुमनाम दायर म एक ऐसी नारी का चित्रण किया है जिसकी बेटी 'हास्टल म रहती है और पति अपने काम मे व्यस्त रहता है, इस पर पत्नी, पति से एक और सतान का प्रस्ताव रखती है। लेकिन पति बहुत ही उपेक्षा से कहता है "एक और बच्चे का मतलब है—थी हड्रेड पर मथ। इ पासिबिल अभी ही पूरा नही पडता।' इस प्रकार के आर्थिक अभाव के कारण भी नारी अपने जीवन मे मातत्व का बोझ उठाने मे असमथता का अनुभव करती है। वह चाह कर भी अपनी इस अभिलाषा को पूर्ण नही कर पाती।

इस प्रकार इस विषय को लेकर लिखी गयी कहानियो मे इस दष्टिकोण को कई कोणा से उठा कर सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। नयी कहानी मे नारी इस विषय पर स्वीकार और अस्वीकार के बीच उलझी हुई है। कही वह इस भार को उठाने को तैयार हो भी जाती है तो आर्थिक मजबूरी उसके सामने मु ह बाये खडी हो जाती है। दूसरी ओर एक अथ सम्प न नारी मातत्व को अपने विकास और स्वतन्त्रता मे बाधक मानती है। लेकिन पारम्परिक रूप मे तो युग युग से नारी का हृदय मातृत्व प्राप्त करने को उत्सुक तो रहता ही है। विशेषकर मध्यमवर्गीय नारी तो पुत्र मुख देखन की लालसा सजोये ही रहती है। लेकिन उसकी मजबूरिया उसकी राह म बाधक बनती है, इसमे कोई सन्देह नही।

नयी कहानी मे आज के कहानीकारो ने बूढी पीढी के विषय म बहुत ही कम लिखा है यदि लिखा भी है तो उसमे खुद को ढ ढने की कोशिश कम है, बढती हुई सबधों की दूरी और अमानवीयता ही अधिक चित्रित की है। इसलिए बूढी पीढी के प्रति एक उपेक्षा और क्रूरता का भाव बराबर अपनी ओर ध्यान खीचता रहा। लेकिन बाद के समय के कहानीकार जो समकालीन कहानी के ही हैं उन्होंने इस ओर अधिक ध्यान दिया है।

जिन कहानिया म पुरानी पीढी के एकाकीपन और जिन्दगी से कट जाने का दर्द चित्रित किया है, उनम राकेश वत्स की 'बटवारा', सूयबाला की 'निवासित', अकुलश परिसारी की 'ढुलकती ओस', अचला शर्मा की खल नायक' श्याम श्याम की 'डेथ क्लीनिक', दिनश विजयवर्गीय की 'खोया हुआ सुख', रणजीत कुमार साहा की 'बरामदे पर' आदि कहानियां उल्लेखनीय है। इनके केन्द्रीय पात्र अपनी रोजमर्रा की जरूरतो के लिए भी अपने बेटो पर आश्रित हैं, वही बेटे, जिनको उनके पिताओ ने अपना तन पेट काट कर उनकी सारी सुख सुविधाओ को पूरा किया और पढाया लिखाया, आज उन्हा के जीवन म अपने ही पिताओ के लिए कोई स्थान नही है, न ही उनकी जरूरतो का उनके लिए कोई मोह है, उन्ह वे पिछडा हुआ और असभ्य मानते हैं।

सूयबाला की 'निर्वासित' मे माता पिता अपने बडे बेटे राजन के बुलाने पर अपना पैतृक घर किराये पर उठाकर उसकी अफसरी की छाया में 'पुलाव पकौडी' उडाने चल दत हैं। लेकिन जब वे वहा पहुच कर माजी का रामेश्वरम् वाला फोटो छिपा दिया जाता है तथा पिता जी को जोर स पाठ करने के बजाय उनको मन ही मन म पूजा करने का निर्देश दिया जाता है और दोस्तो के आने पर उन्ह घर म ही रहने का आदेश दिया जाता है ता बूढे दम्पति अन्दर ही अन्दर टूटने लगने लगते हैं। उन्हे अपना वही पुराना मकान याद आने लगता है। वे उन उदास दिना को ज्यादा से ज्यादा एक दूसरे के करीब रह कर अखबार बेवजह पढ कर और माला फेर कर बिता देना चाहते है। सबसे बडा धक्का तो उन्ह तब लगता है जबकि दोनो बेटे अधिक खच की दुहाई दे कर मा बाप तक को बाट लेते हैं। "अब जब दो बेटे है तो एक ही दोनो का खच उठाय, ठीक नही लगता न ।" अलगाव की इस पीडा मे सतप्त पिता की "कापती उगलियों मे कस कर अखबार और आखो मे क्रौच युगल की मूक पीडा थी, जिसे देखकर किसी आदि कवि का कोमल हृदय करूणा की अथाह लहरियो में बह चला था मा निशाद प्रतिष्ठा त्वमगमह शाश्वती महा ।" यही स्थिति राकेश वत्स की 'बटवारा' कहानी मे दृष्टिगोचर होती है। इसम गाव का पुराना मकान बच दिया जाता है और बेटे अपनी अपनी सुविधानुसार मा बाप को बाट लेते हैं।

अकुलेश परिसारी की कहानी 'ढुलकती ओस' का शेरू अपने बेटों से अपमानित होने के बाद भी उनसे अपनी तरफ से तो सबध नही तोडता बल्कि उन्हे बच्चा समझ कर उनके कठोर व्यवहार को माफ कर देता है। वह 'नरेटर' स कहता है—"जो भी अभागा बाप होगा छोटे सरकार, वह अपने आप को ऐसे ही छलावा मे छल कर अपन शेष दिनो को पूरा करेगा। उसका बेटा बीरू उसे अपने पास दुबारा आने से मना कर देता है, क्योकि फटे पुराने कपडे पहनने वाले बाप से उनकी इज्जत पर

फक पडता हैं । "वह अपने उन आने जाने वालो को कैसे समझाये कि फटे पुराने चिथडे पहनने वाला आदमी उसका अभागा बाप है ।" इस प्रकार शेरू अपनो के ही बीच पराये हाने की तकलीफ झेलने को विवश है । अचला शर्मा की कहानी 'खलनायक' का पिता भी निर्वासन झेल रहा है । यही स्थिति मणिका मोहिनी की 'दूरियो के बीच' में भी है। इस प्रकार अशोक अग्रवाल की कहानी 'कोई एक घर' मे पुत्र अपने पिता को एकाकीपन और आत्मनिर्वासन की स्थिति म पहुचते देख कर दु खी होता है जबकि उनकी इस स्थिति का जिम्मेदार वही है । जबकि वह इस स्थिति का आकाक्षी था, लेकिन फिर भी वह इसे बर्दाश्त नहीं कर पाता । द्विजेन्द्रनाथ 'निगु ण' की कहानी मे भी यह स्थिति बहुत करूण है । बहू की बेरुखी और उपक्षा सोमू के पिता को भीतर तक चीर देती है । तब और भी जब उसके कापते हाथो से कप प्लेट टूटते हैं तब बहू बहुत ककश स्वर म कहती है—"लो मरे इस खूसट ने बैठ बिठाये कप प्लेट भी तोड दिय । बूढे का शौक तो देखो मरा पीतल के गिलास से ता चाय नही पीता । और देखो मरा बठे बिठाये एक बडल बीडी सुक सुक करके पी जायगा ।" ऐसी अपमानजनक स्थितियो से बचने के लिए वह बेंत म छुपे खजर से खुद को खत्म कर देना चाहता है । सचमुच पिता की स्थिति दयनीय है । श्याम व्यास की कहानी 'डेथ क्लीनिक' बूढे वग का एक सशक्त उदाहरण है । आर्थिक दष्टि से सम्पन्न होने पर भी कहानी का युवा वग बूढ और फालतू पिता को नही रखना चाहता । पुत्री अपर्णा टेलीग्राम से कहती है—"डैडी, सबका 'टालरेंस' पूरा हो गया । आप का भी और हम बच्चो का भी । बेहतर है, अब क्लीनिक को स्वीकारें ।" अतत जब पापा 'डेथ क्लीनिक' जाने को तैयार यानि मृत्यु का आलिगन करने को तत्पर हो जाते हैं तो सुनील और अपर्णा के तार "पापा इज सो नाइस' वी एप्रिशिएट हिज डिसीजन निममता की चरम सीमा तक पहुच जाते हैं । सुरश उनियाल की कहानी 'योद्धा' मे बेरोजगार पुन द्वारा सिगरेट पीने पर उसका पिता दु खी जरूर हाता है, लेकिन कुछ कह नही पाता । व प्रकाश से केवल यही कहते हैं—"अगर तू चाहता है कि मैं कुछ और जी सकू तो कभी ऐसा काम मत करना, जिससे मेरा दिल दुखे ।' फिर भी पुत्र अपनी इस हरकत को छोड नही पाता । जबकि वह ऐसा न चाहते हुए भी करता है ।

नयी कहानी मे कही बूढो की दुदशा की जा रही है का चित्रण है तो कही युवा पीढी द्वारा बलात निर्वासन । इनमें बूढा के मन स्थिति का वणन और आतनाद भी सुनाई पडता है ।

महानगरो म निवास करने वाले व्यक्तियो का जीवन किस प्रकार से उकताहट और एक ही ढर्रे और नीरसता स परिपूण है, इस स्थिति को नयी कहानी ने बहुत ही सफलता से उभारा है । उषा प्रियवदा की कहानी 'छुट्टी का दिन' म माया अपने

परिवार से अलग दूर नौकरी करती है। धोने के लिए डाले गये ब्लाउज का रंग दूसरे कपड़ों पर लग जाने से उसके जीवन पर छायी ऊब और एकरसता उघड़ जाती है। उसे लगता है उसकी जिंदगी का पैटन भी बिगड़ गया है। उसके समस्त आकर्षक रंग निकल चुके हैं और जिंदगी रंग निकले कपड़े के समान ही भद्दी हो गयी है। निर्मल वर्मा की कहानी 'परिन्दे' की नायिका लतिका भी जिंदगी की इस ऊब और नीरसता से निकलना चाहती और किसी परिवर्तन की आशा रखती है। इसी प्रकार डा० ह्यूबर्ट भी इसी स्थिति के शिकार हैं। शरण बंधु की कहानी 'कुर्सी' में भी इस ऊब की स्थिति को रेखांकित किया गया है। कहानी का नायक अनुभव करता है कि जिंदगी के सारे संदर्भ धीरे धीरे खोते जा रहे हैं और खोखलेपन के सिवा वहां और कुछ शेष नहीं है ।"

"यहां हर आदमी टूटी हुई जिंदगी की प्रत्यंचा से फिसले हुए उस तीर की तरह बेलाग होकर दौड़ रहा है, जिसका कोई मंतव्य नहीं।" कहीं कहीं यह ऊब अर्थ समस्या से भी उपजी हुई है, जिससे जीवन में कोई भी अर्थ ढूंढना व्यर्थ हो जाता है। प्रणव कुमार बंद्योपाध्याय की कहानी 'अलैक्जैंडर' में व्यक्ति का यह कहना कि—"फ्रैंड जप हो गए हो तुम। लेकिन दिल्ली शहर बुरा नहीं है", इस ऊब और एकरसता को ही उघाड़ता है।

महानगरीय जीवन जीने वाले व्यक्तियों के जीवन में इस ऊब और एकरसता का एक बहुत बड़ा कारण समाज में एक दूसरे से मिलना जुलना न होने के कारण भी पैदा हुआ है, क्योंकि पैसा कमाने की आपाधापी और जगहों की दूरी उन्हें ऐसा करने की इजाजत नहीं देती। यदि वे ऐसा करना भी चाहें तो परिस्थितियां उन्हें रोकती हैं। इसीलिए महानगरों से अधिक आज भी कस्बों में यदि वे कहीं रह गये हैं तो, आज भी आत्मीयता मिल जाती है, क्योंकि उनके पास कुछ समय बाकी है, जिसे वह चौपालों में बैठ कर एक दूसरे की बात सुन सकें, जिससे उन्हें नित नयी घटनाओं के पता लगते रहने के कारण सोचने के लिए कुछ और भी मुद्दे मिल जाते हैं। लेकिन महानगरों में ऐसी स्थिति संभव नहीं है। इस स्थिति को समकालीन कहानी में कहानीकारों ने सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है।

समकालीन कहानी का पुरुष यदि स्वतंत्रता चाहता है तो नारी भी इसके विरोध स्वरूप इस प्रकार की स्वतंत्रता और आधुनिकता की ओर नहीं देखना चाहती। उसे अपना वही पुरातन परम्परागत नारी का शालीन रूप अच्छा लगता है। वह बहुत अधिक आधुनिक जीवन जीना नहीं चाहती। वह किसी पार्टी, मद्यपान, डांस वाली संस्कृति नहीं अपना सकती। इन सब परिस्थितियों में स्वयं को मिक्स या 'एडजस्ट' नहीं कर पाती और 'अन ईजी', महसूस करती है। आज नई कहानी की नारी इस

सस्कृति से अपनी सस्कृति और परम्परा की ओर लौटने को उत्सुक है। मृदुला गर्ग की कहानी 'तुक' म पति के ज़ोर देने के बावजूद भी पत्नी ताश, ब्रिज का खेल और उसम रुचि लेना नही सीख पाती तो उसे लगता है, "मैं इस युग म मिसफिट हू।" 'दुनिया का कायदा' कहानी की पत्नी रक्षा को भी यह क्लब जीवन, डास, कैबरे आदि कुछ भी अच्छा नही लगता। डास मे उसके पति सुनील मिसेज़ मेहता स उलझे हुए हैं और 'मिस्टर मेहता, डास के बहाने रक्षा के साथ 'स्वतन्त्रतायें' अपना रह हैं और "रह रह कर वह अपने से पूछती गयी कि आखिर वह यहा से चली क्यो नहीं जाती ?" किन्तु पति का यह कहना कि "तुम बहुत असहिष्णु हो। नाचने मे थोडा बहुत यह सब चलता ही है।" उसे चौंकाने वाला उत्तर लगता है। कैबरे देखते हुए "इस वीभत्स विक्षिप्त माहौल के बीच एक ओर उसकी अपनी विवस्त्र देह याचना करती घूम रही है।" 'अनावृत कौन' राजी सेठ की कहानी म भी पत्नी को कवर देखने जाने से दहशत सी होती है, मुझे कवर में जाने से डर लगता है घबराहट भी " "मुझे लगता है, मैं ही अनावृत हुई जा रही हू।"

समकालीन कहानी म ऐसी नारी की स्थितियो और क्लब सस्कृति के पीछे छिपी असलियत को सामने लाया गया है। वह ऐसे जीवन को स्वीकार न कर पाने के कारण पूर्णत आधुनिकता की श्रेणी म नही आ पाती। उस नारी के सस्कार उसे यह सब स्वीकारने की प्रेरणा ही नही देते।

नारी का एक ऐसा भी रूप है, जो न तो पूर्णत प्रेमिका बन पाती है और न ही मा। यह स्थिति तब आती है जबकि वह युवा तो होती है, परन्तु अपने पति के तलाक लेने या मृत्यु हो जाने के कारण उसे किसी पुरुष की आवश्यकता होती है। लेकिन अपनी सतान के भय के कारण वह पूर्णत इस बात को व्यक्त नही कर पाती, भय के कारण। यदि वह ऐसा करती भी है तो बच्चो की अवमानना पाती है। इस ऊहापोह मे वह झूलती रहती है। कभी वह बच्चो की तरफ झुक जाती है तो कभी प्रेमी की तरफ। और यही से शुरू होता है आत्म सघर्ष का एक अन्तहीन सिलसिला। समकालीन कहानी म नारी के इसी सघर्ष को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। मोहन राकेश की कहानी 'एक और जिन्दगी' म तलाक के बाद सतान प्रेम को लेकर कहानी लिखी गयी। लेकिन सबसे भावपूर्ण कमलेश्वर की कहानी 'तलाश' है, जिसम ममी एक प्रौढा है और 40 वर्ष उम्र है। वह चालीस की होने पर भी चालीस की नही लगती और अपनी बेटी की मा न दिखते हुए बडी बहन ही दिखती है। उसके जीवन मे अभी प्रेम का रग बाकी है। इसलिए वह अपनी युवा बेटी सुमि की जानकारी म अपने मित्र चद्रा के साथ कालेज के काम के बहाने बाहर जाती है। उनके सुख और शांति के लिए सुमि उनके साथ पुरखिन की तरह व्यवहार करती है। इसी प्रकार मन्नू भडारी की कहानी 'बद दराजो' का साथ

मे नारी मे और भी अधिक साहस है। अपने प्रेमी, पुत्र के प्रेम का तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रेमी को ही अधिक महत्त्व प्रदान करती है। "तब उसने दो निर्णय एक साथ लिय थे। वह असित को होस्टल भेज देगी। वह अपना अकेलापन समाप्त करने के लिए सही और स्वाभाविक माग ही अपनाएगी।" वह बेटे की खुशी और सुख के लिए अपने प्रेम का बलिदान करना नही चाहती। वह एक ऐसी दिशा की ओर बढी है, जिसम नयी कहानी की नारी नहीं बढ पायी थी। इस दिशा मे यह उसका पहला कदम है। लेकिन जरूरी नहीं है कि हर नारी अपन सुख, सतोष के लिए ऐसा साहसी कदम उठाय। ऐसी बहुत सी नारिया हैं जो अपने बच्चो के सुख के कारण अपनी इच्छाओ, आकाक्षाओ की हत्या नही कर सकती। शशिप्रभा शास्त्री की कहानी 'घुली हुई शाम' मे नारी का यही रूप दिखाया गया है, जिसमे वह अपनी सतान के सुख के लिए अपने प्रेमी को छोड देती है। सीमा विधवा होने के 15 वष बाद सिन्हा बाबू के प्रेम मे पडती है। लेकिन अपने किशोर उम्र के बच्चो की झुझलाहट और उपक्षा, अपनी ही बेटी शोभा द्वारा सिन्हा बाबू को लकर कहे गय अपमानजनक व्यग्यपूण ढग से कही हुई बातें उसको एक एसे निणय पर ले जाती हैं जहा अन्तत वह अपन प्रेमी को छोड देती है। इसका अथ यह नही कि वह आदश मा है ही नही, लेकिन कभी 2 परिस्थितिया और परिवेश उसे ऐसा करने पर विवश कर देते हैं कि उसको वह राह छोड ही देनी पडती है, जहा उसने अपनी अभिलाषाओ की पूर्ति के लिए कदम रखा था। यह त्याग कभी उसे बच्चो की खुशी के लिए करना पडता है और कभी स्वय को ऐसी अपमान जनक स्थिति से बचाने के लिए जहा उसके बच्चे ही उसका तिरस्कार और व्यग्यपूण लहजे म अपमान करने लगें।

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी 'ऑक्टोपस' म भी मा ऐसी ही परिस्थितिया मे फसी हुई है। उसकी युवा होती बेटी की सोच के बारे म चिन्तन करती है—"नीता को इन अकलो से बेहद ऊब होती है। जबसे उसने होश सभाला है उसके इद-गिद इन अकलों की भीड लगी रही है। इन अकलो के कारण ही घर मे कलह और झगडे होते रहे हैं।" इस सोच स दुखी होकर आखिर मम्मी यह सोचने पर विवश हो ही जाती है कि वह अब किसी अकल के कारण अपमानित नही होगी। वह इस अपमान और ऊब, कलह से बचने के लिए अपना अलग रास्ता बना लेती है।

इस प्रकार नयी कहानी मे नारी कही मा के रूप मे उलझनपूण परिस्थितियो म फसी हुइ है तो कही प्रेमिका के रूप मे। दो भागो मे बटी हुई ऐसी नारी को कही न कही समझौता तो करना ही पडता है चाहे वह पारिवारिक स्तर या कही दायित्व बोध के कारण।

समकालीन हिन्दी समाज में नारी की स्थिति म आये परिवतन का सबसे बडा

कारण है पुरुष के साथ कधे से कधा मिला कर नौकरी करना और धन-अर्जित करना। इससे नारी की मानसिक प्रवृति, स्थिति, स्वातन्त्र्य और प्रेम म बहुत बडा परिवतन सामने आया है जिससे वह अदर तक टूट गयी है। शाम को जब वह थकी हारी घर लौटती है तो उसे घर की समस्याओ से उलझना पडता है। परिवार के सारे सदस्य उससे कुछ न कुछ अपेक्षायें लगाये रहते हैं। लेकिन क्या कभी किसी ने उसकी अपेक्षाओ के विषय म भी सोचने का प्रयास किया है? घर हो, या नौकरी करने का स्थान, हर जगह उसे मानसिक तनाव झेलना पडता है। लेकिन ऐसी हालत मे भी उसे परिवार और आफिस म सभी को अपने अपने काम से सतुष्ट करना पडता है। इस प्रकार के तनाव और सघर्ष को झेलती हुई नारी को आज के कहानीकार ने बहुत सशक्तता से अभिव्यक्ति प्रदान की है। ऐसी नारी को बडी सजीवता म जीवन प्रदान किया गया है।

इस श्रृखला मे उषा प्रियवदा की कहानी 'सबध' मे ऐसी नारी की व्यथा को चित्रित किया है, जो अपने परिवार को पोषित करने के लिए ही, करते करते टूट चुकी है। मन्नू भडारी की कहानी 'ए खाने आकाश नाइ' की नारी सुषमा यही सोचती रह जाती है कि "घर थोडा जम जाये तो वह अपने लिए भी कुछ सोचे क्योकि परिवार म कोई और तो उसके विषय में सोचना नहीं चाहता और जब वह अपने लिए उपयुक्त साथी पाकर विवाह की घोषणा करती है तो घर मे कुहराम मच जाता है।" इस प्रकार की कलह म विवाह तो कर लेती है लेकिन थोडे समय बाद घर में रहने के बाद वह पति के घर जाती है तो वहा भी नौकरी के कारण ही ससुर, ननद, देवर की जरूरतो का पूरा करने का भरसक प्रयास उसे तोड देता है। वह जिस सुख शाति को बरसो से खोज रही थी, उसे वह विवाह के बाद भी नही मिल पाती है। यह दुख, व्यथा सिर्फ सुषमा का ही नही है, आज भारत म रह रही कितनी ही नारियो का दुख है। आज भी कितने भारतीय परिवार की स्त्रिया अपने परिवार को पालने में अपना जीवन स्वाहा कर रही हैं।

'योग दीक्षा' राजी सेठ की कहानी में एक ऐसी नौकरी करने वाली लडकी का दुख चित्रित किया है, जिसमे वह अर्थाभाव के कारण परिवार का पालन करती हुई यातना की अधी खाई मे यातना झेल रही है। वह अस्वस्थ भी रहती है और कोई भी काम ठीक से नही कर पाती इसलिए, इस पर भी वह काम करने को विवश है। चाहे वह शारीरिक और मानसिक रूप से समर्थ हो या न हो।

निरूपमा सेवती की कहानियो म—कामकाजी स्त्री को समाज में जो पुरुषों की गिद्ध दृष्टि का शिकार होना पडता है, व्यग्यबाण सहने पडते हैं, उनके उपहासो और घिनौने प्रस्तावों को हसते हसते सहन करना पडता है, का बहुत बारीकी से अध्ययन

करते हुए उसकी समस्याओ को उभारा है। इनमे 'सबमें से एक', 'बद्धमुष्टि' 'तलफलाहट', 'मा यह नौकरी छोड दो,' आदि कहानिया अपनी बात को बडे प्रभावशाली ढग से कहती हैं। 'सब मे से एक' कहानी की नारी को नौकरी करने से जो कुछ सहन करना पडता है, उसके कारण उसका नौकरी करना मुश्किल हो जाता है। वह इन सब परिस्थितियो से बहुत तग आकर निर्णय करती है कि अपने प्रेमी के पिता के स्टूडियो मे 'न्यूड सिटिंग' देकर पैसे कमाएगी। लेकिन वह तनावग्रस्त इसलिए है कि वह अपने वतमान प्रेमी को अपना अतीत नहीं बता सकती। क्योंकि ऐसा करने पर वह उस छोड देगा। लेकिन पहल तो वह एसा करने के लिए सोचती है कि वह पूरी ईमानदारी से अपना अतीत बता देगी। लेकिन इसके फलस्वरूप होने वाल परिणाम उसे दहला देते हैं। इस प्रकार वह दोनो स्थितियो को झेलती हुई अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति म अपना जीवन गुजार रही है।

निरुपमा सेवती की कहानी 'बद्धमुष्टि' मे वह नारी होटल रिसेप्शनिस्ट के रूप मे एक होटल मे काम करती है। वह अपने होटल के ग्राहको से 'सौ सौके छ पत्ते' इसलिए पाती है कि उनकी द्विअर्थक बातो और अश्लील कटाक्षों को बर्दाश्त करके भी मुस्कराय, उसे वह अहसास बहुत सालता है, "सुन्दरता और तगहाली साथ साथ हो तो इससे ज्यादा मुसीबत दूसरी नहीं है।" नौकरी करना उसे तब और कष्टदायक लगता है, जब परिवार मे भी उसे अपेक्षित सुख नही मिलता।

समकालीन कहानी के कहानीकारो ने भय से त्रस्त और आतकित, आज के मानव को बडी सजीवता से प्रस्तुत किया है। एक ओर जहा एक विशेष वर्ग का व्यक्ति साधन सम्पन्न और हर दृष्टि से समर्थ है, वही उसमें एक प्रकार का भय और आतक घर कर गया है, जिससे वह लाख चाहने पर भी दामन नहीं छुडा पा रहा है। कमलेश्वर का कहना है कि—"आज का मनुष्य त्रास न सकट और अपनी सश्लिष्ट परिस्थितिया की ओर अभिमुख है। उसके अस्तित्व के लिए अणुयुद्ध और मौत का ही खतरा नहीं है,—यह मौत तो बडी बेकार और क्रूरता से भरी अद्ध प्राकृतिक या अप्राकृतिक मौत है। इससे भी बडी दारूण मौत एक और है—वह आदमी के अपने विचारो, जीवन-स्रोता, स्वाधीनता, निर्णय शक्ति और जीवन तन्तुओ की मौत है। भयावहता तो इसी मौत की है। सत्रास और यातना भी इसी मौत के कारण है।"

यह निर्विवाद सत्य है कि विज्ञान ने हमे एक से एक अमूल्य देन प्रदान की है। वहीं जीवन के प्रति एक अनिश्चितता भी प्रदान की है। आज का व्यक्ति मृत्यु के प्रति विशेष रूप से आतकित है। आज का व्यक्ति पुराने विश्वासों, आस्थाओं को लेकर भी डरा हुआ है। वह अपने ही बनाये विश्वासो से सन्त्रस्त है। रमानाथ अवस्थी के विचार आज के व्यक्ति के विषय मे हैं कि—

भीड म भी रहता हू
वीरान के सहारे
जैसे कोई मदिर किसी
गाव के किनारे ।

कभी वह विचारा की भीड म अकेला पड जाता है, कभी सभा की भीड मे, कभी सडक और बाजारों की भीड म, इस भीड मे उसे हमेशा एक डर बना रहता है कि कही वह किसी मोटर गाडी के नीचे न आकर दब जाय, कोई उसे कत्ल न कर द, कब उसके विचारों की हत्या हो जाये, कोई निश्चित नही है, कुछ पता नही है, कब क्या हो जाए। मनुष्य का इस प्रकार इन सब तत्वों से प्रभावित होना सहज ही है। इसलिए इस प्रकार का व्यक्ति उठ कर आज की कहानी मे आ गया है।

निमल वर्मा ऐस व्यक्तिया को चित्रित करने वालो म सबसे पहले कहानीकार कहे जा सकते हैं। डा० शिवप्रसाद सिह का कथन है—"आतक का वास्तविक रूप सिफ एक कहानी मे मिलता है और वह कुछ दूसरी त्रुटियो के बावजूद निमल वर्मा की सफल और श्रेष्ठ कृति कही जा सकती है। कहानी हैं—'लदन की एक रात'। इस कहानी का आतक वाकई किसी अदृश्य नियति से प्रेरित है, जहा अबोध निरपराध इसान बलात अपराधी बना दिया जाता है। यह व्यक्ति व्यक्ति का आतक होकर भी समूची मानव नियति का 'आतक' बन जाता है। 'लदन की एक रात' का आतक सच्चा है, क्योकि वह वण विद्वेष से अमानवीय रूप से जुडा हुआ है। यह जाड या सबध अरूप है, कही इसकी चर्चा नही है। क्योकि आतक कभी भी स्पष्ट कारणो से जोडा नही जा सकता। बावजूद इसके इस आतक म आत्मा और शरीर को झिझाड देने की पूरी शक्ति है। यह अदश्य आतक पहली बार स्थूल रूप म सामने आया है।"

डा० सिह का कथन निमल वर्मा की कहानी के सदभ म पूरा उतरता है। निमल वर्मा की कहानी 'लदन की एक रात' के पात्र सचमुच इसी आतक के शिकार हैं—

"मुझे याद कुछ नही, सच पूछो तो मुझे यह नही मालूम कि मैं स्वय चिल्लाया था या काई बाहर की चीख मुझे सहसा झिझाड गयी थी। मुझे सिफ इतना भर लगा कि मेरी सास एक अधे चिमगादड की तरह मेरी छाती की दीवार स टकराती हुई बेतहाशा फडफडाने लगी थी ।"

निमल वर्मा की ही कहानी 'लवस' म यही डर दूसरे कोण से रेखाकित हुआ है—

"उस शाम एक धु धली सी आकाक्षा आयी थी और मैं डर गया था। लगता है, आज वह डर हम दोनो को है। गेंद की तरह कभी उसके पास जाता है, कभी मेरे पास। वह अपनी घबराहट दबाने का प्रयत्न कर रही है, जिसे मैं नही देख रहा।"

इसी प्रकार उनकी कहानी—'अंधेरे मे' के बच्ची को यही बात आतंकित किए रहती है कि जिनके कान छोटे होते हैं वे बहुत जल्दी मर जाते हैं—बच्ची कहता है—"उनके कान बहुत छोटे छोटे हैं, गुड़िया के कानो से जिन्हें वे अपने बालो के भीतर छिपाए रखती हैं। जब कभी वे मुझसे सट कर लटती हैं, तो मैं उनके कानो को बालो के भीतर से निकाल लेता हू। मुझे बानो की बात याद आती है, और सारे शरीर मे एक हल्की सी झुरझुरी फैलन लगती है। जिनक कान छोटे होते हैं," बानो ने एक दिन कहा था, वे लोग बहुत जल्दी मर जाते हैं।" मैंने यह बात मा को नहीं बताई है, सोचता हू, जब वह मरने लगेंगी तो कह दू गा कि वह अपने छोटे छाटे कानो की वजह स ही मर रही हैं।"

निमल वर्मा की ही कहानी 'परिन्दे' के दो पात्र मि० मुकर्जी और मि० ह्यूबट भी अपने-अपने कारणो से भयभीत और आतंकित हैं। डा० ह्यूबट को लगता है कि वे किसी दिन इसी प्रकार अपनी बीमारी को झेलते हुए एक दिन मर जायेंगे।

कमलेश्वर ने श्रीकान्त वर्मा की कहानी 'ठण्ड' की व्याख्या करत हुए कहा है—"यह कहानी नितान्त देशीय परिस्थितिया से उपजी है सडकें, दुकानें, माहौल और सैर के लिए निकला हुआ परिवार सभी सुपरिचित हैं पर इस परिवार के अभिशाप को ढोता हुआ बाप और सब की आत्माओ म समायी हुई सर्दी और उनके ठिठुरे हुए व्यक्तित्व—ये सब मिलकर भयकर सत्रास की प्रतीति देते हैं। परन्तु लखक ने कहीं भी सत्रास शब्द का प्रयोग नहीं किया है। ठण्ड के प्रतीक मे ही कहानी की सम्पूण यातना उभर आई है।"

अपने अपने परिवेश से प्रभावित होते हुए भी आज की कहानी के पात्र जिस प्रकार की सकटपूण स्थितियो स सबद्ध हैं—यह इनकी विवशता पूणत अपनी होती हुई भी, आज भी कही न कही, किसी न किसी साधारण मनुष्य की भी विवशता और सत्रास है। वह भी इसी स्थिति मे जी रहा है। यह सत्रास एकदम यथाथ के धरातल से जुड़ा है।

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद जब नयी पीढी के लेखको ने विभाजन के दु ख को झेला और देखा तो उसके सामने परिवार के बोझ को ढोता पिता, गृहस्थी के झझट मे फसी हुई मा, रसोई के काम मे फसी हुई बहन जैसा सामान्य परिवार का ढाचा सामने आया। दूसरी ओर देश राजनतिक स्तर पर इतना टूट चुका था कि उपेन्द्रनाथ अश्क ने लिखा—"वास्तव म दो महायुद्धा न ससार भर को जसे झकझोर कर रख दिया। आज के लेखक ने पूर के पूरे राष्ट्रो को दूसरी जातियो अथवा राष्ट्रों से एक अधी, क्रूर पाशविकता का व्यवहार करते हुए, एक अमानवीय कठोरता स ... पद-दलित करते हुए उनका अस्तित्व तक मिटते हुए देखा और अनजाने ही ...

पुरानी मान्यतायें बदल गयी।" व्यक्ति का सारा जीवन इस परिस्थिति मे बिखर गया। उसके भाव, विचार और यथाथ का असली धरातल से जुडना भी कठिन हो गया। लेकिन उस समय के पाठक को हवाई किलो और नकली घटना स्थितियो से ऊपर उठकर यथाथ की प्रतीक्षा थी, जिसे वह खुद भोग रहा था। इसलिए लेखक वग उन्ही की इच्छानुरूप ढल गया। इस बदलाव ने ऐसे यथाथ को जन्म दिया जो सवेदना, मूल्य के स्तर पर बदल गया था और बदलता जा रहा था।

उस समय के कहानीकारो ने झूठ को खोखला सिद्ध कर दिया था, जिनमे माकण्डेय के 'पान फूल', 'महुए का पेड', कमलेश्वर के 'राजा निरबसिया', 'कस्बे का आदमी', अमरकान्त की 'जिन्दगी और जोंक', शेखर जोशी का 'कोसी का घटवार', शिवप्रसाद सिंह का 'कमनाशा की हार', मोहन राकेश का 'नये बादल' राजेन्द्र यादव का 'जहा लक्ष्मी कैद है', रेणु का 'ठुमरी', कृष्णा सोबती का 'बादलो के घेरे' और रामकुमार का 'एक चेहरा' जैसे कहानी सग्रह प्रकाशित और चर्चित हुए, जिनमे यथाथ के नाम पर वह सभी कुछ था जो कि उस समय हो रहा था। इनमे परिवेश और परिस्थिति को सजोया गया था और उस ध्यान म रखते हुए ही कहानी सजन हुआ था।

तब से आज तक का कहानीकार इसी यथाथ की प्रतिष्ठा म सलग्न है। जिनमे कामतानाथ की 'लाशें', नातरजन की 'छलाग,' मोहन राकेश की 'जख्म' शानी की 'एक नाव के यात्री, निमल वमा की 'शहर से ऊपर', गगा प्रसाद विमल की 'विध्वस, दूधनाथ सिंह की 'आइसबग', उषा प्रियवदा की 'नीद', विजयमोहन सिंह की 'वे दोनो', राजेन्द्र यादव की 'प्रतीक्षा', कृष्णा अग्निहोत्री की 'कुटुम्ब', काशीनाथ सिंह की 'सुख', 'कृष्णा सोबती की यारा के यार' जसी कहानिया भी इसी काय मे लगी हुई हैं अपनी पूरी शक्ति के साथ।

आज के औद्योगिक युग मे स्थितिया इतनी तजी स बदली कि पारिवारिक सबधो पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पडा, पहले जैसा प्यार नहीं रह गया, केवल एक अनिवायता सी ही थी, जिसे सब ढोये जा रहे थ। श्री राजेन्द्र कहते हैं—"विघटन का यह सिलसिला अनेक सबध स्तरो पर सश्लिप्ट रूप म और साथ साथ चलता है

जिस 'रक्षा बधन' (विशम्भर नाथ कौशिक) पर बहनें तडपती थी और दसियों वर्षों मे छूटे हुए भाई जहा आकर मिल जात थ, वे भाई बहन 'कमरा और गली' (कमलेश्वर) गार्जियन (राजेन्द्र यादव) या उषा प्रियवदा की 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' की बदली परिस्थितियों म एक दूसरे स दूर जा पडे हैं, और भाई-बहन को शहर के बीच एक 'वस' मान कर टाल देता है जो भाई शखनाद 'बडे घर की बेटी' मे मिलते थे, वे प्रयाग शुक्ल, राम कुमार, निमल वर्मा की अनेक कहानिया म

आपस मे अपरिचित और एक दूसरे के प्रति करूण सहिष्णुता की मजबूरी से बधे दीखित हैं—रमेश बक्षी की 'शबरी' मे व प्राय प्रतिद्वन्द्वी हैं और मनहर चौहान के 'घर घुसरा' मे लगभग एक दूसरे के दुश्मन (बहन-बहन) यह स्थिति ता जान कब से कहानियों का विषय बनती आ रही हैं। यह एक निर्विवाद सत्य था कि भाई अपनी बहनों से उतना प्यार नहीं करते जितना बहन अपने भाइयो से। परन्तु विभाजन क बाद जब लडकिया भी कमान लगीं और परिवार का भरण पोषण करन लगी, तो घर मे उनकी स्थिति में बदलाव आया। अब घर मे भाइयों के लिए उन का व्यवहार यह हो गया जो कि पहल भाइया का बहनो के प्रति था, यानि उपक्षापूण। न केवल उन्ह ही, बल्कि उनके माता पिता को भी यह स्वाभाविक ही लगा। उषा प्रियवदा की कहानी 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' म इस स्थिति को चित्रित किया गया था।

'जिन्दगी और गुलाब के फूल' का नायक एक ऐसा युवक है जा जब नौकरी करता था तो, तब तो उसे मा की ममता, बहन का प्यार मिलता था और शाभा जैसी लडकी उसकी प्रेमिका थी, उसस मगाई भी हो गयी थी। नौकरी छूटते ही बहन का व्यवहार दैनिक अपमान म बदल गया, ममतामयी मां बहन की तरफदारी करने लगी और वह रोटी के लिए भी बहन पर आश्रित हो गया। इसलिए उसे हर तरफ से प्रताडना, उपेक्षा और घणा मिल रही थी—जिन्दगी मे गुलाब के फूल नहीं अपितु काट ही काटे रह गय थे, जो आज के किसी भी नवयुवक की जिन्दगी हो सकती है। स्थितिया के प्रति आत्मसमपण क अलावा वह और क्या सोच सकता है। सिफ इतना कि जिन्दगी म फेलियर है, कुछ नहीं कर सका जसे उसकी जिन्दगी मे फुल स्टॉप लग गया है। उस उस यथाय के सामने नतमस्तक होना पडा कि प्यार से बडी एक और आग हाती है, भूख की, पट की। समाज म इस वास्तविकता को आज न जाने कितने नवयुवक ढो रहे हैं।

उषा प्रियवदा का यह चरित्र स्वाभाविक आकाक्षाओ और आवश्यकताओ वाले लागो म से है। वह जीवन को लेकर कोई बुनियादी सवाल नही उठाता। वह परिस्थितियो के द्वारा एक विशेष सवेदना को प्रसार सा देता लगता है।

पारिवारिक आर्थिक स्थिति के साथ पति पत्नी का आपसी सम्बध भी बडा मायन रखता है। आज की नारी आर्थिक स्तर पर आत्मनिभर हो गयी है। इसलिए वह पति के प्रति उन आदर्शों, परम्पराओ, भावनाओ से बध कर रह नही सकती जैसा कि विभाजन से पहले की नारी रहा करती थी। इसके परिणाम स्वरूप पति के अपने जीवन मे भी एक दरार सी आ जाती है। पति एक ललक, एक उपहास और भटकाव का शिकार होकर, एक और जिन्दगी की खाज करता है। यह

बात अलग है कि जिन्दगी उसे मिलती भी है या नहीं। इसी भटकाव को ही लिए है मोहन राकेश की कहानी 'एक और जिन्दगी'। यह कहानी एक ऐसे युवक की कहानी है जो अपनी पहली पत्नी से तलाक लेकर दूसरी शादी कर लेता है, लेकिन उस पहली पत्नी के प्रति भावनात्मक लगाव से अलग नहीं हो पाता। उसका पहली पत्नी से एक बच्चा भी है, जिससे वह लगाव रखना चाहते हुए भी नहीं रख पाता। दूसरी पत्नी मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त निकल जाती है। इस तरह वह ठगा जाता है और स्वयं को विक्षिप्त होता पाता है। उसने पहली पत्नी को छोड़ कर एक और जिन्दगी की तलाश की थी दूसरी शादी करने मे, लेकिन यहा भी भटकाव उसका पीछा नहीं छोड़ता और वह मारा मारा फिरता है ऊब, घुटन, बन्दवासी और अकेलेपन के गिर्द घिरा हुआ। जिजीविषा व्यक्ति को हर प्रकार से पासा फेंकने को मजबूर करती है। ऐसे समय मे व्यक्ति चाहता है आश्रय, सहारा।

निष्कपत समकालीन हिन्दी कहानी में आधुनिकता बोध, भाव बोध गहरा होता जा रहा है। आज का कहानीकार इन बोधों को पहचानता हुआ सीढी दर सीढी ऊपर उठता जा रहा है। आज के सामाजिक जीवन को जीते हुए, उस परिवेश को आत्मसात करके अपने लेखन म उतार रहा है। आज का कहानीकार परिवेश से प्रभावित हो भी रहा है और उसे प्रभावित कर भी रहा है। वह एक तटस्थ प्राणी की तरह न जीकर चेतनता म जी रहा है। व्यक्ति के जीवन पर छायी धुध उससे छुपी नहीं है। उसके लेखन मे आये ये व्यक्ति, घटनायें, इत्यादि सब काल्पनिक न लग कर जीवन्तता लिए हुए हैं और ऐसा लगता है कि यह सब लेखक का भोगा हुआ यथार्थ ही उसके लेखन मे उतरा है। उनकी कहानियो म आम आदमी का सघर्ष और उसकी विद्रूपमय विडबनापूर्ण जीवन स्थितियां मुखर हुई हैं।

आज की नई कहानी का आदमी अपनी आत्मा की तलाश म लगा हुआ है जो न जाने किस अंधेरे मे गुम होकर रह गयी है। यह आत्मा की तलाश कहीं व्यवस्था के विरुद्ध है तो कही इस व्यवस्था से प्रतिशोध और स्थितियो के विरोध म है। क्या इसलिए व्यवस्था का विरोध है कि हम वहा नही हैं जहा से व्यवस्था की शुरुआत होती है? क्या हमारे और उनके विचारो मे इतनी भिन्नता है कि उसकी खिलाफत करने पर आमादा हो जायें या फिर एक जुलूस के रूप मे चलते हुए अपने को ही खो दें? क्या सचमुच इस माध्यम से आत्मा की तलाश सभव है? लेकिन हम यह नहीं देखते कि जैसे ही हम पार्टी सत्ता हथियाते हैं, प्रतिशोध और विरोध खत्म। लेकिन यह भी कितना कठिन है, शापनीय है।

"लग रहा था कि जैसे मैं टाईम स्पेस की चोटी पर खड़ा हुआ विगत और . के सीमाहीन विस्तार को देख रहा हूं। और कोई कर्ता न होकर एक

चिरतन कॉस्मिक लॉ का माध्यम हो गया हू और अपने विरोध के जरिए अपने इतिहास को उस निश्चित बिंदु पर अपने लिए नियत उस नैतिक भूमिका का अदा कर रहा हू ।"

"उस वक्त मुझे कतई साफ साफ महसूस हुआ था कि मेरे अदर एक आत्मा है ।"

वल्लभ सिद्धाथ की कहानी 'ब्लैक-आउट' कहानी के 'जीनियस' म उस क्षण विद्रोह उत्पन्न होता है । भारत म आपातकाल के दौरान एक भयानक स्थिति म एक तरफ नेता और 'खाकी मददावर' दूसरी तरफ मैं (बुद्धिजीवी, आइडियोलाजी से प्रतिबद्ध ही इज एनीवडीज फैला ट्रेवलर) और जीनियस बीच म लटके भारतीय निरीह जन के प्रतीक शिवदयाल और उसकी पत्नी चपा य आमन सामन हैं, एक चीख (चपा के रेप) के ठीक नीचे ।"

"वह एक घुटी हुई मगर तेज, धारदार और चमचमाती हुई आवाज थी । अपनी सम्पूर्ण दहशत और नफरत और प्रतिकार के साथ अपनी असहायता म खिची हुई, जैसे कि किसी बबर आततायी द्वारा अपने प्रतिरोध को पूरी हिंसा से कुचल सकती है ।"

इसके साथ साथ वल्लभ सिद्धाथ की अन्य कहानिया म भी राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक विसगतिया चित्रित हुई हैं, जिसमे व्यक्ति की आत्मा की तलाश है ।

इसक अतिरिक्त भारतीय परिवश म जीवन जीन की कठिनाई भी नई कहानी मे उभर कर आयी है । यह कठिनाई किसी भी स्तर पर हो सकती है । राजी सेठ की कहानियो मे यह तकलीफ उभर कर आयी है । राजी सेठ के दोनो कहानी सग्रहो 'अधे मोड स आग' और 'तीसरी हथली' म इस प्रकार की तकलीफो को उठाया गया है, उन्हे सहेजने का प्रयास किया गया है। विशेषकर ऐसी तकलीफो का रखाकन किया गया है जो दिखाई नही देती । जस कि मृत्यु की प्रतीक्षा करते-करते बूढे व्यक्ति की खिडकी से दिखते आकाश के हिस्से का सामन की उठी इमारत से लुप जाना, घर के बडे लडके का मत पिता की जगह लेना, नारी की एक पुरुष के मन की हिंसाओ और दूसर तन की हिंसाओ के बीच होने की यातना, नयी पीढी और पुरानी पीढी के अलग अलग इतिहास, मा और पिता के अलग-अलग दायर, प्रेम के बीच ठडापन, मा की अपनी प्राइवेट सबधो की दुनिया, बूढे की साथिन की मौत आदि इत्यादि । इन सब की एक ही समस्या है—वह है जीन की समस्या । यह एक आम समस्या है, जिससे राजी सेठ का जीवन जुड गया है । यह तकलीफ भारतीय परिवेश की तकलीफ है, जिससे जुडकर भारतीय व्यक्ति को जीना होता है ।

यह तकलीफ वहा वहा है, जहा भारतीयता सास लेने को छटपटाती है ।

वहीं मे बाप की मौत पर बड़े लड़के का उनकी जगह लेने का अहसास, 'अनावत कौन,' म नवविवाहिता का श्वसुर के लेने आने पर फिर से ससुराल चले जाना। श्वसुर का कहना "चल बेटी चल। घर खाने को दौड़ता है घर मे प्रकाश ही तो नहीं है न!" 'गलत हाता पचतत्र' मे स्वत्व को बचाने के छदम के स्वीकार मे भी यह भारतीयिता सामने आयी है। लखिका ने जीवन जीन की तकलीफ को समझन और व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। राजी सठ की ही 'तीसरी हवेली' कहानी में समय या ठडेपन की स्वीकारोक्ति "ऐसी भीगी बरसात मे समय की छतरी के नीचे उसने क्षण भर अपने को सुरक्षित महसूस किया, एकदम निद्वन्द्व।"

कहानी 'मरे लिए नहीं', मे भी यह स्वीकार है—खुशी किसी एक ही रास्ते से नहीं आती——जिन्दगी मरे लिए किसी एक बिन्दु पर खत्म नही हो जाती।

'किसका इतिहास' मे भी पिता द्वारा लडके के इतिहास का स्वीकार, 'दूसरी ओर', मे मा से बात करन की तैयारी य अलग 2 तरह के अन्त, बाहर से पाजेटिव दिखते हुए भी निगेटिव लगते हैं और फिर भी एक ही स्वर म बोलते हैं—फिर यह स्वीकार, चाहे समय का हो या इतिहास का, वयक्तिकता का हो या जीवन के न्याय का।

'अनावृत कौन' म यह घर वहा यह वाकई जीने की तकलीफ को पाटता हुआ सा आता है, पर अक्सर ही यह स्वीकार व्यक्ति के अकेलेपन का है और उस हालत मे जीन की तकलीफ का एक हताशा, त्रासदी या मानव जाति की नियति मे बदल देता है। यह स्थिति उनकी 'एक बडी घटना' तथा 'तीसरी हवेली' और 'पुन वही म देखा जा सकता है।

इनकी कहानियों मे सवेदना का आधिक्य है—यह एक ऐसा गुण है जो मिलना दुलभ है। सवेदना और समझ का यह गठबन्धन जिस परिष्कृत भाषा मे उभर कर सामन आया है, जिसे हर वाक्य म देखा जा सकता है। इस विशिष्टता के लिए वह प्रयत्न तो नही करती, हो जाती हैं। 'समझ' म—"समझ हमेशा काम की हो——यह जरूरी नही। गनीमत कि राजी अभी इस प्रकार की 'समझ से दूर है और सजग भी।' "जीवन अपनी खाली फलाय उस मीठी तोतली आवाज और आखा म निश्छल चमक लिए सौंदय बिखेरन को तत्पर खडा रहा। मेरा बधिर मन उन क्षणा को खोजन मे व्यस्त रहा जो सौंदय की रचना कर सकें। मैंन उन सब क्षणा को, अवसरो का दरवाजे से ही लौटा दिया जो जीवन और जीवन क सौन्य को देखने और रचने के माध्यम थ। यह उदाहरण राजी सेठ की ही कहानी 'गलत होता पचतत्र' स है जिसम उनकी लखकीय समझ स्पष्ट रूप मे सामने आती है। उनकी कहानियो का सार 'मेरे लिए नही में स्पष्ट होता है—"कसे बताया जाय कि पीडा का दश जब

छू लेता है तो खील-2 हो जाता है। सब कुछ कोई जीवन दर्शन नहीं उभरता किरणें जाल समेट लेती हैं खुल जाते हैं सारे टाके कच्चा घाव टीसता है कही भीतर। इस दशन मे कहा है जीवन दशन। टूटना है बस टूटना सपनो अपेक्षाओ का टूटना।"

हर कहानीकार का एक दृष्टिकोण और जीवन दशन होता है और इसी के अनुकूल वह अपनी कहानियों में जीवन-मूल्या का भी चित्रित करता है। बिना जीवन-दशन के और जीवन मूल्यो के कल्पना को छोड कर किसी भी प्रकार का सजन सभव नही है। और फिर समकालीन कहानी—"आज की कहानी तो सामयिक सीमाओ के अतगत अपने यथाथ युग समग्र और परिवेश को मूल्याकित करन की प्रक्रिया है जो यथाथ या उचित सन्दर्भो म अधिक सप्राणता के साथ अभिव्यक्ति देने के प्रयत्न करने की स्पष्ट घोषणा करती है।'

कहानीकार समकालीन समाज का दृष्टा होता है और यथाथ का ही कहानी म उतारता है और अधिक कहा जाय तो कहानीकार सचेत भोगी भी है। वह सिफ कहानी लिखता ही नही, उसे जीता भी है। इसलिए नयी कहानी म झेलना और भोगना और फिर चित्रित करना अधिक महत्वपूण है। इसलिए यथाथ से हट कर आज के लेखन का कोई अलग दशन नही हो सकता।

आज कहानीकार का जीवन एक सघष स भरा पूरा रहता है। एक सामान्य व्यक्ति के रूप मे वह निराशाओ से उबलता और समकालीन परिवेश की परिस्थितियो से सघष करता है। वह अनेक असफलताओ को विसगतिया और उपेक्षा को झेल कर भी नित एक न एक नये कहानी ससार की रचना करता रहता है, एक सामान्य सामाजिक उत्तरदायित्व को निबाहता है।

नयी कहानी के कहानीकार की दष्टि जीवन की यथाथ अनुभूमि पर केन्द्रित रही है और उसी को वह प्रामाणिक परिवेश मे प्रस्तुत भी करती है। आज की कहानी पहले की तरह 'फाम ला' नही रही बल्कि वह अब प्रतिदिन बदलते हुए भाव-बोध के अन्वेषण और प्रश्नो की प्रक्रिया के रूप मे सामने आ रही है। इन हताशाओ और निराशाओ के दौर को झेलते हुए नयी कहानी के कहानीकार को जीवन दशन' शब्द सचमुच एक बोझ सा लगता है और वह इस शब्द को प्रयोग करने से भी हिचकता है। किसी भी प्रकार का दष्टिकोण जो कहानीकार को प्रभावित कर जाये और उसकी अनुभूति मे समा जाये उसे ही वह नयी कहानी के रूप म चित्रित कर देता है। वह उसे अनुभव की आग म तपा कर प्रमाणित करता है। कभी इस अनुभव को वह विद्रोह रूप मे, व्यग्यात्मक रूप म और कहीं उदासी के रूप मे, और कभी सरलता, सहजता से प्रस्तुत करता है।

नयी कहानी के कहानीकार को त्रासदियो ने जैसा सूक्ष्मदर्शी और संवेदनशील बना दिया है, ऐसा पहले तो नही था । कितने ही हादसो और निराशाओ ने उसे हर बार यथार्थ के तट पर ला कर पटक दिया है और कहा है कि इन आदर्शों, सिद्धांतों की भीड मे कुछ नही रखा, इनमे खुद को गुम करने से कोई लाभ नही है।इसलिए इस धक्के से भयभीत हो कर और किसी प्रकार के छल कपट का शिकार नहीं बनना चहता । अगर आज आदमी थक टूट रहा है, हार रहा है, नीच है, ओछा है तो इसमे सकुचाने की कोई जरूरत नही है और फिर इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता भी तो नही है। इसलिए उसने इन्ही सब कमजोरियो को बेकार की हैंकी पैंकी को छोड कर स्पष्ट रूप से प्रामाणित रूप से प्रस्तुत कर दिया । वह तो केवल उस वतमान को ही अहमियत देता है जो परिवेश और व्यक्ति के लिए अविभाज्य अग बन चुका है । जीवन को इस रूप मे प्रस्तुत करना ही आज की कहानी का कथ्य बन गयी है। परिवेश व्यक्ति जीवन को इनके भीतर से उभारने वाली सच्चाई के रूप म कहानी की वतमान स्थिति कहानीकार की जीवन दृष्टि के मनोविज्ञान से अत्यत प्रभावित होने के कारण आई है ।

नई कहानी मे उपस्थित अस्तित्व का सकट, व्यक्ति की जिजीविषा भी मनोविज्ञान की अतिशय प्रभाव समानता के कारण ही आई है । जीवन की सम्पूर्णता का वणन और व्यक्ति का उसकी सम्पूर्णता म चित्रण करने की प्रवृत्ति उसकी जीवन दृष्टि की मनोविज्ञान की निकटता की ही पुष्टि होती है ।

स्त्री पुरुष के नवीन सम्बन्धों की वैज्ञानिकता को भी नयी कहानी का विषय बनाया गया है । लेकिन इससे पहले के कहानीकार के मस्तिष्क म यह सबध केवल पति पत्नी और प्रेमी प्रेमिका के रूप म ही स्थापित था । यह सौ प्रतिशत परिवेश का प्रभाव था क्योंकि यह घर की सीमा रेखा में बधी नारी के साथ पुरुष के सम्बन्ध इसी स्तर पर सीमित थे । उस समय नारी को स्वतन्त्रता ही कितनी मिल पायी थी । उसे तो पुरुष के व्यक्तित्व का ही एक अग समझा जाता रहा ।

लेकिन जस 2समय गुजरा नारी म भी अपने व्यक्तित्व के प्रति चेतना उत्पन्न हुई । उसने भी अपने लिए एक समानता की माग उठाई । सदा से ही नारी पर शासन करता आया पुरुष जिसे कि 'न' सुनने की आदत ही नही थी, उसके भी प्रस्तावो को उसने नकार दिया । उसने सम्मानित जीवन और पुरुष के बराबर अधिकारो की माग करके समानता पर आकर नयी सम्बन्ध स्वीकारना ही स्वीकार किया । इन परिस्थितियो के पलटते स्थिति यह हो गई कि लडके लडकियो से जिस प्रकार के प्रेम सबध की आशा रख रहे थे लडकियो ने उसे केवल उनके सबध म 'पिक्चर पोस्टकार्ड' भेजने के औपचारिक सबध तक ही सीमित रख रही हैं, इससे पुरुष के हाथ घोर निराशा

ही लगी है। उसे शायद इस बात पर विश्वास ही नही हो रहा था कि सैक्स की पुडिया कही जाने वाली स्त्री अपने एकाकीपन को भूलने के लिए एक पुरुष की केवल मित्र बन कर भी आ सकती है। राजेन्द्र यादव की कहानी 'एक खुली हुई सांझ', का शिवेन आश्चर्य चकित रह जाता है जब मधु अपने पति से उसका परिचय कराती है—"य मेरे हस्बैड हैं और आप आप मेरे मित्र ।" उसे लगता है उसने यह शब्द कभी पहले सुन ही नहीं थे।

इस प्रकार धीरे धीरे पुरुष ने नारी से इस मैत्री सम्बन्ध को झेल लिया। लेकिन रूढ़िवादी परिवार तो इसमे अब भी काम सबधो की ही कल्पना करते हैं इसके अभाव मे वह इस सबध का होना वे स्वीकार ही नही कर पाते।

मोहन राकेश और मन्नू भंडारी के कथा ससार में स्त्री पुरुष सम्बन्ध विशुद्ध सामाजिकता म उभर हैं। मन्नू भंडारी की 'तीसरा आदमी' के शकुन और आलोक का सम्बन्ध विशुद्ध एक लेखक और पाठक का है। लेकिन उनके वार्तालाप और व्यवहार मे इतनी आत्मीयता है कि शकुन का पति इस सबध को स देह की दृष्टि से देखता है। उसके भी मन मे एक शका है। मोहन राकेश की कहानी 'अपरिचित' के यात्री स्त्री पुरुष जीवन यात्री सहयात्री न होते हुए भी सहयात्री हैं, अनुभूति और विचारो के स्तर पर। व बडी ही आत्मीयता से एक दूसरे को अपने विवाह की असफलता के दद को सुनाते हैं। अन्त मे कहानी मे जब पुरुष सो जाता है तो स्त्री उस पर अपना कम्बल उठा कर डाल देती है और पुरुष को लगता है, इससे ऊष्मा प्राप्त हो रही है। लेकिन यह ऊष्मा और ताप काम सबधो से उत्पन्न नही हुआ बल्कि विचारो और अनुभूति के स्तर पर प्राप्त की हुई गर्मी से उत्पन्न हुआ है।

मोहन राकेश की ही कहानी मिसपाल' की मिस पाल और रणधीर का सबध एक ही जगह काम करने वाले सहकर्मी अर्थात 'कुलीग' का है। मिस पाल रणधीर को अपने दु खपूर्ण सवेदनाओ का आभास देती है। बास के रूप मे नारी का चित्रण भी इन कहानियो मे हुआ है।

परिवर्तित होते परिवेश के साथ ही स्त्री पुरुष के बदलते प्रेम सबधो का भी कहानीकार ने मनोवैज्ञानिक ढग से अन्वेषण किया है। प्रेम म असफलता और विवशता ने मनुष्य को सदैव ही मनस्तापी बना दिया है। जब व्यक्ति को प्रेम मे सफलता नही मिल पाती तो वह मन की बाधा बन जाती है। इस प्रकार भावुकता मे आकर वह अपने जीवन मे सदा के लिए आजीवन कुआरी रहने का व्रत धारण कर लेती है। विशेषकर नारी क्योकि वह अधिक सवेदनशील और भावुक है। ढलती हुई उम्र उसकी अक्षमता और अभाव को गहराती है। राजेन्द्र यादव की प्रतीक्षा' की गीता 'खुले पख, टूटे डैने' की मीनल और निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' की लतिका इसी दुखद स्थिति को भोग रही हैं। लेकिन आज प्रेम के मूल्य बदल गये हैं इसलिए किसी से प्रेम

करती हुई नारी और कही विवाह करने को तैयार हो जाती है उसका स्पष्टीकरण है कि प्रेम की किशोर अनुभूति के लिए अपनी जिन्दगी को होम करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

अतत देखा जाय तो स्त्री पुरुष के बदलते नये सामाजिक सबधो और व्यक्तिगत सबधो पर दोनो ही स्तरो को समकालीन कहानी ने रेखाकित किया है। यह रखाकन मनोवज्ञानिक सतह पर है।

पुरानी कहानी मे जहा विचारो का प्राधान्य रहता था वही आज नयी कहानी म वातावरण प्रमुख हो गया है। आज समकालीन कहानी मे वातावरण का अपना एक अलग विशिष्ट स्थान है। वातावरण ने भी कहानी मे अपने लिए एक विशेष जगह बना ली है। वह कहानी का एक अग बन चुका है। नयी कहानी म वातावरण की विशेष प्रस्तुति है।

वातावरण की प्रस्तुति म आज कहानी देश काल से भी अधिक परिवेश की ओर पहले से अधिक सजग हुई है। विशेषकर उन कहानियो मे तो और भी यह सत्य दिखाई देता है जो वैयक्तिकता को लेकर लिखी गयी हो। यही सत्य अब सामाजिक कहानियों म भी परिलक्षित होन लगा है। इसका विशेष कारण है कि—"आज की कहानी कला प्राय व्यक्ति के चरित्र के धरातल से निर्मित होकर अपने वास्तविक स्वरूप मे मनोवैज्ञानिकता की ओर उन्मुख हो रही है। इसीलिए परिस्थिति चित्रण पर अधिक बल दिया जाता है, देश काल पर कम।"

इस प्रकार समकालीन कहानी म वातावरण परिकल्पना का अर्थ और स्वरूप ही एकदम भिन्न हो गया है। यह केवल देश काल और परिवेश न होकर व्यक्ति की चतुर्दिक परिधि बन गया है। जिससे प्रतीत होता है कि आज का कहानीकार मनोविज्ञान की परिवेश कल्पना मे प्रभावित हुआ। है परिस्थितिया एक ओर तो व्यक्ति के विचारो और कार्यों को प्रभावित करती है, दूसरी ओर उनके प्रभाव स्वरूप अपनी प्रकृति भी बदलती है। यह परिवर्तित होता परिवेश अगली पीढी के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया मे भागी होता है। इसलिए परिवेश व्यक्ति की बाह्य सामाजिक स्थिति, शिक्षा और सस्कारो से जुडा होता है। यही उसके व्यक्तित्व निर्माण म सहायक होते हैं। समकालीन कहानी परिवेश के बीच व्यक्ति के मूल्याकन का प्रयास करती है। इसीलिए जीवन मे परिवेश की कल्पना और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

समकालीन कहानियो मे रेखाकित 'वातावरण' अपने साथ जीने वाले चरित्रा के कटु मदु अनुभवो का सहयोगी है। यह सिर्फ उद्दीपन के लिए ही नही है। नयी कहानी का नायक जब अपने कमरे की खिडकी से दूर दूर तक फैला हुआ मैदान, पतझड मे जमीन

से लिपटी हुई अजीब सुगन्धि बिखरते हुए यूकिलप्टस के पेड और शाम को साय-साय करता हुआ सन्नाटा देखा करता है। तो मानो बाहर फैले हुए वातावरण के दृश्य पट पर अपने को स्थापित करना चाहता है। और उसे अपनी अनुभूतियों का भोक्ता बनाना चाहता है। आपस मे गुथ गुथ कर घुल घुल कर घाटियो मे भरते तथा फिर वृक्षों, छतो, बालकनियो से उतर कर खिडकियो के शीशो पर गीली भाप बन कर छा जाते हैं बादल व्यथित हृदय की आन्तरिक घुटन और गीली पीडा के सहयोगी हैं— "हवा तेज़ हो आई है, बादल एक दूसरे म गुथते हुए नीचे उतर कर घाटियो मे भरने लगे थे। अब तो वे लम्बे लम्बे फैलते एक एक देवदार के ऊपर से होते हुए बढ आय हैं। लाल पीली छतो से तैरते मकानों, खिड़कियों, बारजो, बालकनियो मे भी घुसने लगे हैं। बस जहा निशा का पलग था उसी खिडकी के बन्द शीशो के पास टहलने लग हैं। उन झाकते बादलो की गीली भाप कैसे शीशो पर झलक आई है।" नरेश मेहता की कहानी 'निशाऽऽजी' कहानी से ली गयी यह पक्तिया निशा की मत्यु के बाद उसकी मा गौरा की मन स्थिति के साथ जुडी हुई है, जिसमे उसका साथ प्रकृति ने दिया है।

नयी कहानी मे वातावरण कही मन स्थिति का सहजीवी बनता है तो कही अनुभवों का। मोहन राकेश की कहानी म प्रकाश की मानसिक स्थिति का चित्रण कथानक के अनुरूप ही है। अपनी पत्नी के साथ सबध विच्छेद होने पर तथा दूसरे विवाह से भी प्राप्त असफलता, पत्नी की विक्षिप्तावस्था के कारण उसे भी लगता है कि वह पागल हो गया है।

"उठते बठते, खाते पीते, प्रकाश के सामने निर्मला के तरह तरह के रूप आते रहते और उसका मन एक अधे कुए म गिरने लगता। रास्ते म चलते हुए उसके चारो तरफ एक शून्य सा घिर आता और वह कई बार भौचक्का सा सडक के किनारे खडा हो कर सोचने लगता वह घर से क्यो आया है? और कहा जा रहा है? उसका किसी से भी मिलने और कही भी आने जाने का मन नही होता। उसका मन जिस शून्य मे भटकता रहता उसमे कई बार उसे एक बच्चे की किलकारिया सुनाई देने लगती और वह बिल्कुल जड होकर एक ही जगह खडा या बठा रहता।"

बस यदि देखा जाये तो सृष्टि के मूल मे 'काम' ही की प्रधानता है। 'काम जीवन और साहित्य का आभूषण है। लेकिन काम की अति प्रभु सत्ता स्वीकार कर जीवन और साहित्य म नई क्रान्ति का सेहरा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिगमण्ड फ्रायड के सिर बधा है। उनके ही सिद्धान्तो का प्रतिफल है कि आज काम को मनुष्य-जीवन मे प्रमुख जैविक और मानसिक प्रेरक के रूप मे स्वीकारा जाने लगा है। जीवन के स्वस्थ विकास

के लिए काम के विषय में गोपनीयता और सकोच आदि को तिलाजलि दी जा रही है।

हिन्दी म समकालीन कहानी ने भी काम के क्षेत्र मे इस नव्य चेतना को अपने कथ्य का आधार बनाया है।

आज कहानी म काम सबधी चर्चा रहस्यपूर्ण ढग से या चोरी छुपे न करके बिना किसी सकोच अन्य विचारो की तरह निर्बन्ध रूप मे हुआ है। पार्क, रेस्तरा म मिलने वाले अपरिचित स्त्री पुरुष भी इन विषयो पर खुलकर नि सकोच बात करते हैं। स्त्री पुरुष बिना किसी हिचक के इस विषय पर बहस करते हैं।

स्त्री (मधु) शिवेन (पुरुष) के सामने बिना सकोच के कहती है कि एक दिन उसने हुगली के किनारे तटस्थ भाव से सम्भोग दृश्य देखा था। वह कहती है—"बाकायदा सम्भोग हो रहा था। मैं दर तक देखती रही। मुझे कुछ भी नही लगा। इस प्रकार नारी मे भी अब काम सम्बन्धी छुई मुई वाली लाज अब नही रही। पुरुष का अब अपने मित्र की पत्नी से परिवार नियोजन के सन्दर्भ म बात करने म कोई भी सकोच नही होता।" "प्रबोध ने मेरी ओर ध्यान से देखा, तुम लोग तो अब सावधान रहते हो न ? आज कल इस डा न रेट बढा दिए हैं। पिछले हफ्ते हम डेढ हजार देना पडा कैसी अजीब बात है महीना सावधान रहा और एक दिन के आलस्य मे डेढ हजार रुपये निकल जाये हमने एक और आसान तरीका ढूढा है। लीना इन्हें जरा पैकेट दिखाना बस ध्यान देने की बात है कि एक दिन भी भूलना नही चाहिये नही तो सारा कास डिस्टर्ब हो जाता है। नौकर जब शाम को चाय ट्रे में लाता है, तो मैं तभी गोली टे मे रख देता हू।"

अपरिचित लोगों और मित्र की पत्नी के साथ काम विषय इतना अनावृत्त हो गया है तो फिर दम्पत्ति के बीच इस सकोच का क्या काम। पति अपनी पत्नी से कहता है— 'अगर तुम मुझे एक प्याला चाय दे दो तो मैं अपने को ओटाइटिस और तुम्हे प्रेगनेन्ट होने मे बचा लूगा।' इस प्रकार के यौन सन्दर्भ अब स्वस्थ रूप म ग्रहण किए जाने लगे हैं।

यौन जीवन अब केवल विवाहोपरान्त ही नही रह गया है। कुमारिया अब इसे विवाह से पहले ही प्रेम की आड म अपना रही हैं। राजेन्द्र यादव की कहानी 'प्रतीक्षा' की नन्दा को हप ने पहले ही बता दिया है कि उसकी शादी हो चुकी है और एम०काम० के बाद बाकी रस्मे हो जायेंगी। परन्तु नन्दा का यह कहना कि—"मैं तुम्हे शादी के लिए प्यार नहीं करती, अब तो हप के एक बच्चा भी है लेकिन उस अर्पित नन्दा को लगता ही नहीं है कि हप अपना नहीं है। इसलिए यह जानकर भी हप

विवाहित होने के कारण आजीवन प्यार नहीं निभा पायेगा और उसे प्यार किए जाती है।

आज साहित्य म भी राजनीति को घसीटा जा रहा है या कहना चाहिये कि जबरन्ती घुस आई है। भला साहित्य मे राजनीति का क्या काम ? लेकिन नही साहब ऐसा कैसे हो सकता है आज जरा साहित्यकारो के खेमो मे जाइये और जरा गहराई से अध्ययन करें तो पता लगेगा कि इनम आपस मे ही इतनी गुटबाजी और उखाड पछाड है कि देख कर मन घिना जाता है। हर कोई अपने 2 पक्ष को श्रेष्ठ बताता हुआ अड बड बयान देता है, गोया साहित्य न हुआ, कुश्ती का अखाडा हो गया कि आओ मिया दखें तो कितने दावपेंच सीखे हैं। हर कोई स्वय को कभी किसी वाद का प्रवतक और प्रतिष्ठाता बताने पर तुला हुआ है। यहा तक कि जूनियर और सीनियर का भी झगडा मचा रहता है और साहित्यिक सभाओ मे इस बात पर मुह फुला लिया जाता है कि फला तो हमस इतना जूनियर है और उसे बाद मे मौका दिया गया। अरे भई, साहित्य ही तो है, जैसा लिखोगे, पढोग, जनता, श्रोता के सामने ही आयेगा और दशक श्रोता आज बहुत जागरूक हैं उन्हे इन सब बेकार के पचडो म कोई दिलचस्पी नहीं है सिवाय अच्छा साहित्य पढने के। चलिए साहित्यकारो के आपस की गुटबाजी तो अलग रही आज साहित्यिक सभाओ और कायक्रमो म मत्री आदि को बुलाकर उनका प्रशस्तिगान होता है और बेचार साहित्यकार मुह उठाये सामने बैठे रहत हैं। क्या साहित्यकार इतना भी नही कर सकते कि इस सब का विरोध करें और ऐसे कायक्रमों मे जायें ही न। लकिन व सोचते हैं कि यह सब करने की जरूरत नही है, क्याकि हम लिख तो रहे ही है आज के आदमी को।

लेकिन यह ध्यान रखना होगा कि साहित्य रचना समाज के प्रति एक जिम्मदारी है। हम उस जिम्मेदारी को तभी निभा पायेग जब हम इन सब प्रवत्तियों से हट कर अपन लखन और व्यवहार के प्रति जागरूक होंगे।

समय के साथ 2 कहानी का ट्रेंड तो बदला ही भाषा मे भी बदलाव आया। इस बदलाव के विषय म कमलश्वर ने कहा है—"आदर्शों, सदशा, उपदेशो, आश्वासनो, धन्यवादो, रिश्तो, और प्रतिवादो आदि सभी की भाषा उसके लिए झूठी और बेमानी सिद्ध हो चुकी थी। जीवन की गति इतनी तीव्र और सवेदनो की उम्र इतनी क्षणिक हो गयी थी कि नय कहानीकार की समझ मे नही आता था कि वह जनता से किस भाषा म बात करे। प्रेम जसा शब्द इन बदली हुई स्थितिया मे प्रेम की अनुभूति नही देता। पिता आदरणीय और अनुभवी व्यक्ति का प्रतीक ही नही रहा। परम्परा गौरव की वस्तु ही नहीं रही। विश्वास अथहीन हो गया। बहन और भाई का रिश्ता 'राखी' का नही रह गया। औरत और आदमी का समपण का सबध ही बदल गया।" जीवन के सारे प्रतिमान ही बदल गये तो फिर भाषा का भी बदलना संभव और स्वाभाविक ही था।

उसमे भी पहली सी स्थिरता का अभाव उत्पन्न हो गया। इसलिए नये कहानीकर ने यथाथ को पहचाना तथा सामान्य व्यक्ति के जीवन को अपनी कहानियां का कथ्य बनाया। सामान्य व्यक्ति के जीवन से जब कथ्य उठाया गया तो फिर वहीं से भाषा का जुडना भी स्वाभाविक हो गया। इसलिए उन्होने जन सामान्य की साधारण बोलचाल की भाषा को ही अपनी अथपूण साकेतिकता और प्रतीको के माध्यम से सजन किया।

आज के सघषपूण, कठोर यथाथ जसे युग म व्यथ की सवेदनशीलता और अलकारो का मोह छूटता जा रहा है। इसलिए नये कहानीकार न युगानुरूप ही भाषा की कलात्मकता और अलकरण के प्रति विद्रोह जताया। उन्होंने अपन चारो ओर फैले परिवेश की भाषा को ही अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाया। कमलेश्वर की कहानी 'तीन दिन पहल की रात' म भाषा की सहजता के दशन होते है—नौजवानो की फिक्र आपको नही होनी चाहिये। उनके प्रति जो रूख आप लोगो यानी पुरानी पीढी का है, वह कितना निकम्मा और बोदा है, यह आप खुद ही जानते हैं। बड गलत पैमाने बना रखे है आप लोगो ने। आप युवको को उनकी पोशाक स जाचने है फला यह पहनता है इसलिए वह जिन्दगी म क्या कर सकता है अपनी साधना के लिए आज का नौजवान जिस मानसिक सघष से गुजर रहा है, वह कितना चिंतित है यह आपने नही देखा। आपन सडक से गुजरते गुजरते होटलो से आते ठहाके सुने हैं, लेकिन यह देखन की कभी कोशिश नही की कि सब ठहाको के बाद उनकी मेज पर कैसी उदासी छा जाती है कितनी ईमानदारी से वह सोचते हैं और छोटे बडे कामो मे लग जाते हैं। उनकी हसी आपको आवारागर्दी भरी लगती है, उनका सहज अल्हडपन सभ्यता की सीमा के बाहर दिखाई पडता है, उनका हसना बोलना, चलना फिरना, यहा तक कि उनकी रूचियो और मनोभावो से आप चिढते हैं, उदारता से बर्दाश्त नही कर पाते। यह कमी उनकी नही आपकी है यह आपकी पीढी का दृष्टिदोष है।

इस उदाहरण मे कमलेश्वर ने बिना किसी लागलपेट के, न तो मुहावरो का सहारा लिया है, न प्रतीको का प्रयोग किया है बल्कि बडी सहजता से युवा जीवन के विरोधाभास और उसको मापने वाली पुरानी पीढी के गलत मापको और युवा वग का रस आकलन से आक्रोश व्यक्त किया है। कुछ उदू शब्द फिक्र, रूख, खुद, कद बर्दाशत, गलत, नमूना जसे आ गय हैं उन्हें भरने का बलात प्रयास नही किया गया है, वे स्वाभाविक ही लगते हैं, उनमे कही भी अलकरण या कृत्रिमता की बू नही आती।

नये कहानीकार ने पुरानी भाषा के रूढिबद्ध प्रतिमानो को तोड कर युगानुरूप समस्याओं को अभिव्यक्त करने म मानवीय भाषा का प्रयोग किया। उसे नय प्रतिमानों से पूर्ण कर नव्य भाव-बोध के अनुरूप ढाला।

नई कहानी की भाषा की समझ मे आया कि हमे अपनी जीवन और अनुभूति को

लिखना चाहिये, हम वह लिखना चाहिये जो अब तक न लिखा गया हो, उसे अपने शब्दो द्वारा अभिव्यक्त करें।

आज समकालीन कहानी की भाषा एक नयी सवेदना से मुक्त है। यह सवेदना हर स्तर पर देखी जा सकती है, कही दृष्टि सवेदना के रूप मे, श्रवण सवेदना के रूप और कही स्पर्श सवेदना आदि के रूप मे। पुरानी कहानी की भाषा जब अभिव्यक्ति प्रदान करने मे अक्षम सिद्ध हो गयी हो तो नये कहानीकार को लगा कि यह भाषा तो मात्र शब्दजाल है इसलिए उसने लोक जीवन से भाषा का चयन कर एक नयी सवेदना से सुसज्जित कर उसे व्यापकत्व प्रदान किया।

फणीश्वर नाथ 'रेणु' की कहानी 'तीसरी कसम' मे ऐन्द्रिय सवेदना की झलक मिलती है। "हिरामन टिकटी पर खडी गाडी पर बैठ गया। उसने टप्पर म झाक कर देखा। एक बार इधर उधर हीराबाई के तकिये पर 'हाथ रख दिया'। फिर तकिय पर केहुनी डाल कर झुक गया, झुकता गया। खुशबू उसकी देह मे समा गई। तकिय के गिलाफ पर कढे फूलो को उगलियो से छूकर उसने 'सू घा' हाय रे हाय इतनी सुगन्ध ? हिरामन को लगा एक साथ पाच चिलम गाजा फू क कर वह उठा है। हीराबाई के छोटे आइने मे उसने अपना मुह देखा, आखें उसकी इतनी लाल क्यो हैं गाडी न सीटी दी। हिरामन को लगा उसके अन्दर से कोई आवाज निकलकर सीटी के साथ ऊपर की ओर चली गयी।—इ उ इ स्स। छि ई ई ई छनक।"

समकालीन कहानी न सवेदना का आश्रय लेकर व्यक्ति की मानसिक स्थिति को व्यक्त करने की क्षमता प्राप्त कर ली है। पानू खोलिया की कहानी 'दुश्मन' मे भगपत की मन स्थिति का बहुत ही जीवन्तता और कुशलता से चित्रण किया है। भगपत के बच्चे की अर्थाभाव के कारण इलाज न हो पाने के कारण मृत्यु हो गयी है जिसके कारण भगपत की मन स्थिति कुछ इस प्रकार की है—"पाव रुक गये थे भगपत के अर इस पारक मे तो परसा इतवार क दिन भी दो ढाई घटे गुजार उसने इसी फब्वारे के नीचे, आने की तो वह पहले भी शाम के टेम कभी कभी तफरी करने आ जाता है, जैसे दूसरे पचासो लाग आया करते हैं और आज भी आय हुए हैं, बीबी बच्चों के साथ, लेकिन पहले की बात दूसरी थी। छोडो उस। उस वक्त तो परसों का आना ही याद आ रहा है। परसा भी वह इसी तरह ठण्डी ठण्डी फुहारें छोड रहा था, लेकिन परसों की बात दूसरी थी, लेकिन अब परसो और आज मे कितनी दूरी आ गयी है। परसा इतवार को आया था ता वो घटा बनकर बेचैनी स उमडता घुमडता। उस दिन सास बहुत गरम थी – लू जैसी। मन बन्तरह धुक धुका रहा था। दो ढाई घटे पहाड हो गये थे जसे। किनार पर पटकी हुई ताजी मछली नही होती ? फड फड फडक-फडक ! और आज होठ तो बबात म भी खिच जाते है। हसी चाहे आय न आये।—आज, आज घटा बरस चुकी है र, रीता-रीता बादर आकाश मे लाश जसा

तैर रहा है। सास भी तो भगपत की एकदम ठण्डी निकस रही है। आज अन्दर की तपिश बुझ गयी है न ? तभी और मछली। फड़कना खत्म हो गया है उसका। आत्म ग्लानी और पश्चाताप से भगपत की चाल ढीली पड़ गयी। कलेजा कचोट उठा। दुश्मन कौन रे ? सजा कि भगपत ? अब तो गाली मत निकाल निर्मोही तू बाप है ? यही होता है बाप का दिल ? अरे निठुर, एक सवा डेढ रुपये के तेल तक का तूने बड़ा समझा उस दिन। याद है, कैसी गाली निकाली तूने—'मर जाय कमबख्त' ! कितना परेशान करने लगा है।" कितना परेशान किया रे उसने तुझे ? कौन सा खजाना लूट ले गया वह ? तेरे लिए वह नौकरी लेकर आया, नौकरी। याद है ? अपजस करता है अब तेरा क्या भला होगा।'

इस प्रकार समकालीन कहानी की भाषा ने व्यक्ति की मनोदशा को पढ कर नयी कहानी को एक नयी दिशा दी है। सबधो के सतु जितने कमजोर और खोखले होते गये भाषा ने उतनी ही गहराई म जा कर उस दीमक खाये जोड़ो को देखना शुरू कर दिया। भाषा ने उसकी नीव तक को बडी ही निकटता से देखा है। जिस प्रकार टूटते सबधो म निर्मोह और क्रूरता है उसी प्रकार भाषा ने भी इसका अनुकरण किया है। ऐसे स्थानो पर भाषा सहज और सरल होते हुए भी सारगर्भित और अर्थगर्भित है। उसम प्रयास कहीं भी दिखाई नही पडता।

आधुनिक जीवन के यथार्थ व्यक्तियो को जब नये कहानीकार ने चित्रित किया, तो उसके अनुरूप ही भाषा भी यथार्थपूर्ण और सहज ही रखी। उसम कही भी बनावट का नामोनिशान नही था। वह पात्र परिस्थिति और कथानक का ही अनुगमन करती है। जैसे निर्मल वर्मा की कहानी 'परिन्दे' म डा० मुकर्जी की भाषा, जो एक स्कूल मे पढाते हैं "मिस लतिका, हम आपको निमत्रण देने आ रहे थे। आज रात मेरे कमरे म एक छोटा सा कन्सर्ट होगा जिसम मि० ह्यूबर्ट शोपा और चाइकोव्स्की के कपोजीशन बजायेंगे और फिर क्रीम कॉफी पी जायगी। और उसके बाद अगर समय रहा, तो पिछले सात हमने जो गुनाह किए है, उन्ह हम सब मिलकर कन्फेस करेंगे।' इसी प्रकार उषा प्रियवदा की कहानी 'कोई नहीं' मे नमिता की भाषा भी पात्रानुकूल ही है। "नही, अब मैं भी नही रखती ? साल के साल बीतते चले हैं। स्पोर्टस, कन्वोकेशन, इम्तहान, छुट्टिया सभी नियमित रूप से होता रहता है। नोटस पीले पड जाते है फिर भी हम वही पढाये चले जाते हैं। इस जीवन म कोई गति नहीं बची। होस्टल से कभी कोई लडकी भाग गई। किसी लडके ने आत्महत्या कर ली, किसी अध्यापक को लेकर कोई स्कैंडल हो गया। यही हमारी जिन्दगी के हाईलाईटस बचे ह।" इस प्रकार दोनो ही उदाहरणो म मास्टर या प्राध्यापक द्वारा अंग्रेजी के शब्दो का प्रयोग करना सर्वथा सम्भावित और स्वाभाविक ही है।

इसी प्रकार आज के शिक्षित स्त्री पुरुष मे आजकल हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी मिश्रित

ाक्यो मे जो वार्तालाप होता है उसे सुदशन चोपडा न अपनी कहानी 'पैचा मे खूबी उभारा है—"सुहागरात को भी वे तनिक भावुक नही हुए (स्वय उन्ही के शब्दो म) गाया हम दा शरीर और हृदय न हाकर मात्र मस्तिष्क हो एडजस्टमट के हर पहलू पर विचार करते हुए हमने तलाक तक की सम्भावनाआ पर थड पसन की समस्या की तरह चर्चा की थी और तलाक लेने मे पड सकने वाली कानूनी दिक्कतो म से तक रास्ता खोज लिया था । उसी न सुझाया था—"इल्जाम लगा दूगी ।" मरे पति न नसबन्दी की बात शादी के वक्त मुझसे छुपाई थी और मैं बच्चा चाहती हू फिर थोडी देर बाद खुद का विकल्प सुझान लगी थी—"या तुम मुझ पर एडल्ट्री का आरोप लगा देना म स्वीकार कर लूगी ।" यहा तीन भाषाओ के शब्दो का प्रयोग किया गया है । हिन्दी शब्द—हृदय, मस्तिष्क, शरीर, सम्भावनाआ, विकल्प, आरोप, स्वीकार ।

अग्रेजी शब्द—एडजस्टमट, एडल्टी,

उदू शब्द—गोया, इल्जाम, कानूनी, दिक्कत,

इस प्रकार की भाषा के माध्यम मे स्त्री पुरुष के सबधो का खोखलापन भी चित्रित हुआ है । मानव इतना कठोर और भावना तथा सवदना शून्य हो गया है कि मधु यामिनी के क्षणा म भी उसके हृदय मे प्रेम जसी काई चीज जन्म नही लती ।

समकालीन कहानी की भाषा म अचल विशेष और भौगालिक परिवेश का भी बडा ही ध्यान रखा गया है । जस कि पूरब प्रात की कहानियो मे पूरबी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है । माकण्डेय की कहानी 'बीच के लोग म—"हुडदगी वहा बैठा था । ठठा कर हमा अब जलन म का होता है हरसू बडा सुराज सुराज चिल्लात फिरते थे, जब सुराज आवा तो काहे के पिराय रही है । यह तो समय जमाने की बात है । कभी गाडी नाव पर, कभी नाव गाडी पर । वेद सास्स झूठ थोडे ही कहता है कि कलयुग मे कलकी अवतार होगा, हरिजन बेद बाचगे और तुम्हारे जैस विप्र लत्तड की तरह दुवार दुवार घूमग ।' "कहो भाई वृझावन, बात ठीक कहता हू न । मैं तो तुम ही को आपन नेता मानता हू ।"

भीमसेन त्यागा की कहानी मे अधिकाशत हरियाणवी भाषा का प्रयोग है । उनकी कहानी 'खूटे' मे भी—"बिरादरी की रीत के अनुसार बचपन म ही उसका ब्याह हो गया, पर जिस कहते हैं ब्याह, वह कब हो सका ? कभी हो सकगा ? बापू ने बस पैसा देखा था बस पैसा । जटियो म ब्याह दी थी । चाम्मड की लौडिया गई जटियो के, पैसे के उप्पर । लम्बा चौडा कारखाना था चमडा कमाण का पर ब्याह कारखान से थाडा ई होवे ? ब्याह होवे है मरद मैं अर मरद वहा कहा था ? चूहा मरा हुआ । अरे वो उसका बाप । दारू पी के आया था । दारू ! नास हो तेरा जटिये । आख फूट गयी वो आख जो बेटे की जाह की

तर्के तक । तक अपनी मा कू धीक् । मैं तो चली आई थी अगले ई दिना आया फेर कई दफै लिवाणे कू । पर मैं वहा जाती तेर लियो ? आये हमे कारखानेदार ।

आधुनिक युग मे जिस प्रकार मानव उत्तरोतर हर दिशा म आगे बढ रहा है, वही उसने पाश्चात्य सस्कृति और भाषा की तरफ भी कदम बढाया है। इसलिए समकालीन कहानी के कहानीकार ने भी सामा य व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त किए गये अग्रेजी शब्दो का कहानी म ज्यो का त्यो नि सकोच उठा लिया है और उन्हे परिवेश के अनुरूप ही ढालने का सफल प्रयास किया है जो स्वाभाविक ता लगता ही है, आम आदमी के और निकट भी हो जाता है। राजेन्द्र यादव, निमल वर्मा, उपा प्रिय वदा, मन्नू भडारी, श्रीकात वमा, ज्ञान प्रकाश, प्रयाग शुक्ल, ममता कालिया, अविता अग्रवाल, गिरिराज किशोर, मणाल पाडे आदि की कहानियो मे अग्रेजी भाषा का नि सकोच प्रयोग किया गया है। मणाल पाडे की कहानी 'हमसफर' म—"तभी तो कहते हैं कि एडजस्ट कर लो' लम्बा गरगराया। फिर वह और नाटा जोरो से हसने लगे। जैसे भारी मजाक किया हो। बडी गर्मी है, "बडी गर्मी ह' लम्ब ने काच ऊपर किया, हवा अभी भी उमस भरी थी, पखा बन्द था। अबके अपुन एक बडा फिरिज ले लेंगे नाटे ने कहा, बीयर जो है, जो उसके बिना ठण्डी नही होती।"

इसी प्रकार निमल वर्मा की कहानी 'लदन की एक रात' म—"इट इज आल राइट" मैंने उसका हाथ क धे से अलग कर दिया तथा—जैसे मैं आखिर तक अपनी टागो को इसी तरह हवा मे घुमाता रहू। "ओह डियर हाउ फनी इट इज। हाउ फनी! तथा दयर इज रियल लाइफ। हर कोने पर जवान लडकिया खडी रहती हैं विली ने कहा।' इस प्रकार निमल वर्मा की कहानियो मे तो पूरे वाक्य ही अग्रेजी म होते हैं।

निमल वर्मा शिक्षित पात्रो के वार्तालाप मे अग्रेजी वाक्याशो का प्रयोग करते दीखते हैं। जैसे नेट अस सलीब्रेट टू नाइट, म बी यस मे बी नो, द वर लुकिंग लाइक सेन्स, हेल विद हर, डू दी स्टास टेल ? व्हाई डा ट यू बिलीव मी, आइ लव यू सा मच, इट विल बी वण्डरफुल, यू वा ट माइड रूनी विल यू ? सो दट दे ड डेड लार इन पीस, नाट इन दट वे, इट इज नाट गन" अपनी कहानिया म प्रयोग किया है।

ग्रामीण परिवेश को जीवन्त बनाने के लिए कहानीकार ने अग्रेजी क शब्दो को जिस प्रकार ग्रामीण परिवेश म रहने वाले बोलते हैं उसी प्रकार हूब-हू उतार दिया है—पोजीसन (पोजीशन) डिलबर (ड्राइवर) टरेन (ट्रेन) फिलिइस्टार (फिल्मस्टार) इगरजी (अग्रेजी)।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समकालीन कहानीकार ने भाषा की स्वाभाविकता बनाये रखने के लिए और परिवेश मध्य की स्वाभाविकता को बनाये रखने के

लिए अंग्रेजी के विकृत शब्दों का भी सहारा लिया है। इससे कहानी अपना उददेश्य सफल बनाने म और भी सहायक सिद्ध हुई है।

समय परिवतन के साथ साथ जहा कहानियो का कथ्य परिवर्तित हुआ, वही शैली मे भी बदलाव आया। समकालीन कहानीकार ने कल्पना पर अधिक ध्यान न देकर यथाथ और अनुभव का अधिक महत्व प्रदान किया। कहानीकार ने ऐसी कोई भी शैली अपना ली है, जिसके द्वारा वह अपनी बात पाठका तक सरलता से पहुचा दे। इस प्रेषण प्रयास म उसने सस्मरण, पत्र डायरी, प्रतीक, निबन्ध, रेखाचित्र, व्यग्यात्मक शैलिया अपनायी है। वह एक ही शैली के खूटे से न बधते हुए विविधता की तलाश मे रहा है। कहानीकार कहानी लिखते समय अपनी शैली स्वय ही तय कर लेता है और फिर उसी का अनुगमन करते हुए अपने उददेश्य को स्पष्ट करने म सफल तो होता ही है वह भी अपन तथ्य के अनुरूप।

समकालीन कहानी की महत्ता इसलिए और भी अधिक बढ जाती है कि उसने विभिन्न प्रकार की शैलियो को मिश्रित करके कहानी का सृजन किया है।

निमल वर्मा ने अपनी कहानी 'परिन्दे' मे सस्मरण, सवाद, सगीत, और चित्र शली का मिश्रित रूप मे प्रयोग किया गया है, जिससे कहानी जीवन्त हो उठी है।

नान रजन की कहानी 'सम्बन्ध म नाटकीय शली का प्रयोग किया गया है। जिसम प्रतीत होता है कि कहानी का 'मैं' किसी के समक्ष कहानी का प्रस्तुतीकरण नाटकीय ढग से कर रहा है—"मैं बहुत प्रसन्न था। आज सुबह उठने के बाद से ही यह प्रसन्नता शुरू हो गयी थी। मुझे यह समझ नही आया कि आखिर इसका क्या कारण हो सकता है।'

"शायद आपको विश्वास ही नही हो रहा कि मैं दिन भर प्रस न रहा हू। पता नही आप इस तरीके से क्यो सोच रहे है कि एक हिन्दुस्तानी युवक का प्रसन्नता से किसी तरह का सम्पक भी हो सकता है।"

"यह कितना अविश्वसनीय लगता है कि दिन भर के बाद लौट कर ज्यो ही मैंने अपने घर की इमारत देखी मैं हताश हो गया।"

इस प्रकार कहानी मे निबन्ध जैसी विचारोत्तेजक शैली का भी आभास होता है। भीष्म साहनी की 'भटकती राख' म लोक कथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

कमलेश्वर की कहानी 'राजा निरबसिया' म भी लोक कथात्मक तथा समानान्तर चलती हुई कहानी मे सवादात्मक और पत्र शली का मिश्रण है।

लोक कथा और लोक सगीत का प्रयोग 'रेणु' की कहानियो मे हुआ। जिनमे रसप्रिया' और 'तीसरी कसम' प्रमुख हैं। 'तीसरी कसम' म गीतो की रचना होने के कारण लोक गीतो का आभास तो होता ही है साथ ही उसमे कविता के गुणों का भी समावेश हुआ है।

इसके अतिरिक्त कहानीकार ने नय स नय प्रयोग शली के नाम पर किए। दूधनाथ सिंह ने अपनी कहानी 'रीछ' म जिस प्रकार किया है जिसम पात्र पर पत्नी द्वारा प्रेम-सबधो का कही और का दोषारोपण किया जाता है। इस पर नायक हताश और जड सा रह जाता है और अपनी पत्नी के समीप लेटे-लेटे प्रेमिका की ममति हो आती है। "क्या बात है तुम बार बार घडी की ओर क्या देख रह हो? कोई नही आने का। क्या तुम डरते हो। घडी का मुह दीवार की तरफ । अब ठीक है? मुझे कोई डर नही है। आई फील सब्लाइम। क्या तुम जानते हो, उनके साथ मुझे कमा लगता है जैसे कोई रीछ मर ऊपर झूम रहा हो। उबकाई आने को होती है। तुम विश्वास नही करते तुम्हारे साथ? तुम तो एक बच्चे की मानिंद लेट जाते हो। इतने साफ्ट कोमल वह केवल मैं जानती ह माई चाइल्ड मेरे शिशु ।'

निष्कपत स्पष्ट होता है कि व्यक्ति को व्यक्ति के माध्यम से पहचानने के प्रयास मे नये कहानीकार ने नय नय प्रयोग शैली के स्तर पर किए हैं जिनमे व्यक्ति का अन्तद्वंद्व, मानसिक जटिलतायें, विकृतिया और न जाने कितनी बातें साफ स्पष्ट रूप मे उभर कर सामने आई है। कहानकारा ने व्यक्ति के आन्तरिक सघष का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है। व्यक्ति के मन की जटिल और सूक्ष्म स्थितिया नय प्रयोग स स्पष्ट की है।

समकालीन कहानिया म कहानीकार ने प्रतीका का सहारा भी लिया है जिसके माध्यम से वह अपनी बात और भी स्पष्ट रूप स पाठक के समक्ष ला सकें। प्रतीक वस भी अमूत की अभिव्यक्ति का सबसे सरल माध्यम है। जीवन के प्रवाह मे ही प्रतीको के भी अथ परिवर्तित होते रहते है। नई कहानी की भाषा मे प्रतीका का प्रयोग बहुलता स हुआ है यहा तक कि शीषक भी प्रतीकात्मक रखे गय।

कमलेश्वर कृत 'सीखचे' म सीखचे जहा पुरातन मा यताओ का आभास करात हैं वहीं वे बूढे होते हुए उनमे शक्ति है और अनुभव की गर्माहट है। 'नीली झील' मे झील जहा व्यक्ति सौ दय का प्रतीक है वही 'मास का दरिया' बढती वेश्यावत्ति और उसस उत्पन्न विकृतियो का प्रतीक है।

निमल वर्मा की 'परि द म जहा परि दे व्यक्ति के एकाकीपन और भय के प्रतीक हैं वही जलती झाडी' यौन का प्रतीक है। 'पिक्चर पोस्टकाड' सम्बन्धा के खोखलापन का प्रतीक है 'बीच बहस मे' पुरानी और नयी पीढी के बीच का प्रतीक बहस है।

उषा प्रियवन्दा की 'टिप नशे का प्रतीक है। कच्चे धाग व्यक्ति के जीवन म उन क्षणिक सबधो और स्वाथ स्वरूप क्षणिक आवेशा का प्रतीक है। 'जिन्दगी और गुलाब के फूल म कागज के फूल जीवन की गन्धहीनता और नीरसता के प्रतीक हैं।

मन्नू भंडारी की कहानी 'एक प्लेट सैलाब' का सैलाब जिन्दगी के यथार्थ का सैलाब है। यह सैलाब स्वप्नों को अपने साथ साथ बहा कर ले जाता है।

साहित्य, साहित्य की प्रकृति भाषा और चेतना युगीन परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नही रह सकती। इन्ही को समग्रता से इनकी विशेषताओ का ग्रहण कर के साहित्य आगे बढता रहता है, और इसी का अनुकरण समकालीन कहानी ने भी किया है। समकालीन कहानी जिसने कितने ही नये प्रयोग किये और आज अनेक सकटो से बचकर एक स्वतत्रता और समृद्धि के रूप मे देखी जाती है। इस कहानी के कहानीकारो ने नये नये दृष्टिकोण निर्धारित किए है।

आत्माभिव्यक्ति की प्रेरणा कहानी का मूल है। इसी आत्माभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्ति का जीवन दर्शन, चरित्र चित्रण, समाज मे फैले भ्रष्टाचार और व्यक्ति के जीवन मे उपजी विकृतिया और सदर्भ नयी कहानी के माध्यम से प्रकट हुए हैं। इसी आत्माभिव्यक्ति मे आज के व्यक्ति की पीडा और स्थितिया छिपी हुई है, फिर चाहे वे मानसिक स्तर पर हो, शारीरिक स्तर पर हो या जिन्दगी जीते हुए गाहे ब गाहे पेश आती हो। उन सभी का रेखाकन नयी कहानी या समकालीन कहानीकारो ने सशक्त रूप मे किया है।

समकालीन कहानी ने 'फार्मूला', जीवन को छोड कर युगीन परिवेश, यथार्थ जीवन और अनुभवो के अध्ययन का लक्ष्य रखा है। काम, प्रेम, ममता, साहचर्य और स्वतत्रता सभी मूल्यों को जाचा परखा है। आधुनिकताबोध, भय, पीडा, सत्रास, और मृत्युबोध की साहित्यिक सकल्पनाओ को भी समकालीन कहानी मे स्थान दिया है। 'नई कहानी' मे लिए गये सदर्भ सवेदना की समृद्धि दृष्टि की नवीनता और अनुभूति की गहरी पैठ यथार्थ के धरातल पर आकर परवान चढे है। कथ्य छोटे हैं लेकिन अपने आप मे एक विस्तार लिए हुए है जो ढूढने मे और भी गुम होता जाता है। लेकिन छोर हाथ मे अवश्य रहता है।

समकालीन कहानी का कथानक काम, अह, हीनता, सामाजिक वृत्ति मे सिमटा हुआ है। स्त्री पुरुष के नवीन सम्बन्धो, नवीन सैक्स चेतना जैसे विषयो पर भी कहानीकारो ने अपनी लेखनी चलाई है।

'समकालीन कहानी' मे कही न कही, कोई न कोई कहानी मे चरित्रगत रूढिया टूटी अवश्य है। इसके स्थान पर सहज और यथार्थ मे जीने वाला सामान्य व्यक्ति समकालीन कहानी मे आ गया। चरित्र चित्रण मे भी कहानीकार का उद्देश्य मनुष्य के अन्तर्मन को जानने का ही रहा।

जीवन के बदलाव मे पुरानी भाषा मे अभिव्यक्ति सामर्थ्य न पा कर नये कहानीकारो ने जन सामान्य की भाषा को अपनाया और उसमे प्रतीको और बिम्बो मे नया अर्थ उत्पन्न किया। उस भाषा मे आयु, शिक्षा और भौगोलिक परिवेश का

पूरा ध्यान रखा गया जिससे वह कृत्रिमता से बची रही और सहज और सरल रही मनुष्य के चरित्र से मेल खाती रही। अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग ने उसे और भी सहज बना दिया और कहीं विकृत अंग्रेजी के शब्दों ने।

जिस प्रकार नयी शैलियों का प्रयोग किया गया उसके द्वारा व्यक्ति को गहरे समझने में सामर्थ्य हासिल हुई।

समकालीन कहानी में परिवेश को अधिक महत्व दिया गया। पुराने सन्दर्भों को छोड़ कर नये नये सन्दर्भ उठाए गये। भीड़ में गुम हुए व्यक्ति को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी। विशेषकर ऐसे व्यक्ति का जो महानगर में अपना गांव, कस्बा ढूंढ रहा था। समकालीन कहानी की व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में देखा गया।

समकालीन कहानी का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पक्ष है—अलगाव बोध। यह अलगाव कहीं परिवार के स्तर पर व्याप्त है कहीं प्रेम सम्बन्धों में और कहीं दाम्पत्य सम्बन्धों में। इसीलिए नये कहानीकारों द्वारा इस पक्ष को उठाना उचित ही है। यह प्रयास सर्वप्रथम पारिवारिक स्तर पर किया गया। पारिवारिक स्तर से मेरा आशय, पिता पुत्र और पिता पुत्री के बीच उत्पन्न हुआ अलगाव बोध है, जहां रिश्ते गहरे होते हुए भी एक गहरी दरार छिपाए हैं। मां पिता और सन्तान का संबंध सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसी को कथ्य के रूप में फेरबदल करके दोहराया भी गया है। इससे यह अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है कि यह कहानियां लेखकों ने अपने अनुभव संसार से छांटी हैं। लेकिन इसमें कितना अंश व्यक्तिगत है यह कहना कठिन ही नहीं, आरोपित भी होगा। इन कहानियों में से कौन सा कथ्य ऐसा है जो पाठकों द्वारा अधिक स्वीकारा गया हो और किस भाव ने उनमें अधिक प्रतिक्रिया उत्पन्न की। मैंने उन्हीं तत्वों और कारणों को विशेष रूप से उठाया है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पारिवारिक संबंधों में दरार पैदा कर रहे हैं। ऐसे क्या कारण हैं और ऐसी कौन सी आशायें हैं जो परिवार के सम्बन्धों को तोड़ती मरोड़ती हैं।

राजेन्द्र यादव की कहानी 'भविष्य के आस पास मंडराता अतीत' पिता की दयनीय स्थिति की ओर संकेत करती है। अतीत में उसका अपनी पत्नी से अलगाव हो गया था और एक दुर्घटना के कारण वह कुरूप हो गया था। पिता के अपेक्षित भविष्य में उस बच्ची के साथ नये सिरे से सम्बन्ध स्थापित करना व अतीत को भूलने की आकांक्षा है। अपनी बच्ची से सम्बन्ध स्थापित करने की कामना है। उसे उम्मीद है कि बुलबुल कहानी के उस छोटे लड़के जैसी होगी जो फांसी के लिए जाते हुए पिता से दौड़ कर कहता है, "बापू तुमने कुछ नहीं किया, कुछ नहीं किया।" लेकिन आशंका यह भी है कि इस बीच शायद मां ने उसे पिता से घृणा करना न सिखा दिया

। पत्नी और पुत्री से इस व्यक्ति का अलगाव उसकी स्वयं की गलती का परिणाम

है। कहानी पिता की उस क्षण की मन स्थिति को अभिव्यक्त करती है जबकि वह स्कूल की लडकियो के साथ जाती अपने वेटी से भी बात करने का साहस नही कर पाता। कहानी का आशय समझौता करना नही वरन कुरूपता के कारण बच्ची मे वितष्णा का भय है जा ममयौत की राह म बाधक है।

निमल वर्मा की 'अधेरे म' का बच्ची अपने पिता स इस सीमा तक डरता है और उन्हें असयत बताता है क्योकि उमके पिता सबसे पहले उसके हाथो के नाखूनो का देखत हैं। इसलिए बच्ची झटपट अपन नाखून दाता से काट लेता है— "आखो को गील तौलिए से पोछ लेता हू और हाथो को मुह पर रखकर फूक मारता हू, और फिर उन्ह सू घता हू—यह दखने के लिए कि मुह साफ है या नही।" उसका कहना है— 'बाबू के सग जो सकाच और तनाव रहता है, वह मा के सग बिल्कुल नही रहता। पिना कभी न मिट सकन वाला अलगाव बनाये रखते है। लेकिन इस कहानी का आशय या उद्देश्य पिता पुत्र के अलगाव को दर्शाना नही, पारिवारिक स्थिति को उभारना है जिसमे मा बच्ची के चाचा से प्रेम करती है जिसके कारण तनाव की स्थिति बनी हुई है। पिता पुत्र म एक दूरी के होते हुए भी सम्ब ध सूत्र जुडा हुआ है—"मैं उससे डरता हू, कोई भी फरमाइश करते समय मेरा दिल धडकने लगता है, कभी खुलकर मैंने उनसे अपने मन की बात नही की—इसके बावजूद मुझे अपने अधिक निकट और पहचाने लगत हैं। कुछ एसा है, जो हम दानो को मा से अलग कर दता है, इसीलिए मा को चाहते हुए भी उन्हे दखकर कभी कभी मेरे भीतर कुछ रूआसा हो जाता है।" पिता पुत्र मे अलगाव होने के बावजूद अकेलेपन की अपनी-अपनी स्थितिया उन्हे आपस मे जोडती है।

राजकुमार की 'रिकाड मे पिता एक ऐसा बूढा व्यक्ति है जिसका अपने पुत्र से तनावपूण सम्ब ध रहा होगा, लेकिन कुछ वष बीत जाने पर भी दोनो मे वही अलगाव बना हुआ है। बूढे व्यक्ति के छोटे पुत्र की मत्यु हो चुकी है और वह सोचता है कि बडे लडके के घर आने पर वह उस सीने से चिपका लेगा, लेकिन ऐसा हो नही पाता। इतना अरसा दूर रहने पर भी दाना म दूरी और अजनबियत बनी रहती है।

उषा प्रियम्वदा की कहानी 'सुरग' मे भी यही स्थिति है, जिसमे पिता की मत्यु के बाद मा अपन आस पास अकेलेपन का घेरा इतना घना बुन लेती है कि अपनी पुत्रिया स एकदम अलग हा जाती है। इस अलगाव के कारण ही लडकिया सत्रस्त हो जाती हैं यहा तक कि बडी लडकी अपनी हाथ की नसें काट कर आत्महत्या तक का प्रयास कर डालती है। छोटी लडकी भी इस अलगाव और अकेलेपन के कारण अपन मन की भावनाओ को किसी का नही बता पाती और इस घुटन को रात के अधेरे मे [illegible] दूर करती है।

कमलेश्वर की कहानी 'पराया शहर' मे स्थिति अधिक गम्भीर और शोचनीय

है। कहानी म पिता अनतिकतापूर्ण कार्यों म ग्रस्त है। इस लज्जाजनक ममस्र कर पुत्र घर छोड देता है। मा की मत्यु के पश्चात पुत्र को लज्जा का अनुभव होता है न कि अपमान का। एक लडकी का भगा लान क बाद पिता अपनी बदनामी के चरम पर पहुच जाता है और पुलिस मे घिर मकान की छत से चिल्लाकर कहता है—"है कोई माई का लाल जो जमानत द द।" लडका आता है, लकिन डर और अकलपन के आसुओ क साथ अपना बस्ता लिए वह स्कूल की तरफ भाग जाता है।—"वे गलिया और उसका वह मकान उसके लिए सब पराय थ ।' पिता उस लडकी स विवाह कर लेता है तो यह घर भी उसके लिए अपना नही रह जाता। लज्जा का सहने मे असमथ हो कर वह जल्दी ही घर छोड कर चला जाता है क्योकि लोग यह कह कर उसकी तरफ उगली उठात हैं कि "उसी दुर्गादयाल का लडका है यह, उसी बदमाश का।" कहानी का मुख्य त त्र वह है जहा कि लडके को नए शहर म आकर अकलपन का अहसास होता है। इसी के विपरीत पिता का वक्तव्य है—"मुझे तुम्हारी जरूरत नही हैं, मर लिए सारी दुनिया पडी है। दस आदमी हैं जो मरा साथ देन को तैयार हैं। तुम्ह अगर हमारी बातें बर्दाश्त नही होती तो न हो। लकिन इसके बाद भी पिता अततत स्वय को एक पराय शहर म एराकी ही पाता है।

राजेन्द्र यादव की कहानी 'बिरादरी बाहर' म अलगाव पुत्री और पिता के बीच है कारण पुत्री का पिता की इच्छा क विरुद्ध नीची जाति म विवाह करना है। पिता पारस इसी कारणवश लज्जा का अनुभव करता है। पिता मन ही मन सोचता है कि वह बाजार स गुजर रहा है और लाग फब्तिया कसत हुए कह रह है—"इन्ही पारस बाबू की लडकी न गैर जात के लडके स शादी कर ली है।" पिता न इस शादी को स्थगित करने के इरादे स कहा—'मेरी लाश पर मालती की शादी होगी।" इस प्रकार विरोध प्रकट भी किया कि तु दिल के दौरे क कारण इससे आग कुछ नही कर पाय। दूसरे शहर मे सिविल मरिज हो गयी—"हा व तो नही मर, लकिन उस दिन मालती जरूर उनक लिए मर गयी।'

इस कहानी म अलगाव जो कि पिता पुत्री के बीच था वह मा क एक गभीर ऑपरेशन के समय एक अजीब सी मन स्थिति के रूप मे जा उभर कर सामन आता है। इस मौके पर मालती अपन पति के साथ आयी हुई है। अब समस्या यह है कि समझौत की पहल किसकी ओर स होगी। पिता की ओर से ? लेकिन पिता कुछ दुलमुल से पड जाते हैं जिसस परोक्ष रूप से तो यही लगता है कि उन्होन समझौता कर लिया है। क्योकि वे पिछली मजिल के एकात म से चुपके चुपके दामाद को दखत हैं और सोचते हैं पता नही, उसे ठीक से खिलाया पिलाया भी जा रहा है कि नही घर के बारे म उसका विचार क्या बना होगा ? "एक बार इस नय आदमी को दखें तो ही कि आखिर मालती ने इसमे ऐसा क्या पाया।'

इस परिस्थिति मे लडकी के घर आने स तो यह पता चलता है कि पिता के प्रति उसके मन मे कोई द्वेष नही है। वह पिता के स्वभाव से सुपरिचित है इसीलिए पिता के बडबडाने पर कि—"अगर मालती खाना लाई तो वे उसे फक देंगे।" इसलिए वह उनसे मिलने नीचे नही जाती। इस कहानी मे कुल मिला कर सारा दोष और दायित्व पुत्री पर नहीं है क्योकि आज का पाठक अतजातीय विवाह के पक्ष म अपन विचार देता है, इसलिए पिता का ही दायित्व है कि वह स्थिति को सुधारने की पहल कर। वरना इस पहल के अभाव म स्थिति सुधरन की अपेक्षा अलगाव को और बढावा ही देगी।

कमलेश्वर की कहानी 'तलाश' मे मा बेटी के बीच अलगाव और तनाव होते हुए भी स्थिति अधिक गभीर नहीं है, पुत्री का व्यवहार अपनी मा के प्रति स्नेहपूर्ण है। इस कहानी म लडकी 20 वर्षीया युवती है, इसलिए वह मा के सबधो से अच्छी तरह परिचित है। मा के तकिए पर किसी अन्य के सिर के निशान और ऐश ट्रे मे सिगरट की राख इस सबध को और भी स्पष्ट करते है। मा का एकाएक पूरी आस्तीन का ब्लाऊज पहनना तय करना, मेकअप से बाह पर पडे निशान को छिपाने की कोशिश करना, कालेज के काम से शहर जाने की बात करना और टक्सी म बैठे व्यक्ति के सिगरट की राख का बाहर गिरना, ये सब कारण मा के चरित्र को सदिग्ध बनाते हैं।

इतन पर भी बेटी अपनी मा के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करती है। घर का सारा काम अपने कधो पर उठा लती है, इस पर भी मा सुमि की सारी साडिया एक एक कर समेट लती हैं। आखिरकार सुमि वर्किंग गर्ल्स होस्टल म चली जाती है लकिन कारण बताती है कि उसके काम के समय की असुविधा।

कहानी क अत म सुमि मा के जन्मदिन पर फूल ल कर जाती ह, लेकिन फिर भी सोचती है उस ममी को पहले टेलीफोन कर लेना चाहिये। इस प्रकार वातावरण किसी भी प्रकार बोझिलता मुक्त न होने के कारण कुछ भी कह नही पाती। सुमि सोचती है वह सिर्फ इतना ही कह पायगी, "ममी कितना बज गया है।"

सारी कहानी म एसा महसूस होता रहता है कि या तो सुमि मा के सम्बन्धो के बारे मे जानती नही या फिर जानबूझ कर मा-बेटी के सम्बन्धो के बीच दरार न पैदा हो जाये इसलिए वह मूक दर्शक बनी स्थिति से समझौता कर लेती है क्योकि मा और बेटी के बीच का अलगाव अत्यधिक दुखदायक है। क्योकि पिता के साथ तो फिर भी विद्रोह, विरोध बर्दाश्त किया जा सकता है, मा के साथ नहीं।

समकालीन कहानी म एक सीमा तक परिवार म अलगाव के कारण परम्परा से हटन म है। पिता की छवि, चरित्रपूर्ण, सहनशक्ति, और स्नेहपूर्ण हो, मा की छवि ममतामयी हो, बच्चो की खातिर लडाई अपने सिर लने वाली, धरती के समान धैर्यवान हो, बच्चो की छवि स्नेह और आदर प्रकट करने वाली हो, इसलिए जहा

कोई भी अपनी एक भी इकाई से टूटा, समझो अलगाव की शुरूआत हो गयी। जहा कही एक दूसर के प्रति उदासीनता, झुझलाहट का प्रदशन हुआ, वहीं क्षोभ उत्पन्न हो गया। इन दूरियो के पीछे पारिवारिक जिम्मेदारी की एक ही सी अपेक्षाये हैं, विश्वास है, इन के टूटते ही अलगाव शुरू हो जाता है। नयी कहानी म अलगाव की सतह म जान की कोशिश इस ससार के वासी नहीं करते, बल्कि एक दूसर पर दोषारोपण करते हुए दिखाई देते है। बजाय इस समस्या के उलझने के या तो हाथ पैर ढीले छोड दो या फिर कुछ देर या समय के लिए खुद को गुम कर दो। यदि कुछ न हो सके तो उसी तनाव और बोझिलता म घुटत रहो। सवेदनशीलता से हटने पर इसके सिवा दूसरा क्या कारण हो सकता है।

प्रत्यक्षत समकालीन कहानियो म प्रेम कहानियो का चित्राकन कम ही हुआ है। इसे हम रूढिवादी होना कह सकत हैं, जहा विवाद से पहल के प्रेम सम्बन्धो का अनैतिकतापूर्ण कहा जाता है। कहानीकार जो कि इसी समाज से सम्बद्ध है प्रम सम्ब धा के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखता है। माता पिता भी प्रेम सबधो म वहीं विरोध प्रकट करत हैं, जहा जाति से बाहर प्रेम का क्षेत्र हो। जहा प्रेम सम्बन्ध टूटने के बाद जीवन का सुख और सतोष सकट म पड जाता है। पारपरिक विवाह को स्वीकारने वालो के प्रेम सम्ब ध अस्थिर होते हैं, वहा केवल आकषण ही प्रमुख हाता है, बात विवाह तक पहुच ही नहीं पाती। प्रेमियो मे से एक का विवाह हो जान पर प्रेम सम्बन्धा की समाप्ति हो जाती है। समकालीन कहानी लेखक ने प्रेमी युगल स ध्यान हटा कर विवाहित युगल के जीवन म उत्पन्न होने वाली समस्याओ को अपनी कहानियो का कथ्य बनाया है। इसके साथ ही प्रेमी और प्रेमिया की समस्या का भी उठाया है जहा कि प्रेम सबधो मे भी एक प्रकार का अलगाव बोध उत्पन्न हो गया है, ऐसी कहानियो के लखको म निमल वर्मा, उषा प्रियवदा, कृष्णबलदेव वैद, राम कुमार प्रमुख हैं। इन कहानियो की पृष्ठभूमि अधिकतर पाश्चात्य है। इन कहानीकारो की कहानियो मे प्रेम के पक्ष को लेकर, प्रमी प्रेमिका के बीच उत्पन्न हुआ अलगाव, असतोष, अविश्वास को अजनबियत को चित्रित किया है जो सहज तो है ही साथ ही स्पष्ट भी है।

निमल वर्मा की तीन कहानिया 'लवस' 'अ तर' और 'दहलीज' म अलगाव बोध का अहसास अत्य त खूबसूरती स कराया गया है। दहलीज म छोटी लडकी रूनी सोचती है कि शम्मी भाई उससे प्रेम करते हैं लेकिन यह उसको गलतफहमी है। वह जिस लिफाफे म अपन लिए प्रेम पत्र होने की आशा रखती है व उसके लिए एकत्रित किये गये डाक टिकट निकलते हैं। वह अपनी कोमल भावनाओ को धक्का लगते हुए नही देख पाती या कहा जाए कि उसने सोचा भी नहीं होगा कि प्रेम म अलगाव और दु ख भी शामिल है, उसके हृदय पर जो प्रेम की रूमानी छवि अकित थी, जब वह टूटती है तो उसकी भावनाआ का अन्त इस प्रकार होता है—"मेहरू बत्ती बुझा दे

देखती नही, मैं मर गयी हू।" इसके अतिरिक्त—"एनी छत की ओर एक क्षण तक देखती रही, उसके पीले चेहरे पर एक रेखा खिच आयी मानो वह एक दहलीज हो, जिसके पीछे बचपन सदा के लिए छूट गया हो।"

निमल वर्मा की ही दूसरी कहानी 'अतर' म अलगाव बोध अलग ढग से चित्रित किया गया है। 'अन्तर' मे गभपात के बाद प्रेमी प्रेमिका के बीच हुई औपचारिक बातचीत अलगाव बोध की ओर सकेत करती है। प्रेमी सोचता है कि गभपात के बाद भी उसके सम्बन्धो म बदलाव नही आयेगा। लेकिन ऐसा नही है क्योकि शारीरिक सबधों के बाद सतानोत्पत्ति का भार वहन करने के स्थान पर गभपात ने उनके सम्ब धो मे एक प्रकार की दूरी उत्पन्न कर दी है जो उनके वार्तालाप से साफ झलकती है—इसके साथ साथ पात्रो के विचारो की गहराई का भी भास होता है—

—"कब हुआ ?

—सुबह—

—ज्यादा देर तो नही लगी।

—नहीं उन्होने क्लोरोफाम दे दिया था। मुझे कुछ भी पता नही चला।

—मैंने तुमसे कहा था कि तुम्ह कुछ भी पता नहीं चलेगा तुम मानती नहीं थी।

—तुम अब सुखी हो ?

—हम दोनो पहले भी सुखी थे।

—हा, लकिन अब तुम सुखी हो ?

—तुम जानती हो यह हम दोनो के लिए ठीक था मैंने तुमसे पहले भी कहा था।

—देखो अब कोई फिक्र नही है। अब मैं ठीक हू।

—लेकिन तुम अब भी उसके बारे म सोचती हो।

—मैं किसी के बारे म नही सोचती।"

अ त मे लडकी अपने प्रेमी के चल जाने के बाद उसके लाए हुए उपहार अस्पताल की खिडकी से बाहर फेंक देती है, जिससे अलगाव बोध का रग और गहरा हो जाता है।

तीसरी कहानी 'लवस' मे लडका लडकी से लिखित प्रेम निवेदन करता है, जिसे वह स्वीकार नही कर पाती, क्योकि वह इस निवेदन का स्वीकार करन क लिए स्वय को तैयार नही कर पायी है। इसके साथ ही यह दर्शाया गया है कि प्रेम शारीरिक सम्बध तक नही पहुच सकता, इसीलिए उसका विनाश ही उचित है।

कहानी का अन्त बहुत सुन्दर और प्रतीकात्मक है। जहा पहले प्रेमी एक रस्तरा में मिलते हैं वही जब दोनों रस्तरां से बाहर निकलते हैं तो लडका पत्रिका खरीदने के लिए पीछे छूट जाता है।

इसी प्रकार पाश्चात्य पृष्ठभूमि पर लिखी जाने वाले कहानीकारो में उषा प्रियवदा भी हैं जिनकी कहानिया इस अलगाव-बोध को चित्रित करती है। इनमें 'मछलियां' और 'पिघलती हुई बर्फ' कहानियां प्रमुख हैं। इसमे प्रेमी स्वय मे अलगाव का कारण ढूढने के स्थान पर एक दूसरे पर दोषारोपण करते हैं। कहानी 'पिघलती हुई बर्फ' के दोनो प्रेमीगण भारतीय हैं लेकिन रहते अमेरिका मे है। एक अन्य लडकी ट्रिनिडाड की है, चूकि लडकी पाश्चात्य देश की है इसलिए उसका किसी लडके के साथ घूमना उचित ठहराया जायेगा न कि उसे चरित्र की कसौटी पर कसा जायगा। उसका अपना प्रेमी एक पुस्तक लिखने के कारण एकान्तवास कर रहा है और जिस लडके के साथ वह घूम रही है वह उसका सहपाठी तो रह ही चुका है, साथ ही उनके परिवार भी एक दूसरे से परिचित हैं। लडका, सुधीरा को तो उसकी बेवफाई के लिए माफ करता है लेकिन अपने प्रतिद्वन्द्वी को नही। इसलिए प्रतिशोध लेने के लिए अक्षय उसे जानबूझ कर खराब ब्रेक वाली कार दे देता है, जिससे लडका तो मरता ही है, सुधीरा की भी उस दुर्घटना मे मृत्यु हो जाती है।

कहानी का अन्त अक्षय का खुद को क्षमा करने और नया जीवन जीने के प्रयासो को लेकर है। वह यह सोच भी नहीं पाता कि इस प्रेम को परिवर्तित करने मे सुधीरा भी शामिल थी, बल्कि वह तो सोचता है कि उसके प्रतिद्वन्द्वी ने प्रेमिका को हथिया लिया है, जहा उसने प्रतिद्वन्द्वी को रास्ते से हटाया उसकी प्रेमिका वापिस उसके पास आ जायगी। इस कहानी मे पात्र अक्षय द्वारा उत्तेजना और तीव्रता से निर्णय लिया जाना अलगाव बोध का कारण होना सिद्ध हुआ है।

इसी प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता को लेकर लिखी गयी उषा प्रियवदा की दूसरी कहानी 'मछलियां' है। कहानी की मुख्य पात्रा एक भारतीय और सस्कारी लडकी विजी है। वह अपने मगेतर के साथ विवाह के लिए अमरिका आती है, लेकिन वहा आकर उसे पता लगता है कि उसके मगेतर की उसमे अब कोई रुचि नही रह गयी है, वह इसका कारण एक बगाली लडकी मुकी को मानती है। पहले तो विजी एक परम्परागत लडकी की तरह यह आशा और प्रतीक्षा करती है कि शायद उसका व्यवहार उसके प्रति ठीक हो जाये, लेकिन ऐसा नही होता। विजी अपने मगेतर के कनाडा चले जाने के बाद जब देखती है कि कोई आशा नही बाकी बची है, और न ही अब वापस भारत लौटा जा सकता है, वह नटराजन की ओर ध्यान देना शुरू कर देती है, जिससे उसकी दोस्ती इस देश मे पहला कदम रखते ही शुरू हो गयी थी। परन्तु नटराजन अब मुकी के साथ विवाह करने की योजना बना रहा है। नटराजन का मुकी और विजी के साथ शारीरिक सबध नहीं रहा। नटराजन विजी के प्रति आकर्षण का कारण समझ नहीं पाता फिर भी वह मुकी के प्रति अधिक आकर्षित है। इससे विजी के मन मे एक प्रकार

की स्थिति उत्पन्न हो जाती है शायद दोनों पुरुषों में से किसी एक को भी न पा सकने के कारण। इसीलिए वह जाते समय प्रतिरोध स्वरूप सुकी से कह कर जाती है कि नटराजन के प्रेम सम्बन्ध उसके साथ हैं। यहा सुकी भी अत्यधिक सोफेस्टिकेटेड होने के बाद भी केवल विनी के कहने पर नटराजन के साथ तय अपने विवाह को क्षण भर में तोड़ देती है। इन दोनों कहानियों से यह स्पष्ट होता है कि एक भारतीय युवक के आगे पर प्रेम-सम्बन्ध तो जोड लेता है लेकिन अपने प्रेम के प्रति किसी दूसरे का दखल सहन नहीं कर पाता और प्रतिशोध स्वरूप हीन भावना से ग्रस कर कुछ भी कर सकता है। दोनों कहानियों के पात्र पक्षम और विवी दूसरे की भावनाओं को न समझते हुए स्वय का ही दीन हीन समझते हुए, दूसरे पर दोषारोपण करते हैं और ऐसी ही स्थितिया और परिस्थितिया अलगाव बोध को जन्म देती हैं। जहां तर्क से काम न लेकर भावना का आश्रय अधिक लिया जाय तो फिर यही अत है।

पारिवारिक स्तर और प्रेम सबधो के स्तर पर उत्पन्न हुए अलगाव बोध के अतिरिक्त यही अलगाव वैवाहिक स्तर पर भी कायम है। कुछ ऐसी समस्याए हैं और कुछ ऐसी आशायें हैं, जिनके रहते यह अलगाव न चाहते हुए उत्पन्न हो ही जाता है। इसका एक कारण विवाह का माता पिता के चुनाव के आधार पर होना है जहा यह आशा की जाती है कि पति पत्नी जहा अजनबी होते हुए भी जब विवाह हो तो एक आदर्श दम्पति की भूमिका निभा सकें। प्रेम से रह। हमारा लेखक भी समाज से जुड़ा हुआ है इसलिए वह भी आयोजित विवाह को ही महत्व देता है। जबकि सत्यता तो यह है कि प्रेम विवाह मे भी टूटन की किरच आ सकती है या यह कहा जाए कि आयोजित विवाह माता पिता की सहमति के होने के कारण उनमे प्रेम हो ही सकता, गलत है और फिर हमारे लेखक तो असफल और टकराहटपूर्ण वैवाहिक सबधो को लेकर अपनी कहानिया लिखते है।

अधिकतर यह देखा गया है कि बच्चे अपने माता-पिता द्वारा प्रस्तावित विवाह से बचने की कोशिश नही करते। बहुत ही कम पात्र ऐसे उदाहरण हैं जहां बच्चो द्वारा अपनी पसद का विवाह करने के लिए मा बाप पर जोर डाला जाता है। अधिकांशत जहा विवाह की इच्छा न होते हुए भी विवाह किया जाता है यहाँ निबाह करने का प्रयास किया जाता है क्योंकि प्रेम के क्षेत्र मे तो प्रेमी या प्रेमिका मे से एक का विवाह हो जाने पर पुन लौटने की आशा न के बराबर ही होती है।

कुछ कहानियो के पात्र या तो विवाह मे अपने चुनाव को अधिक महत्व देते हैं या फिर परिवार म क्लेश न हो इसलिए माता पिता के चुनाव को चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं। राजेन्द्र यादव की कहानी 'खेल खिलौने' की नलिनी कहती है कि वह शादी की अपेक्षा मौत अधिक पसद करेगी क्योंकि शादी से उसकी कलात्मक और बौद्धिक क्षमतायें नष्ट हो जायेंगी। वह माता पिता की उस प्रवृत्ति का भी वि-

करती है जहा कि लडकी की प्रतिभाओ के विकास के पीछे यह नही सोचा जाता कि उनकी बौद्धिक क्षमता प्रदर्शित हो, इसके विपरीत शादी के लिए आसानी हो, समझा जाता है। वह इस विवाह क लिए विद्रोह भी करती है परतु प्रताडना के बाद विवाह के लिए राजी हो जाती है और तन विवाह क दिन कहती है—"बस अब नही रोऊगी क्योकि जो चीज मेरे पास असाधारण थी, जिसका मुझे गव था और जिससे मुझ इतना मोह था, अब सदा के लिए उसकी चाह छोडदी है। बस, अब मैं एक साधारण लडकी हू—दुबल और कमजोर।"

नलिनी कहानी की एकमात्र एसी पात्रा है जो अपन माता पिता द्वारा चुन गय व्यक्ति का नही, विवाह तत्र के प्रति विद्रोह करती, वह विवाह ही नही करना चाहती। वह अपन एक दोस्त को लिखती भी है—"मैं मानती हू, हजारो लडकियों का एक यही चरम और परम सुख है। पति का अथाह घ प्यार, सान और चादी से भरा घरबार, और निश्चित दिन। लकिन इतन दिन मैंन जो भी पढा, जो भी सीखा, जो आज भी मैं समझती हू लाखो लडकियो से अच्छा था, क्या केवल इसलिए कि यहा आकर सड जायें।" पति का प्रेम नलिनी के लिए घुटन सिद्ध होता है और वह आत्महत्या कर लेती है।

कमलेश्वर की प्रतीकात्मक कहानी 'सीखचे' म एक दुकानदार की औरत, विवाह स इतर एक एमे आदमी को देखती है जो उसे अपने पति की तुलना म अधिक दिलफेंक और आशिक मिजाज प्रतीत होता है। पहले तो वह अपनी इस मन - स्थिति को अस्वीकार करती हुई कहती है—"दुनिया म सब ही सबको देखते है, पर उसम कुछ गहराई तो नही। वह यू ही देख लेती है। यह कोई एसा विषय नही जिस पर बहुत कुछ सोचा विचारा जाय। अच्छे और बुरे का भेद किए बिना भी तो बहुत से काम मनुष्य रोज करता है।' परतु बाद म वह इन मनोभावो को स्वीकृति प्रदान करती हुई केवल विवाह को ही पवित्रता की कसौटी मानती है—"अडोस पडोस म रहने वाले ज्यादातर गरीब जोडे विवाहित नही हैं। फिर उन सात फेरो म क्या विशेषता है? क्या शक्ति है? पडित लोग मत्र पढने के बहान कोई जादू टोना तो नही करते।" उसका विचार है कि पत्नियों को विवाह का मूल्य पति की मौत के बाद ही पता चलता है। वह भी यह ऐसा इसलिए सोचती है क्योकि आस पडोस की विधवायें दुख भोग रही हैं।

इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि एक सयुक्त परिवार म पति और पत्नी के बीच किसी आपसी सहानुभूतिपूण सबध के पनपने को ठीक नहीं समझा जाता। केवल विवाह के नाम पर पति पत्नी के बीच एक चलताऊ रिश्ता कायम हो ही जाता है।

वैवाहिक सबधा मे इन अलगाव के कारणा के अतिरिक्त सतान भी कहीं

अलगाव वाद का कारण है तो कही निकटता का कारण । जहा भी कहानीकारो ने परिवार मे बच्चे का चित्रण किया है वहा वही मुख्य पात्र बन कर रह गया है । क्योंकि गृहस्थी मे अपने व्यक्तिगत सुखो से इतर बच्चे का सुख और काय महत्वपूण हो गया है और जहा दोनो ही नौकरीपेशा हो वहा वही बच्चे को अधिक समय द सकता है, जिसके पास समय हो । कभी कभी तो पत्नी को बच्चे के पालने के साथ ही किसी साथी की ज़रूरत नही रह जाती । मोहन राकेश की कहानी 'सुहागिनें' मे काशी कहती है— 'बहन जी ! इन बच्चो को न पालना होता तो मैं आपको जीती न नज़र आती ।" उसे अपने पति से, दूसरी औरत रखने से भी ज्यादा शिकायत इस बात की है कि वह तीन साल बाद घर आने पर भी बच्चा के लिए कोई उपहार नही लाया ।

जिन पति पत्नी मे प्रेम और सहानुभूति का स्थान नही रह जाता वहा सतान एक प्रकार के आश्वासन का सूत्र बनती है, साथ ही निकटता की भी सभावना रहती है ।

रामकुमार की कहानी 'कितना समय' मे पत्नी के मन मे आने वाली सन्तान के प्रति आशा थी—"शायद वह उन दानो के बीच की खाई को कम करने म सहायता दे, पर खाई बहुत लम्बी चौडी थी ।" जहा अलगाव का कारण सन्तानहीनता हो वहा इस निकटता की सम्भावना से इन्कार नही किया जा सकता ।

इस प्रकार की कहानियो को पढने के बाद निष्कष यह निकलता है कि ज्यादातर दम्पतिया म अलगाव का कारण प्रायोजित विवाह यानि माता पिता द्वारा दो ऐसे अपरिचितों को जीवन बधन मे बाध दना, जहा प्रेम वाक्य कभी बन ही नही पात, हा जन्म ज़रूर लेते है । लेकिन लज्जा की डोर वही दूर खीच कर ले जाती है और बीच मे रह जाती है एक अनचाही दरार । यह दरार जितनी बढती जाती है पारिवारिक कलह और तनाव को स्थान बनाने मे कोई परेशानी नही होती । इन्ही के चलत अलगाव बोध का जन्म हो जाता है । यह अलगाव किसी प्रकार से भी कम होन के बजाय तलाक तक की स्थिति तक जा पहुचता है और उसका कारण हाता है अपरिपक्व मस्तिष्क, जिससे सकारात्मक रख की तरफ सोचना भी असम्भव हो जाता है । वे फिर स्थितियों से सघष के स्थान पर स्वय को दीन हीन समझने मे ही गुम हो जाते हैं, बजाय दूरिया बाटने के ।

यह निर्विवाद सत्य है कि साहित्य समाज से प्रेरित है और उसकी स्थिति मनुष्य के मनोभावा और मनोविकारा पर निभर करती है । इसीलिए नयी कहानी ने उनके सन्दभ म उनके वाह्य और आन्तरिकता का विस्तृत रूप से समथने की चेष्टा का एक अत्यत साहसिक कदम उठाया है । इनम से प्रमुख हैं—व्यक्ति की काम से उत्पन्न भावावलिया । यह भाव बहुत कुछ स्त्री पुरुष की मानसिकता स उत्पन्न होत हैं । क्योंकि आज के युग मे व्यक्ति वह नही है जो आज से सौ पचास वष पहल था,

न ही उसकी जीवन चर्चा उतनी एकसार और सपाट रह गयी है। हजारो समस्यायें आती हैं उसकी राहा मे। इसीलिए जहा एक ताजगी भर विचारो से साहित्य रगा जाना था, वही अब बीमार मानसिकता और विकारो का प्रवाह अधिक तेज़ी से आ गया। नयी कहानी ने भी उसे ही अकित किया जो कि उसने आज के व्यक्ति म पनपता, टूटता देखा। नये कहानीकार राजेन्द्र यादव का भी मत यही है कि—"कहानी हमेशा ही किसी विशेष परिस्थिति म मनुष्य के मन और अनुभवो यानि मनोविज्ञान का समझने—सप्रेषित करने का एक प्रयत्न है।" नयी कहानी के ही कहानीकार शिवप्रसाद सिह का भी यही मत है—"यह लेखकीय मन की विशेपता है कि वह अपने और दूसरो के कर्मा को वस्तुओ की तरह उन पर अर्थो का 'लेवल' लगा कर खानो मे ही नही रख लेता, वल्कि उनसे बार बार टकराकर उनके भीतर छिपे अथ को खोजने या उन तक पहुचने की कोशिश करता है।'

साहित्य मनुष्य को उसके आतरिक और बाह य दोनो ही पक्षो से देखता है। आतरिकता से साहित्य म आशय है—नर नारी को काम भावना के परिप्रेक्ष्य मे चित्रित करना।

उषा प्रियवदा की 'पिघलती हुई बफ' का नायक अक्षय विदेश मे रहते हुए नारी के प्रति एक वितष्णा सी अपने मन म जमा कर चुका है लेकिन परिस्थितियो के बदलते छवि नाम की एक लडकी से मिलता है और उसके यौवन पर मुग्ध रह जाता है। वह अनुभव करता है—"उसन पास चलती छवि को देखा, पूण यौवन और उन रखाओ की कमनीयता छिपी नही थी। उसन जाना कि उसकी त्वचा अत्यत कोमल, स्निग्ध और ऊष्ण होगी छवि सुदर नही है, पर उसमे अपना एक विशिष्ट चाम है और कई वष बाद एकाएक अक्षय ने अपने अ दर एक इच्छा का जागने पाया। एक ऊष्ण, स्वर्णिम शरीर को बाहो से जकडने की तीव्र इच्छा।" इसमे अक्षय का छवि के प्रति आकपण दैहिकता के कारण है जो उसकी काम भावना की पुष्टि करता है।

यही दूसरी प्रकार की स्थिति कमलेश्वर की 'एक अश्लील कहानी' मे है। कहानी का नायक चद्रनाथ के घर के सामन रहने वाले व्यक्ति के अपनी पत्नी को निवस्त्र करके बाहर निकाल देने पर बजाय उसके निकाल दने के कारण पर विचार करने के वह उसकी दैहिक सुदरता के प्रति अपने विचार प्रकट करता है—"जिस तन से किरने फूटती हैं, और जो बदन अपनी ओर चुम्बक की तरह खीचता है, जिसके पोर पोर धीरे धीरे छूने के लिए मन ललकता है, जिसे बाहो मे घेरकर बेसुध हो जाने को मन करता है, यह केले सा शरीर—उस पर इतना अत्याचार।"

राजेन्द्र यादव की कहानी 'खुली हुई साफ़' म पुरुष शिवेन रास्ते मे रुक्ती-

ठिठक्ती एक स्त्री के प्रति, जो नितात अपरिचित है आकर्पित होता है। वह सोचता है कि सदेहास्पद स्थिति मे टहलती हुई स्त्री किसी पुरुप की तलाश मे भटक रही है, जबकि ऐसा नही है। टहलती ठिठक्ती से दप्टि मिलते ही उसके हृदय का सतुलन डगमगा जाता है। उसकी मानसिक सोच अतप्त काम भावना के प्रति है जिसे उस स्त्री द्वारा पूण करन की वात सोचता है और बेचैन हो उठता है। जब वह स्त्री उससे कुछ ही दूरी पर टहलती है तो वह सोचता है—"जरा सा पीछे पीछे घूम आने म हज ही क्या है ? एक वार उधर का चक्कर लगा कर लौटन म हज ही क्या है ?" इस प्रकार सोचता हुआ वह मन ही मन कुछ विचार करता उसके पीछे पीछे चल पडता है, अपनी इस प्रतिक्रिया का समथन करत हुए वह उस स्त्री के साथ सबध स्थापित करना चाहता है। स्त्री की ओर स उन्मुक्त सहयोग मिलने पर अपनी कामच्छा का कोई उचित सकेत की व्याकुलता से प्रतीक्षा करता है। स्त्री पुरुप के बीच उन्मुक्त सबधो और सभोग क विपय की चर्चा करता है। उस स्त्री के खुले ढग से बातचीत करन के बाद अत म उसे आभास होता है यह स्त्री एसी-वैसी स्त्री नही है, स्वस्थ वित्त और उन्मुक्त मन की सतुलित क्षमतावान् है। तब स्वय ही अपनी विकृति पर लज्जित हो जाता है।

यही काम कभी कभी व्यक्ति के मन म सदेह, अनावश्यक भी उत्पन्न कर देता है। मन्नू भडारी की कहानी 'तीसरा आदमी' म इसी स्थिति का अकन किया गया है। इसमें पति सुरेश अपनी पत्नी के साथ स्वच्छन्द रूप से बात करने वाले पर एक प्रकार से सदेह करन लगता है। इसके साथ साथ वह अपनी पत्नी पर भी सदेह करन लगता है और आकपण का स्थान विकपण और दरारें ने लनी हैं। पत्नी शकुन से सतीश ने उसके प्रेमी द्वारा उसकी पलकें चूमन की बात सुनी थी, जिसके परिणाम स्वरूप वह स्वय उसकी पलकें चूमना छोड देता है—उसे अहसास होता है—"जिस तरह उसने शकुन की पलकें चूमना छोड दिया था, वैस ही अब उसे बाहो मे नना भी छोड देना पडेगा जिस शकुन को पिछले पाच साल से वह अपने शरीर के अभिन्न अग की तरह प्यार करता आ रहा है, वह इस समय किसी और की बाहो मे पडी मस्ती मार रही होगी और वह है जो बे घरबार या दर दर भटक रहा है।" उसने घर वापस आकर देखा कि दरवाजा अ दर स बन्द है, उसकी पत्नी शकुन किसी महमान व्यक्ति के साथ घर मे है और इसीलिए वह चुपचाप लौट कर भी भटकता रहता है। वह ज्यो ज्यों उसके बारे म सोचता है, सदेह उतना ही अधिक बढता जाता है। सोचता है—किसका घर और किसकी बीवी ? और घर आने पर मन के सदेह के आधार पर मेहमान व्यक्ति के साथ अपनी पत्नी के काम सबधो का कोई स्पष्ट सकेत या सबूत ढूढता है और स्पष्ट करना चाहता है—'उसने गौर से शकुन का

देखा। उसके अंग प्रत्यंग को वह घूर घूर कर देखने लगा वहीं कोई छाप है कोई लक्षण ? कोई लाल नीला दाग है ?"

ऐसा नहीं है कि पुरुष मन ही नारी के सौन्दर्य के प्रति आकर्षण का अनुभव करता है। नारी मन भी पुरुष के प्रति आकर्षित होता है वह भी स्थूल भोग के माध्यम से तृप्ति चाहता है। नारी मन के आकर्षण की संवेदना कई प्रकार से प्रकट होती है। न केवल शारीरिकता के प्रति बल्कि पुरुष का व्यक्तित्व भी नारी को आकर्षित करता है जहां वह दान प्रतिदान की आशा अपेक्षा रखती है। इस पक्ष को नयी कहानी में अत्यन्त गहराई से चित्रित किया गया है।

उषा प्रियंवदा की कहानी 'कोई एक दूसरा' की युवा लड़की को यह सोच कर मन ही मन अत्यन्त संतोष होता है कि उसकी सुन्दरता, चपलता, हास किसी पुरुष के हृदय के खालीपन को भर सका है वह उसे कुछ दे सकी है। वह अपने नारीत्व और आकर्षक व्यक्तित्व से किसी भी पुरुष को आकर्षित करके बहुत संतोष का अनुभव करती है और वह इस बात साफ साफ कहती भी है—"मादक द्रव्यों के सेवन से कैसा लगता होगा यह मैं नहीं जानती, पर पुरुषों की चाहना—भरी दृष्टि की मदिरा मुझे सदा गुदगुदा जाती है।' निलाजला के इस कथन से साफ स्पष्ट है कि नारी भी चाहती है कि पुरुष उसके व्यक्तित्व और सौन्दर्य से आकर्षित हो, और जब वह इस बात को जान लेती है कि कोई उसके प्रति आकर्षित है और उसे चाहता है तो वह स्वयं को धन्य अनुभव करती है।

कभी कभी यह आकर्षण मात्र किसी के चर्चा करने से ही उत्पन्न हो जाता है। रमेश बक्षी की कहानी 'क्वारी चोरी' की अविवाहित लड़की का ऐसे पुरुष की ओर आकर्षण का अनुभव करती है, जिसे उसने आज तक देखा नहीं है, मात्र उसके साथ विवाह की बात चल रही है। जब उसे पता चलता है कि रेखा जीजी के घर वह युवक आया है तो चिक की आड़ में ही बातें सुन कर प्रभावित और आकर्षित हो जाती है। कुछ समय बाद उसे स्वयं ही पर शर्म सी आती है।

यही आकर्षण और काम मूलक प्रेम कभी कभी केवल स्पर्श के माध्यम से ही उत्पन्न हो जाता है। मोहन राकेश की 'सीमाएं' कहानी में उमा को मंदिर की भीड़ में यह सोच कर प्रसन्नता होती है कोई अपरिचित युवक उसकी तरफ देख रहा है उसे लगता है कि भीड़ में एक व्यक्ति उसे हाथ से छू रहा है वह पलट कर देखती भी है—"उसे केवल एक भान था कि एक हाथ उसे छू रहा है, यहां बाजू के पास, यहां कंधे के पास, यहां।' यहां बाजू के पास, तेजी के साथ लहू उसकी नाड़ियों में सरसरा उठता है। किंतु यह स्पर्श, गले में पहनी हुई सोने की चेन को चोरी करने के लिए था, किन्तु वह इसे समझ भी नहीं पाती। यहां केवल एक पुरुष की दृष्टि और स्पर्श ही उसे एक सुखद अनुभूति प्रदान करते हैं।

उषा प्रियवदा की 'कोई एक दूसरा' की युवती छवि को भी अपने निकट बैठे हुए परिचित पुरुष अक्षय को स्पश कर लाजवन्ती सा सिमट जाना बडा प्यारा लगता है। उसे इस प्रकार स्पश करने से एक प्रकार से सतुष्टि मिलती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि न सिफ पुरुष बल्कि नारी भी पुरुष के प्रति विभिन्न प्रकार स आकषण काम के प्रति सवेदना अनुभव करती है। वह भी चाहती है, कोई उसके आकषण से आकर्षित हो।

व्यक्ति अपनी परिस्थितियो से गहरे जुडा होता है, चाहे वे आतरिक और बाह्य ही क्या न हो। मोहन राकेश की कहानी 'वासना की छाया' म बूढे जाट की वासना को उसके परिवेश मे रख कर चित्रित किया गया है। बतन माजने वाली गढवाली लडकी जो विधवा भी है की बात सुनकर बूढा जाट उत्तेजना म आ जाता है। उस समय "उसकी आखों म भूखी बिल्ली की सी जलन दिखाइ दी। उसके होठ बूढी वासना की लार से गील हो रहे थे। उसका रस भग करन के लिए मैंन रुककर जूतो को झाडा और कहा—"इन कच्चे रास्तो पर सरदार जी जूता का कचूमर निकल जाता है।" जाट ने ध्यान नही दिया। अपनी ही धुन म कहा "बावू जी, आज आपकी गढवाली से मुलाकात हो सकती है।" मुझे लगा कि वासना का लार चू चू कर लम हो गया है और इसान के आकार मे धरती पर रेंग रहा है।" जाट को एक जमीनदारनी की आवश्यकता है, उस की पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। एक जवान लडकी है उसका विवाह हो जायगा तो बूढे की दखभाल करन वाला कोई रह नही जायगा, यही उसकी चिंता है। घर मे गाय और दो भैंसें हैं। घरवाली आ जाने पर उनका चारापानी और दो रोटिया भी आ जायेंगी, ऐसा वह कहता है। परतु वास्तव मे बूढे की कामवासना ही घरवाली की खोज को प्रेरित करती है उसके शब्दों की गूज का अथ था—"मुझे औरत के गम मास की जरूरत है चाहे बूढा हू पर मेरे अकेले के पास नौ एकड जमीन है। घर मे गाय भैंस सब कुछ है। —सिफ औरत ही नही है। बूढी हड्डिया नम मास का चारा अब भी मागती हैं। इनके लिए चारा चाहिये।" उस बूढे को यह जता दिया गया है कि इस उम्र के पडाव पर पहुच कर उसे जो भी स्त्री मिलेगी वह कई घरो म घूम चुकी होगी। क्योकि बूढे के गालो का मास लटक आया है, दात टूट चुके है फिर भी उसे विश्वास है कि कोई स्त्री उसे मिल सकती है क्योकि उसके पास जमीदार होने के नाते पसे हैं घर मे गाय भैंसे है, उसकी हड्डियो मे जितना जोर है इससे कही ज्यादा उसकी गाठ म पैसे हैं। इससे पता चलता है कि जाट इस बुढापे म भी काम-वासना को पूरा करने के लिए पैसे के बल पर स्त्री को पत्नी बना कर घर मे लाना चाहता है, जबकि उसकी अपनी पुत्री विवाह योग्य है। जाट की काम वासना को उसके परिवेश से जोड कर देखा गया है।

देखा। उसके अंग प्रत्यंग को वह घूर-घूर कर देखने लगा कहीं कोई छाप है कोई लक्षण ? कोई लाल नीला दाग है ?'

ऐसा नहीं है कि पुरुष मन ही नारी के सौंदर्य के प्रति आकर्षण का अनुभव करता है। नारी मन भी पुरुष के प्रति आकर्षित होता है वह भी स्थूल भाग के माध्यम से तृप्ति चाहता है। नारी मन के आकर्षण की संवेदना कई प्रकार से प्रकट होती है। न केवल शारीरिकता के प्रति बल्कि पुरुष का व्यक्तित्व भी नारी को आकर्षित करता है जहां वह दान प्रतिदान की आशा अपेक्षा रखती है। इस पक्ष का नयी कहानी में अत्यंत गहराई से चित्रित किया गया है।

उषा प्रियंवदा की कहानी 'कोई एक दूसरा' की युवा लड़की को यह सोच कर मन ही मन अत्यंत संतोष होता है कि उसकी सुंदरता, चपलता, हास किसी पुरुष के हृदय के खालीपन का भर सका है वह उसे कुछ दे सकी है। वह अपने नारीत्व और आकर्षक व्यक्तित्व से किसी भी पुरुष को आकर्षित करके बहुत संतोष का अनुभव करती है और वह इसे साफ साफ कहती भी है—"मादक द्रव्यों के सेवन से कैसा लगता होगा यह मैं नहीं जानती, पर पुरुषों की चाहना—भरी दृष्टि की मदिरा मुझे सदा गुदगुदा जाती है।" निलाजला के इस कथन से साफ स्पष्ट है कि नारी भी चाहती है कि पुरुष उसके व्यक्तित्व और सौंदर्य से आकर्षित हो, और जब वह इस बात को जान लेती है कि कोई उसके प्रति आकर्षित है और उसे चाहता है तो वह स्वयं को धन्य अनुभव करती है।

कभी कभी यह आकर्षण मात्र किसी के चर्चा करने से ही उत्पन्न हो जाता है। रमेश बक्षी की कहानी 'क्वारी चोरी' की अविवाहित लड़की का ऐसे पुरुष की ओर आकर्षण का अनुभव करती है, जिसे उसने आज तक देखा नहीं है, मात्र उसके साथ विवाह की बात चल रही है। जब उसे पता चलता है कि रेखा जीजी के घर वह युवक आया है तो चिक की आड़ से ही बातें सुन कर प्रभावित और आकर्षित हो जाती है। कुछ समय बाद उसे स्वयं ही पर शर्म सी आती है।

यही आकर्षण और काम मूलक प्रेम कभी कभी केवल स्पर्श के माध्यम से ही उत्पन्न हो जाता है। मोहन राकेश की 'सीमाएं' कहानी में उमा को मंदिर की भीड़ में यह सोच कर प्रसन्नता होती है कोई अपरिचित युवक उसकी तरफ देख रहा है उसे लगता है कि भीड़ में एक व्यक्ति उसे हाथ से छू रहा है वह पलट कर देखती भी है—"उसे केवल एक भान था कि एक हाथ उसे छू रहा है, यहां बाजू के पास, यहां कंधे के पास, यहां।' यहां बाजू के पास, तेजी के साथ लहू उसकी नाडियों में सरसरा उठता है। किंतु यह स्पर्श, गले में पहनी हुई सोने की चेन को चोरी करने के लिए था, किन्तु वह इसे समझ भी नहीं पाती। यहां केवल एक पुरुष की दृष्टि और स्पर्श ही उसे एक सुखद अनुभूति प्रदान करते हैं।

उषा प्रियवदा की 'कोई एक दूसरा' की युवती छवि को भी अपने निकट बैठे हुए परिचित पुरुष अक्षय को स्पश कर लाजवन्ती सा सिमट जाना बडा प्यारा लगता है। उसे इस प्रकार स्पश करने से एक प्रकार से सन्तुष्टि मिलती है। इस प्रकार स्पष्ट ह कि न सिफ पुरुष बल्कि नारी भी पुरुष के प्रति विभिन्न प्रकार से आकषण काम के प्रति संवेदना अनुभव करती है। वह भी चाहती है, कोई उसके आकषण से आकर्षित हो।

व्यक्ति अपनी परिस्थितियो से गहरे जुडा होता है, चाहे वे आन्तरिक और बाह्य ही क्यो न हो। मोहन राकेश की कहानी 'वासना की छाया' म बूढे जाट की वासना को उसके परिवेश मे रख कर चित्रित किया गया है। बतन माजने वाली गढवाली लडकी जो विधवा भी है की बात सुनकर बूढा जाट उत्तेजना म आ जाता है। उस समय "उसकी आखो म भूखी बिल्ली की सी जलन दिखाइ दी। उसके होठ बूढी वासना की लार से गीले हो रहे थे। उसका रस भग करने के लिए मैंन रुककर जूता का झाडा और कहा-- "इन कच्चे रास्तो पर सरदार जी जूता का कचूमर निकल जाता है।" जाट न ध्यान नही दिया। अपनी ही धुन म कहा "बाबू जी, आज आपकी गढवाली से मुलाकात हो सकती है ?" मुझे लगा कि वासना का लार चू चू कर लम हो गया है और इसान के आकार म धरती पर रेंग रहा है।" जाट को एक जमीनदारनी की आवश्यकता है, उस की पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। एक जवान लडकी है उसका विवाह हो जायेगा तो बूढे की देखभाल करने वाला कोइ न नही जायगा, यही उसकी चिन्ता है। घर मे गाय और दो भैंसें हैं। घरवाली आ जान पर उनका चारापानी और दो रोटिया भी आ जायेंगी, एसा वह कहता है। परन्तु वास्तव म बूढे की कामवासना ही घरवाली की खोज को प्रेरित करती है उसके शब्दो की गूज का अथ था—"मुझे औरत के गम मास की जरूरत है चाह बढा हू पर मेर अकेल के पास नौ एकड जमीन है। घर मे गाय भैंस सब कुछ है। —सिफ औरत ही नही है। बूढी हड्डिया नम मास का चारा अब भी मागती हैं। इनके लिए चारा चाहिय ।" उस बूढे का यह जता दिया गया है कि इस उम्र के पडाव पर पहुच कर उसे जो भी स्त्री मिलगी वह कई घरा मे घूम चुकी होगी। क्योकि बूढे के गालो का मास लटक आया है, दात टूट चुके हैं फिर भी उस विश्वास है कि कोई स्त्री उसे मिल सकती है क्योकि उसके पास जमीदार होन के नाते पसे हैं, घर म गाय भैसे है, उसकी हड्डियों मे जितना जोर है इससे कहीं ज्यादा उसकी गाठ मे पैसे हैं। इससे पता चलता है कि जाट इस बुढापे मे भी काम वासना को पूरा करने के लिए पैसे के बल पर स्त्री को पत्नी बना कर घर मे लाना चाहता है, जबकि उसकी अपनी पुत्री विवाह-योग्य है। जाट की काम वास नाका परिवेश मे जोड कर देखा गया है।

महेन्द्र भल्ला की कहानी—'तीन चार दिन' का 'मैं' मित्र की पत्नी को देखकर उसमे दिलचस्पी लेने लगता है। वह अपने जीवन मे किसी भी सिद्धात को नही मानता। अपने मित्र गिरि की पत्नी को वह बार-बार देखता है। वह उसे बहुत सुन्दर लगती है, उसके उठने-बठने के ढग को मुग्ध होकर देखता है, उसके कमरे म आते ही वह एक प्रकार की ताजगी का अनुभव करता है। यह आकषण भी कामज-य है। 'मैं' के परिवेश मे उसकी काम भावना का पक्ष प्रस्तुत हुआ है। उसके स्वय के बयान स यह स्पष्ट हाता है— "मेरी अपनी दिक्कत यह है कि जहा जाता हू, वही से उठने को जी करता है। मन रमने न रमने की बात नही, बस हमेशा लगता है सब जाना हुआ है सिफ औरतों मे दिलचस्पी बची रह गयी है। उनसे घुलने-मिलने मे, खास कर जब उनके पति ईर्ष्यालु हों, एक तिक्त सुख तो मिलता है ।" उसे लगता है कि उसके और उसके मित्र की पत्नी के रिश्ते को उसका मित्र यानि अरुणा का पति जानता है। अरुणा अपनी सहेली से मिलने गयी थी, वह अपने मित्र के साथ सोने के कमरे मे जाता है, उस परिवेश मे वह सोचता है—

"पहला बिस्तर अरुणा का था। दूधिया पलग पोश के किनारो पर काले डारो की दो लकीरें थीं। मैंने अरुणा के बिस्तर पर बैठकर जूते उतारे वहीं लेट गया। बिस्तर बहुत नम और गुदगुदा था। लेटते ही मैंने महसूस किया कि मैं अरुणा के सम्पक मे हू मानो उसी पर लेटा हू—मुझे अजीब मज़ा आ रहा था, 'मज़ा' मैंने शब्द को पकडा और मेरी आखो के सामने कल रात म देखी अरुणा की बिखरी, आकषक देह आ गयी। मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि बिना झिझक या जुम महसूस किए मैं अरुणा के बारे म सोचता हू।"

मित्र के मौजूद रहते भी उसकी पत्नी के लिए काम भावना के विषय मे सोचना कसा लगा—"अरुणा! अरुणा! लेकिन गिरि के देखते अरुणा के बारे म सोचना मुझे चच मे गाली देने के समान लगा।" इसके अतिरिक्त गिरि के यहा पार्टी मे— 'हम नाचने लग। अरुणा का नम छोटा हाथ मेरे बायें हाथ मे खुशकिस्मती स चमक रहा था। वहा से उतरती नगी बाह को मैंने देखा फिर तरल चमकती आखो म। दायी बाह उसकी सुडौल जीव-त कमर मे थी? एक क्षण के लिए मैं अपने पर वश खो बठा। मैंने आखें मूद ली।' इस कथन के माध्यम से 'मैं' की काम विषयक भावना का चित्रण किया है।

यही स्थिति स्त्री के सम्बन्ध में भी देखी जा सकती है। व्यक्ति अपने परिवेश के कारण ही कभी कभी ऐसे ऐसे मोडो पर आ जाता है जहा वह समझौते के अतिरिक्त कुछ नही कर सकता। ऐसा करने पर परिवेश भी कुछ और ही बन जाता है—।

मन्नू भडारी की कहानी 'यही सच है' की दीपा का परिवेश भी उसे डगमगाता है और वह, वो नही बन कर रह पाती जो वह बनकर रहना चाहती है। आज से पहले की स्त्री जो एक पतिव्रता होती थी, वह स्थिति आज नही रह गयी है, वह अपनी इच्छानुसार कही भी बध सकती है। दीपा भी एक युवक के प्रति आकर्षण का अनुभव करती है और उस आकर्षण का अनुभव करते हुए कहती है—'कमरे पर लौटकर मैं उसे बैठने को कहती हू, पर वह बैठता नही, बस, बाहो मे भर कर एक बार चूम लेता है। यह भी जैसे उसका रोज का नियम है। रात म सोती हू तो देर तक मेरी आखें मेज पर लगे रजनी गधा के फूलों को ही निहारती रहती हू। जान क्या मुझे भ्रम हो जाता है कि ये फूल नही है, मानो सजय की अनेकानेक आखें है, जा मुझे देख रही, सहला रही हैं, दुलरा रही है।"

सजय निशीथ नाम के लडके के साथ दीपा के प्रेम सबधो को सन्देह की दृष्टि से देखता है। दीपा उसे विश्वास दिलाती है कि वह निशीथ से नही, सजय से बधी है —"सजय, यह तो सोचो कि यदि कोई भी बात होती तो क्या मैं तुम्हार आगे, तुम्हारी हर उचित अनुचित चेष्टा के आगे, यो आत्मसमर्पण करती ? तुम्हारे चु बनो और आलिंगनो मे अपने को यो बिखरने देती ? जानते हो, विवाह से पहले कोई भी लडकी किसी को इन सबका अधिकार नही देती। पर मैंने दिया। क्या केवल इसलिए नही कि मैं तुम्हे प्यार करती हू, बहुत-बहुत प्यार करती हू ? विश्वास करो सजय, तुम्हारा मेरा प्यार ही सच है, निशीथ का प्यार तो मात्र छल था, भ्रम था, झूठ था।"

सजय को इस प्रकार विश्वास दिलाने पर भी वह निशीथ का साथ पाते ही स्थिर नही रह पाती, उसकी वह स्थिरता टिक नही पाती, और वह अपना पूरा का पूरा परिवेश ही परिवर्तित अनुभव करती है—"यो सडक पर ऐसी हरकतें मुझे स्वय पसद नही, पर आज जाने क्या किसी की बाहो की लपट के लिए मेरा मन ललक उठता है।

मैं जानती हू कि जब उस समय ऐसी इच्छा करना, या ऐसी बात सोचना भी जब निशीथ बगल मे बैठा हो, अनुचित है पर मैं क्या करू।"

बार बार उसका मन करता है कि क्यो नही निशीथ उसका हाथ पकड लेता, क्या नही उसके कधे पर हाथ रख देता ? वह जरा भी बुरा नही मानेगी। पर निशीथ कुछ भी नहीं करता। इससे वह बेचैन होती है। निशीथ से वह अपने को इस सीमा तक आकर्षित पाती है कि उसके साथ विवाह करने की बात सुनने को उसका मन छटपटा उठता है। मन ही मन सजय को यह जताने का विचार करती है कि सजय के साथ वह स्वय ढाई

महेद्र भल्ला की कहानी—'तीन चार दिन' का 'मैं' मित्र
उसमे दिलचस्पी लेने लगता है। वह अपने जीवन मे किसी
मानता। अपने मित्र गिरि की पत्नी को वह बार बार देखता है
लगती है, उसके उठने बठने के ढग को मुग्ध होकर देखता है,
ही वह एक प्रकार की ताजगी का अनुभव करता है। यह आकपण
के परिवेश मे उसकी काम भावना का पक्ष प्रस्तुत हुआ है। उ
यह स्पष्ट होता है— "मेरी अपनी दिक्कत यह है कि जहा जात
जी करता है। मन रमने न रमने की बात नही, बस हमेशा
हुआ है सिफ और
रह गयी है। उनसे घुलने मिलने मे, खास कर ज
हो, एक तिक्त सुख तो मिलता है।" उसे लगता
उसके मित्र की पत्नी के रिश्ते को उसका मित्र यारि
जानता है। अरुणा अपनी सहेली से मिलने गयी थी, वह अपन
कमर मे जाता है, उस परिवेश म वह सोचता है—

"पहला बिस्तर अरुणा का था। दूधिया पलग पोश के f
की दो लकीरें थी। मैंन अरुणा के बिस्तर पर बैठकर जूत
लेट गया। बिस्तर बहुत नम और गुदगुदा था। लेटने ही मै
अरुणा के मम्पक मे हू मानो उसी पर लटा हू—मुझे अजीव मज
मैंने शब्द को पकडा और मेरी आखा के सामने कल रात म
आक्पक देह आ गयी। मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि बिना
किए मैं अरुणा के बारे म सोचता हू।"

मित्र के मौजूद रहते भी उसकी पत्नी के लिए काम भाव
कसा लगा—"अरुणा! अरुणा! लेकिन गिरि के देखते अरुणा के
मे गाली देने के समान लगा।" इसके अतिरिक्त गिरि के यहा
लगे। अरणा का नम छोटा हाथ मेरे बायें हाथ मे खुशकिस्म
वहा से उतरती नगी बाह को मैंने देखा फिर तरल च
बाह उसकी सुडौल जीव त कमर मे थी? एक क्षण के लिए मैं
मैंने आखें मूद ली।' इस कथन के माध्यम से 'मैं की काम वि
किया है।

यही स्थिति स्त्री के सम्बन्ध में भी दखी जा सकती है
के कारण ही कभी कभी एस ऐसे मोडो पर आ जाता है जहा द
कुछ नही कर सकता। ऐसा करने पर परिवेश भी कुछ औ

भ्रष्टाचार को व्यक्ति के जीवन के परिप्रेक्ष्य मे रख कर देखा गया है। पारम्परिक आस्थाओ को जिनमे 'राजा निरबसिया' प्रमुख हैं, टूटता हुआ दिखाया गया है जो परिवर्तित मूल्यो के बोधक हैं।

व्यक्ति के एकाकीपन का चित्रण किया गया है। मनुष्य को एकाकीपन सताता है इसलिए वह कोई न कोई साथ और सहारा देखता है, परन्तु आज के यान्त्रिकता युग समुद्र सी फैली भीड मे 'खोई हुई दिशायें' का चन्दर, जब स्वय को अकेला महसूस करता है और परायपन, अपरिचय का शिकार होता है, ऐसे मे उसे अपना छोटा सा वह कस्बा याद आता है, जहा हर दूसरा व्यक्ति तीसरे व्यक्ति को जानता है। विशेषकर कस्बे से शहर आये हुए व्यक्ति को यह अजनबीपन खलता है और वह कहता है—"अब तो यह शहर भी पराया सा लगता है। ऐसे मे व्यक्ति और कर भी क्या सकता है जहा जनसमुद्र के होते हुए भी परिचित कोई नहीं है।

जहा वह अब तक आत्मीयता के सूत्र मे बधे रिश्तो के बीच रहा है, चाचा चाची ताऊ-ताई जैसे किसी न किसी रिश्ते से उसका भावात्मक सबध है। इसीलिए वह अपने सस्कारो और परम्पराओ से अभी तक जुडा हुआ है। दिल्ली जैसे शहर मे आते ही वह जैसे अनजानी दुनिया मे आ जाता है। उनकी कहानियो के पात्र अपनी जिन्दगी का मकसद ढूढने मे लग तो हुए हैं फिर भी उन्हे अहसास है कि हर व्यक्ति एक दूसरे से अलग है, अपरिचित है।

बदलता हुआ परिवेश और जीने के लिए सघर्ष ही कमलेश्वर की कहानियो का मुख्य तथ्य और उद्देश्य है। 'खोई हुई दिशायें' का चन्दर, 'एक थी विमला' की विमला 'पराया शहर, का सुखबीर के पास अपनी स्थितियो मे ही जीने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नही है।

लोकतान्त्रिक मूल्यो के पतन को लेकर लिखी गयी कहानियो मे 'जाज पचम की नाक' प्रमुख है। नेता और सरकार द्वारा जनता का शोषण वहा बहुमुखी है। स्वतन्त्रता ... का कोई अर्थ ही नही रह गया है, सिर्फ सत्ता ही अग्रेजो से भारतीयो के हाथो ... मन वचन अभी भी वही है। इस कहानी मे हमारी विदेशी सत्ता के ... करत पर व्यग्य किया गया है। रानी एलिजाबेथ के स्वागत की ... की नाक के लिए इतना चिन्तित होना हमारी चाटुकारिता

... दिशायें', और 'जिन्दा मुर्दे' मे यान्त्रिक युग ... आदमी चित्रित किया गया तो 'मास का दरिया' ... आया। क्योकि उनका आग्रह यथार्थ और नये- ... विचारो की लीक पीटने से। व्यक्ति के

साल भ्रम मे थी । निशीथ के सम्पक मे आने पर भ्रम के सारे जाल छिन भिन हो गय है । परन्तु वह जब कलकत्ते से वापस कानपुर आती है तो सजय से उसकी भेंट होती है, तो वो विक्षिप्त सी दौडकर उससे लिपट जाती है । उससे कुछ भी बोला नही जाता । उस समय की अपनी स्थिति को वह प्रकट करती है—"बस मरी बाहा की जकड कसती जाती, कसती जाती है तभी मैं अपन भाल पर सजय के अधरा का स्पश महसूस करती हू और मुझे लगता कि यह स्पश, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या, भ्रम था । और हम दोनों एक दूसरे के आलिगन मे बधे रहत हैं चुबित प्रति चुबित ।' इस कहानी म शिक्षित दीपा का अविवाहित हात हुए पुरुष के प्रति, काममूलक भावना का नए पक्ष से प्रस्तुत किया है वाह्य परिवेश के परिणाम स्वरूप उसम काम भावना की अनुभूति होती है ।

नये कहानीकारो का मूल्याकन

कमलेश्वर—आजादी के बाद जहा देश के हर क्षेत्र म परिवतन आया, वही साहित्य मे भी परिवतन आ गया । हमारी जीवन दष्टि और जीवन मूल्य बदलन लगे । इसी बदलाव के रहत जन्म हुआ—नयी कहानी का । नयी कहानी, जिसम नय मूल्य, नए विचार और प्रगतिवादी तत्वो ने जन्म लिया, जिसमे प्रेमचन्द की कहानिया 'कफन' और 'शतरज के खिलाडी जसी कहानियो का ट्रेंड चल पडा, जिसम आम आदमी का दुख देखा सुना गया ।

नय कहानीकारो म राजेन्द्र यादव, मन्नू भडारी, सतीश जमाली, कृष्णा अग्निहोत्री, कृष्णा सोबती, कमलश्वर जैस कहानीकारो ने नयी कहानी को विविधता प्रदान की ।

आम आदमी की सामाजिक स्थितियो को उजागर करने म कमलश्वर अग्रणी रहे, जिनकी कहानिया, 'नीली झील,' 'राजा निरबसिया , 'मास का दरिया,' 'तलाश शिल्प और कला दोनो ही दष्टि से नये क्षितिज को स्पश करती दिखाई पडती है ।

कमलश्वर की पहले की लिखी कहानिया आदशवाद से अधिक प्रभावित दिखाई पडती हैं, जिनमें, प्रेमचन्द की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई पडती है । जिनमे 'दवा की मा , 'पानी की तस्वीर', 'गाय की चोरी', जसी कुछ कहानिया प्रमुख हैं जिसमे कि गाधीवादी सिद्धाता के प्रति आस्था प्रकट की गयी है । किन्तु उनमे भी परिवर्तित मूल्या का आभास होता है ।

परिवतनबोध को लेकर लिखी गयी कहानियों म 'मुरदो की दुनिया', 'गर्मिया क दिन', 'चाय घर', 'भटके हुए लोग , और 'बकार' आदमी हैं, जिसमे उन्हें परिवतन का आभास ही नही बल्कि उस परिवतन को व अपन जीवन म ढोते भी हैं । आर्थिक सकट, हिलती आस्थायें, पारिवारिक सबधो मे बिखराव और प्रदशन तथा

भ्रष्टाचार को व्यक्ति के जीवन के परिप्रेक्ष्य मे रख कर देखा गया है। पारम्परिक आस्थाओ को जिनमे 'राजा निरबसिया' प्रमुख हैं, टूटता हुआ दिखाया गया है जो परिवर्तित मूल्यो के बोधक हैं।

व्यक्ति के एकाकीपन का चित्रण किया गया है। मनुष्य को एकाकीपन सताता है इसलिए वह कोई न कोई साथ और सहारा देखता है, परन्तु आज के यान्त्रिकता युग समुद्र सी फैली भीड मे 'खोई हुई दिशायें' का च दर, जब स्वय को अकेला महसूस करता है और परायेपन, अपरिचय का शिकार होता है, ऐसे मे उसे अपना छोटा सा वह कस्बा याद आता है, जहा हर दूसरा व्यक्ति तीसरे व्यक्ति को जानता है। विशेषकर कस्बे से शहर आये हुए व्यक्ति का यह अजनबीपन खलता है और वह कहता है—"अब तो यह शहर भी पराया सा लगता है। ऐसे म व्यक्ति और कर भी क्या सकता है जहा जनसमुद्र के होते हुए भी परिचित कोइ नही है।

जहा वह अब तक आत्मीयता के सूत्र मे बधे रिश्तो के बीच रहा है, चाचा चाची ताऊ-ताई जसे किसी न किसी रिश्ते से उसका भावात्मक सबध है। इसीलिए वह अपने सस्कारो और परम्पराओ से अभी तक जुडा हुआ है। दिल्ली जैसे शहर मे आते ही वह उस अनजानी दुनिया मे आ जाता है। उनकी कहानिया के पात्र अपनी जिन्दगी का मकसद ढूढन म लग तो हुए है फिर भी उन्हे अहसास है कि हर व्यक्ति एक दूसरे से अलग है, अपरिचित है।

बदलता हुआ परिवेश और जीने के लिए सघर्ष ही कमलेश्वर की कहानियो का मुख्य तथ्य और उद्देश्य है। 'खोई हुई दिशायें' का चन्दर, 'एक थी विमला' की विमला 'पराया शहर, का सुखबीर के पास अपनी स्थितियो मे ही जीने के सिवाय कोइ दूसरा रास्ता नही है।

लोकतान्त्रिक मूल्यो के पतन को लेकर लिखी गयी कहानियो मे 'जाज पचम की नाक' प्रमुख है। नेता और सरकार द्वारा जनता का शोषण वहा बहुमुखी है। स्वतन्त्रता प्राप्ति का कोई अर्थ ही नही रह गया है सिर्फ सत्ता ही अग्रेजो स भारतीयो के हाथो म आइ है। मन-वचन अभी भी वही है। इस कहानी म हमारी विदेशी सत्ता के प्रति सम्मान व्यक्त करने पर व्यग्य किया गया है। रानी एलिजाबेथ के स्वागत की तैयारिया तथा जाज पचम की नाक के लिए इतना चिन्तित होना हमारी चाटुकारिता के प्रतीक हैं।

'राजा निरबसिया', 'खोई हुई दिशायें' और 'जिन्दा मुर्दे' मे यान्त्रिक युग म अकेलेपन की पीडा से तडपता हुआ आदमी चित्रित किया गया तो 'मास का दरिया' इस आन्तरिक यथार्थ धरातल पर से आया। क्योकि उनका आग्रह यथार्थ और नये मूल्यो की तरफ था, न कि पुराने घिसे पिटे विचारो की लीक पीटने से। व्यक्ति के

मन की गहराइयो को चित्रित किया। 'तलाश', 'मास का दरिया', और 'नीली झील'' मानव मन के अन्तर की ही परिचायक हैं।

'मेरी प्रिय कहानिया' सग्रह म 'तलाश' कहानी इसी प्रकार के अन्तर्द्वन्द्व की अभिव्यक्ति है। इस कहानी मे यथार्थ के ऐसे पक्ष प्रस्तुत किए गये हैं जो नैतिकता के आग्रह के कारण छुए नही गये थे। 'तलाश कहानी सुमि की मा का काम भावना की न होकर उसकी अभिलाषाओ और इच्छाओ की कहानी है, जहा उनकी आयु अधिक न होने के कारण अभी उनम अपनी इच्छाओ का दमन करने की सामर्थ्य नही है। यही इच्छायें उनके क्रिया कलापो मम्मी का नयी साडी पहनना, सेंट लगाना, सुमि की साडिया हथियाना और अन्तत एक पुरुष म शारीरिक सम्बन्धो की स्थापना, मे प्रकट होती है। चूकि सुमि की विधवा मम्मी की आयु अधिक नही है इसकी ये सब क्रिया-कलाप और उनकी इच्छायें स्वाभाविक ही है, क्योकि उनम भी कामना है, जिन्हे कि वे पूरा करना चाहती है।

कहानी 'मास का दरिया' भी एक अलग ही प्रकार का दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। इसमे वेश्यावृत्ति अपनाये नारी की व्यथा कथा है। हमारे देश म शारीरिक पवित्रता को सर्वोपरि माना जाता है। परन्तु वेश्या के साथ ऐसा नही है, यह सोचना एक सीमा तक गलत ही होगा क्योकि वेश्या को उसके पेशे की दृष्टि से न देखकर यदि उसकी भी नारी सुलभ अन्तर्भावनाओ, मनोभावो की ओर भी ध्यान देना चाहती है, जहा वह परिस्थितिवश इस काम को अपनाते हुए भी किसी एक पुरुष को अपने एकत्व के तले देखना चाहती है, एक ऐसा पुरुष, जो केवल उसका अपना हो, क्या एक नारी का ऐसा सोचना अनुचित है, चाहे वह वेश्या ही क्यो न हो। कमलेश्वर न अपनी इस कहानी मे नारी के इसी अपनत्व और भाव बोध को लेकर यह कहानी लिखी है। क्योकि केवल वेश्या हो जाने से उसकी नार्योचित भावनायें तो नही मरेंगी।

'नीली झील' प्राकृतिक प्रेम को लेकर लिखी गयी है। प्रकृति से प्रेम करने वाला महेसा और एक मेम के पीछे घूमते हुए महेसा को गलत व्यक्ति की सज्ञा ता कतई नही दे सकते, मूल रूप से वह सौन्दर्य के खिचाव के कारण ही मेम के पीछे जाता है। 'नीली झील' भावना और सवेदना का प्रतीक है न कि स्थूल शारीरिकता का।

सकलन की एक अतिरिक्त कहानी 'दूसरी सुबह सूरज पश्चिम म निकला' मे आधुनिकता से उत्पन्न नीरसता है। कहानी महानगरीय परिवेश पर लिखी गयी है। जहा इस आधुनिकता के प्रति धीमा धीमा आक्रोश भी दिखाई देता है, जिसने एकरसता को जन्म दिया है ऐसी आधुनिकता के प्रति। इस कहानी म दो चरित्र इस यान्त्रिकता के प्रति हल्का हल्का विद्रोह करते दीखते हैं, वे दोनो रात के दो बजे, मूसलाधार

वर्षा मे निश्चित से बैठे हैं समुद्र के किनारे वाली बच पर अपने आस पास के वातावरण से बेखबर ।

पहली कहानी 'राजा निरबसिया' नवीन और पुरातन मूल्यो की तुलना करत हुए चलती ह् । कहानी दो घटनाओ को लेकर कर चलती है, जिसम एक तरफ राजा निरबसिया का कथा चक्र है और दूसरी तरफ जगदीप और च दा का । राजा निरबसिया की कथा मे जहा आदश, महानता और शाश्वत मूल्या की स्थापना की गयी है वहीं च दा की कथा मे—आर्थिक सकट और पारिवारिक सम्ब धो म टकराव और बिखराव के चलते पति पत्नी मे अलगाव और अ तत जगदीप का विप खाकर आत्महत्या के रूप मे परिणति होती है । कमलश्वर की यह कहानी प्रेमच द्र युग से प्रभावित तो दिखाई दती है, पर तु नय मूल्या को उठाती हुई कहानी अपनी श्रेष्ठताओ के साथ नयी कहानी की श्रेणी मे आ बैठी है ।

पति पत्नी के सम्ब धा को लेकर लिखी गयी कहानी 'बयान जिसमे तीसरे आदमी के कारण तनाव है । कहानी पूव सम्ब धो को भूल कर उसे उ मुक्त और विवेकपूण हाकर सामा य धरातल पर खडा हो कर सोचन को मजबूर करती है । 'बयान' की स्त्री इस सबध म अपने बयान क माध्यम से सम्पूण यायसस्था को झकझोरती है । कहानी में कहा गया है कि पत्नी का पूव प्रमी आज भी उसके जीवन म चला तो आया है, पर तु इसके लिए साथ उसे स्त्री के पति को दुघटना का कारण भी बताया गया है, यह अनुचित है, यही कहानी का मुख्य कथ्य है । इसके अतिरिक्त आर्थिक सकट और सघषपूण जीवन का भी चित्रण किया गया है ।

कमलेश्वर अपनी सूक्ष्म सवेदनशीलता और अनुभव के विशाल जगत को सभाल रहन के कारण एक अच्छे कहानीकार सिद्ध होत है । उ होंने जहा राजनीति क्षेत्रो पर कहानिया लिखी, वही आधुनिकबोध, यान्त्रिक युग, महानगरीय बोध से उत्प न अकेलापन और अपरिचय को लेकर तथा स्त्री पुरुष के सम्ब धो को लेकर भी कहानियो को जिया । आम आदमी के तमाम सकटो को लकर लिखी गई कहानिया शोषित और शोषक तत्व की ओर सकेत करती हैं । कस्बे स शहर मे आया हुआ आदमी और उसकी सवेदना का कमलश्वर ने अच्छी तरह पहचाना और पहचान तलाशते आदमी का भी गहराई मे जा कर दुख देखा । ।

मुक्तिबोध—मुक्तिबोध का स्थान समकालीन कहानियो मे विशेष रूप से महत्वपूण है । मुक्तिबोध की सभी कहानिया मानवीय जीवन मे होने वाली गति, सघष, बिखरन, टूटन के बहुआयामी रूप प्रस्तुत करती हैं । कवि होते हुए भी गद्य के क्षेत्र मे उनका एक अलग स्थान है । जहा उनकी कविताओ मे राजनीतिक भ्रष्टाचार, मानवीय प्रपच सजीव रूप स उभरे हैं, वही यही स्थिति उनकी कहानियो

मे भी दिखाई देती है। रहस्यों की परतें एक-एक कर के खुलती चली जाती हैं। हाहाकार करते आदमी की पीड़ा को मुक्तिबोध ने रचनात्मक का सूत्र बना लिया।

मुक्तिबोध की 'एक साहित्यिक की डायरी' एक जीवन के लिए सघष, भोग गये जीवन का यथाथ और बौद्धिक व्यक्तित्व के सजग प्रयासा की उपलब्धि है। 'काठ का सपना' सग्रह म भी उनकी कहानिया भी अपने रचना कौशल, कथ्य और कला की दृष्टि से महत्वपूण हैं। ये सभी कहानिया न होकर डायरी के पन्ने हैं, जिनमे जीवन का सच अपनी सम्पूणता के साथ उभर कर आया है, ऐसी डायरी के पन्ने हैं, जिन्हे मुक्तिबोध ने स्वय झेला है और सघष किया है, यह सघर्ष केवल उनका ही नही बल्कि जीवन के लिए सघष करते हर व्यक्ति का है। इस सग्रह म ग्यारह कहानिया है। कहानी विपात्र बुद्धिजीवी के सकट की ओर 'क्लाड ईथर ली' सम्पूण मानवीय सभ्यता के आचार-व्यवहार को प्रकट करती हैं।

'विपात्र म राजनीतिक और मानवीय सम्बधो के चितन की परिचायक है। इस कहानी की रचना राजनीतिक विवाद, समाजिकता और वयक्तिकता के आधार पर हुई है। दो वग हैं, एक आर सभ्य और सम्भ्रात कह जाने वाले और दूसरी तरफ शोषित और दमन चक्र का शिकार होने वाल। वह वग स्वप्ना की दुनिया म विचरण करने वाला उच्च वग तक पहुचन की आकाक्षा लिए हुए जीने वाला वग है।

'प्रश्न' कहानी पवित्रता की स्थापना के लिए एक चुनौती है। स्वाभाविक स्नेहिलता, सहानुभूति व प्रेम मे किया गया समपण, समपण न कहलाकर समाज की परिधि म आकर कलक की सज्ञा पाता है, परन्तु क्यो? इस बात का कोई स्पष्टीकरण नही मिल पाता। यह स्थिति अत्यन्त दारूण है।

'मोह और मरण' मे व्यक्ति के मन की शुद्ध और निष्कपट इच्छाओ से प्रेरित *काय और उनसे उत्पन्न मानवीय सवेदना का द्वन्द्व है। 'जक्शन' म भी प्राकृतिक* आचरण को मानवीय सवदनात्मक धरातल पर परखा गया है। 'नयी जिन्दगी मे एक जिम्मेदार और व्यवहारिक और तटस्थ तथा फक्कड़शाही के स्वाभाविक जीवन का द्वन्द्व, मुक्तिबोध की कहानियों मे प्रकट हुआ है। इस प्रकार सभी कहानियो मे मानवीय सबधो के प्रश्नों के हल और जीवन की समस्याओ से जूझते आदमी के *जीवन के सत्य को उकेरा है।* इन सत्या का धरातल मानसिक अधिक है।

अमरकान्त—अमरकान्त प्रेमचन्द युगीन परम्परा के कहानीकार हैं। सम कालीन कहानियो मे मानवीय मूल्यो को उकेरन का प्रयत्न किया गया है। यही प्रयास अमरकात की कहानिया मे भी दृष्टिगोचर होता है। मध्यमवर्गीय जन का दुख, उनकी परतो के नीचे छुपे गहरे मजाक और न जाने कितनी ही बातें अमरकात ने अपनी कहानियो मे उठायी है।

इन्होने दो कहानी सग्रह हिन्दी कहानी को दिए है। 'जिन्दगी और जोक', 'दोपहर का भोजन', 'छिपकली', 'हत्यारे,' 'शाम', 'डिप्टी कलक्टरी', 'एक असमथ हिलता हाथ', 'मौत का नगर', तथा 'निर्वासित' अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि की कहानिया है, जिनमे मध्यमवर्गीय जीवन का यथाथ चित्रण किया है। आर्थिक सकट से गुजरते आम आदमी की बेबसी और पीडा का मार्मिक चित्रण किया है अमरकान्त ने।

'जिन्दगी और जोक' कहानी विशेष रूप से चर्चित और श्रेष्ठ कहानी है। कहानी का पात्र रजुआ कष्ट भोग कर भी जिजीविषा समेटे हुए है और एक पागल लडकी से प्रेम करता है, उसे भोजन देता है और किसी की स्तुति और निन्दा की तरफ ध्यान नही देता। जीन की अदम्य इच्छा रजुआ की उस समय और भी उभर कर आती है जब एक बार उसके सिर पर कौवा बैठ जाता है और वह अपने रिश्तेदार को लिखवा देता है कि वह मर गया है, परन्तु वह मरा नही है और कहता है—"सरकार, मैं मरा नही हू जिदा हू सरकार, यह मौत वाली बात किसी सगे सबधी के यहा लिख देने से मौत टल जाती है। भजन राम बरई मेर चाचा होते है। मालिक, एक कारण और है, इस पर लिख दें सरकार कि गोपाल जिन्दा है।" कहानीकार अमरकान्त न अपना वक्तव्य दते हुए लिखा है—"उसके मुख पर मौत की भीषण छाया नाच रही थी और वह जिन्दगी से जोक की तरह चिपटा था—लकिन जाक वह था या जि दगी ? वह जिन्दगी का खून चूस रहा था या जिन्दगी उस का ? मैं तय न कर पाया।"

उनकी कहानी 'पलाश के फूल' मे सामाजिक परिवतन पर व्यग्य किया गया है। आज जब आम आदमी भूख और जिन्दगी के लिए सघष कर रहा है, वही शोषक वग अपने अपने चेहरो पर नकाब और मुखौट ओढ हुए उनके ही शोषण के अमानवीय और घृणित हथकण्डे अपना रहा है। केवल मुखौटो के बदलने से सामाजिक बदलाव नहीं कहलाता, बदलाव तो तब कहलाया जायगा जब कि शोषित वग भी सतोष से परिपूण होगा।

'छिपकली' म पू जीपति सामन्त वग से उठकर तो आय हैं। परन्तु आज वे ठेकेदार व्यवसायी आदि के नामा स जाने जाते हैं। क्योकि व अपार सम्पति के मालिक है। इसी वग भेद को अफसर और मातहत नाम भी दे दिया गया है जिसमे अफसर अपनी स्वाथ सिद्धि के लिए नीच से नीच हथकडे अपनान म लगा हुआ है क्योकि उसके पास शक्ति है। वह गिरगिट की तरह रग बदलता हुआ अपनी शक्ति का उपयोग कर रहा है।

समकालीन कहानीकारो म राजेन्द्र यादव का नाम अत्यन्त महत्त्वपूण है।

गजेन्द्र स्वय को नयी कहानी का सस्थापक होने का दावा करते हैं अपनी कहानी 'खेल खिलौने' से। उनका कहना है—"नयी कहानी का प्रारम्भ कब से माना जायेगा, मुझे नहीं पता। मगर आत्मस्वीकृति को अगर दम्भ और विनय से हटाकर केवल सत्य कथन के रूप में लिया जाय तो मैं अपनी ही बात करूगा। सन् 51 के फरवरी या मार्च के मासिक 'प्रतीक' में मेरी एक कहानी निकली थी 'खेल खिलौने।' हम लोगो ने सन 50 के आस-पास से लिखना शुरू किया और कहानी तथा जीवन को लेकर वचारिक हलचलें 54 55 से शुरू होने लगी थी।"

कहानीकार राजेन्द्र यादव, समाज में फली विषमताओ और विसगतियो के चितेरे हैं। उनकी कहानियो के अधिकाश पात्र मध्यम वर्गीय श्रेणी से उठकर आये हैं जो नियति के हाथो विवश हैं फिर भी उनमे जीवन को जीने की अदम्य चाह है। उनकी कहानियो का कथ्य यथार्थ और सामाजिकता से परिपूर्ण है। उनका कहानी सग्रह 'अभिमन्यु की आत्महत्या' की कहानिया इसी तथ्य को समेटे हैं। महानगरीय परिवेश, सम्बन्धो मे बिखराव इनकी कहानियो में मुख्य है। समाज की अपेक्षा व्यक्ति इनके लिए प्रमुख है। वैयक्तिक जीवन में उत्पन्न सत्रास, अकेलापन, प्रेम सबधो मे टूटन, पारिवारिक सबधो मे टकराव इत्यादि को अपनी कहानियो मे उकेरा है।

नारी के प्रेम मे आज के यान्त्रिक युग मे जो परिवर्तन आया है उसे अपनी कहानी 'जहा लक्ष्मी कैद है' मे देखा है। लक्ष्मी अपने पिता से कहती है— 'ले, तूने मुझे अपने लिए रखा है, मुझे खा, मुझे चबा, मुझे भोग ।' यह उपभोग की आकाक्षा इतनी प्रबल और मुख्य हो गयी है कि व्यक्ति कामातुर होकर अपनी मौसी से भी काम सम्बन्ध स्थापित करने मे नहीं हिचकता। व्यक्ति इतना साहसी हो गया है कि पुरानी परम्पराओं को तोडने में क्षण भर का भी देर नहीं करता।

उनकी कहानी 'प्रतीक्षा' की पात्रा गीता, नन्दा नाम की एक लडकी से सम्बन्ध जोडती है और उसकी बेटी, प्रिया, स्वामी, बन्धु सभी कुछ बन जाती है।

'लच टाइम' कहानी मे अभिभावको के प्रति पुराना आदर भाव टूटता दिखाया है।

'बिरादरी बाहर' मे पुत्री द्वारा अन्तर्जातीय विवाह कर लेने पर पिता रोष प्रकट करते है कि सब यही कहेंगे पारस बाबू की लडकी जिसने बिरादरी से बाहर ब्याह कर लिया। वे लडकी से सम्बन्ध तक बनाये रखने के इच्छुक नही है और एक मा के गभीर आपरेशन के अवसर पर घर आई लडकी के लिए कहते हैं कि अगर वह खाना लाई तो वे फेंक देंगे, परन्तु चोरी छिपे यह भी जानने को उत्सुक है कि नये दामाद की अच्छी तरह खातिर की जा रही है या नहीं, अथवा 'देखें उस आदमी में ऐसी क्या बात है जिसके कारण लडकी ने उससे ब्याह किया है।' उन्हें बस चिन्ता तो यह है कि लोग उन्हे बिरादरी से बाहर कर देंगे।

उनकी कहानियां और सग्रह हैं—अभिमन्यु की आत्महत्या, जहा लक्ष्मी कैद ह, किनारे से किनारे तक, छोटे छोटे ताजमहल, प्रतीक्षा, अपने पार, ढोल, मेरी प्रिय कहानिया, राजेन्द्र यादव की श्रेष्ठ कहानिया।

निर्मल वर्मा—समकालीन कहानीकारो मे निमल वर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बहुत स आलोचक उन पर विदेशी पृष्ठभूमि पर कहानी लिखने वाला कहानीकार होने का आरोप लगात हैं। उनकी कहानियो को विदेशी कहानिया कहते हैं। परन्तु निमल वर्मा इस आरोप का उत्तर दते हुए अपने कहानी सग्रह 'मरी प्रिय कहानिया की भूमिका म कहत है—"वर्षों विदेश मे रहन के कारण मेरी कुछ कहानिया म शायद एक वीराने किस्म का 'प्रवासीपन' चला आया है—मुझे नही मालूम यह इन कहानियो को अच्छा बनाता है या बुरा। कुछ भी हो इन्ह 'विदेशी कहानिया' कहना शायद ठीक न होगा। यो भी मुझे कहानियो, कविताओ को भौगोलिक खण्डो म विभाजित करना अरुचिकर और बहुत हद तक अथहीन लगता रहा है।" वे नारेस की कहानियो और उपन्यासो का उदाहरण देत हुए यह भी कहते हैं—"मैं यहा यह चीज अपनी कहानिया की 'बचाव' के लिए नही (इसकी मुझे कोई लालसा नही) केवल एक सीधी सी बात को सीधे ढग स रखने की कोशिश मे कह रहा हू ताकि हम निरथक बहसो से छुटकारा पा सकें। दरअसल किसी लेखक की पष्ठभूमि विदशी या देशी, यह चीज बहुत ही गौण है। उसका महत्व है तो सिफ इसमें कि किस सीमा तक और कितनी गहराई से वह किसी खास स्थिति या नियति को खोल पाती है—बल्कि यू कह, महत्व की कोई चीज है, तो सिफ यह ही—बाकी सब राख है।"

निमल वर्मा की कहानिया जहा व्यक्ति के एकाकीपन को उभारती है, वही स्त्री व्यक्ति पुरुप सबधो मे उत्पन्न हुए बिखराव और दूरी को भी व्यक्त करती हैं। स्त्री-पुरुप सबधो म उत्पन्न तनाव और दूरी का उनकी कहानी 'अ तर', लवस', 'अधेरे मे देखा जा सकता है।

'अ तर' कहानी मे प्रेमी प्रेमिका ने विवाह से पूव ही शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लिय है जिससे प्रेमिका गभवती हो गयी है, परन्तु प्रेमी इस उत्तरदायित्व को सभालना नही चाहता। कहने का आशय है कि प्रेम मे तो वह सहभागी रहा, परन्तु उस का परिणाम झेलने को वह तयार नही है, इससे प्रेमिका के अतर म प्रेमी एक प्रकार की दूरी और वितष्णा उत्पन्न हो जाती, जब प्रेमी उससे गभपात करवाने को कहता है। प्रेमिका इसके लिए तैयार न होते हुए भी गभपात करवा तो लेती है परन्तु अपना रोष भी प्रकट कर देती है अस्पताल मे प्रेमी का लाया सामान खिडकी से बाहर फेंक कर। प्रेम सबधो मे दूरी के साथ साथ पाश्चात्य देशो मे भी विवाह पूव

शारीरिक सबधो को अनैतिक समझा जाता है, यह बात नस द्वारा प्रेमी को रखे ढग से देखन पर स्पष्ट हो जाती है।

'अधेरे मे', कहानी दाम्पत्य सबधो मे आयी दरार और तनाव की अभिव्यक्ति है। जिसम वाचक बच्ची की मा पोनी उसके चाचा बीरेन स प्रेम करती है, यह तथ्य कहानी म बार बार स्पष्ट किया गया है जैसे, बच्ची द्वारा बीरन चाचा की किताब म मा और चाचा की तस्वीर देख तना बच्ची के पिता की रात के समय मा स तीव्र स्वर मे बोलने की आवाजें सुनाई पडना, दिल्ली जाने स पहले मा का बीरेन के कॉटेज तक जाना और झूठ कहना कि या ही घूमन निकले थे। इस अनैतिक प्रेम प्रसग क कारण उनकी सतान बच्ची का भयभीत रहना आदि बातें हैं जिसस उनके दाम्पत्य सबधो म दूरी और तनाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

'परिन्दे' निमल वर्मा की एक उत्कृष्ट और चर्चित कहानी है, जिमम लतिका, मि० ह्यूबर्ट और डा० मुखर्जी के माध्यम से व्यक्ति के अकेलेपन की अभिव्यक्ति हुई है, इसके साथ ही तीनो पात्र अपन-अपन अतीत को भूलन की कोशिश मे लगे हुए ह। अकेलापन और प्रतीक्षा ही उनकी मानो नियति बन चुका है। अकेलेपन से आतकित लतिका गिरीश को भूल जाना चाहती है। यह अकेलापन विस्तृत न होन पाये इसीलिए लतिका अत म जूली का लिफाफा उसके सोते हुए उसके तकिए के नीचे दबा कर रख आती है।

मानव मन की सूक्ष्म और सवेदनात्मक अनुभूतियो को निमल वर्मा न अपनी कहानी 'दहलीज' म विशेष रूप से अभिव्यक्ति प्रदान की है। कहानी म छोटी लडकी रूनी के मनोभावो को उकेरा गया है, जिसमे कि शम्मी भाई उसकी बडी बहन जेली से प्रेम करते हैं, परन्तु रूनी समझती है कि शायद शम्मी भाई उससे प्रेम करते है और कभी न कभी अवश्य अभिव्यक्त करेंगे, इस कारण रूनी का दिल धडक जाता है। यहा तक कि शम्मी भाई उसे जब लिफाफा देते हैं तो वह सोचती है शायद शम्मी भाई वही बात कहने वाले हैं, जिसे वह अकेले म, रात को सोन स पहले कई बार मन ही मन सोच चुकी है, शायद इस लिफाफे के भीतर एक पत्र है, जो शम्मी भाई ने चुपके से उसके लिए, केवल उसके लिए लिखा है।" लिफाफा खोलन पर जब उसमे से उसके एल्बम के लिए टिकट निकलते हैं तो—"उसे लगा, जस उसके गले म कुछ फस गया है और उसकी पहली और दूसरी सास के बीच एक अधेरी खाई खुलती जा रही है।"

अत मे उसके मनोभावो को प्रकट करते हुए दिखाया गया है जब वह नौकरानी से कहती है—"मेहरू बत्ती बुझा दे। उसने सयत निर्विकार स्वर मे कहा—देखती नही, मैं मर गयी हू।"

बेरोजगारी और रग भेद की समस्या पर पाश्चात्य पृष्ठभूमि पर लिखी गयी,

उनकी अत्यन्त प्रभावी कहानी 'लन्दन की एक रात' है। कहानी से स्पष्ट होता है कि बरोजगारी की समस्या विदेशा म भी भीषण रूप स व्याप्त है। कहानी के प्रारम्भ म ही पात्र कहता है—"मैं दूसरी बार वहा गया था। पहली रात दर से पहुचा था। जाने से पहल ही सारा काम बट चुका था। मैं फिर भी अनिश्चित सा गेट के बाहर खडा था। सोच रहा था, शायद आखिरी क्षण उन्ह किसी आदमी की जरूरत पडेगी और वे मुझे बुला लेंगे। देर तक धडधडाती मशीनो के भीतर सोडे की बोतलो का स्वर सुनाई दे रहा था। हम म से जिन्ह काम मिल गया था, वे जल्दी जल्दी अपने सूट उतारकर काम के कपडे पहन रहे थे।" इसके अतिरिक्त "यह तीसरी बार है जब यहा मैं आया हू ? कल जिस बाबू ने काम देन का वायदा किया था, आज वह दिखाई नही दिया।"

बरोजगारी के अतिरिक्त रग भेद को भी कहानी म दिखाया गया है, छात्रा के माध्यम से—"मैं वही रहता हू। तीन दिन तक एक अग्रेज लडकी के घर छिपा रहा। जब व एक एक नीग्रो को चुन चुन कर लिंच कर रहे थे, मैं उस सफेद हरामजादी के सग सोता रहा। उसने सोचा था, मैं उस चाहता हू लेकिन मैंने उस उसके बाद देखा तक नही। उस नही मालूम, मैं बदला ल रहा था उसकी सफेद चमडी के सग और उसने हाथ स इशारा किया—अश्लील उतना नही जितना जुगुप्सामय।"

सैक्स और यौन सम्बन्धो को लेकर लिखी गयी कहानी 'जलती झाडी' है। कहानीकार ने इन सबधो को अत्यन्त सजीव रूप स अभिव्यक्त किया है। एक पात्र म कोने की झाडी म होते हुए क्रिया कलापों के विषय म कहा गया है—"टापू म उस समय एक असीम, निर्बन्ध मौन सिमट आया था और दूर की हल्की, दबी आवाज भी साफ सुनाई द जाती थी। फिर वह झाडी मेरे काफी करीब थी मुश्किल से तीन गज की दूरी पर। उन दोनो की गहरी हाफ्ती, टूटती सी सासें मुझ तक पहुच जाती थी एक धधकती सी गरमाहट झाडी के बाहर निकलती थी, बीच की हवा को छीलती, भेदती, मन्त्र-मुग्ध साप की तरह बल खाती हुई मुझे लपेट लेती थी। झाडी बार बार हिल उठती थी, मानो उनकी गरम बोझिल सासो का भार न सभाल पा रही हो। उनके नीचे दबे पत्ते बार-बार चरमरा उठते थे।"

इस प्रकार के दृश्य महसूसने के बाद कहानी का 'मैं' कहता है—"मुझे आज भी यह सोच कर अपने पर हैरानी होती है कि मैं वहां से चला क्यों नही आया। जो कुछ झाडी के पीछे हो रहा था, उसके प्रति मेरे मन म न कोई जिज्ञासा थी, न जुगुप्सा कौतूहल भी नही। फिर भी मेरे पाव नही उठे, मैं जडवत बैठा रहा।' 'जलती झाडी' यौन आकाक्षा का प्रतीक है।

निर्मल वर्मा की प्रमुख कृतिया हैं—'बीच बहस म', 'परिन्दे', 'जलती झाडी',

'पिछली गर्मियो मे', 'हिल स्टेशन', 'मेरी प्रिय कहानिया'। उनकी प्रमुख कहानियों म 'लन्दन की एक रात', 'लवस', 'पिक्चर पोस्टकार्ड', 'सितम्बर की एक शाम', 'परिन्दे' विशेष रूप स उल्लेखनीय और उत्कृष्ट कहानिया है।

निमल वर्मा के सम्पूण कथा साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात हो जाता है कि जहा निमल वर्मा एक रूमानी कथाकार हैं, वही प्रेम, काम सबध, स्त्री पुरुष सम्बध और आतक तथा सत्रास को भी अपनी कहानियो म बखूबी उभारत और निभात हैं। एक सवदनशील कथाकार होन के नाते शिल्प भी अत्यन्त सुगठित और कथ्यानुसार ही है। उनकी कहानिया म व्यक्ति के जीवन को समझने की चाह है। वे व्यक्ति के माध्यम से समष्टि का मूल्याकन करते है। उनकी कहानियो मे एक प्रकार की गति और सोच है जो पाठक को झकझोर कर रख देती है। वे यथाथ के धरातल की भी एक ऐसी रोमाचक परिकल्पना कर देते हैं कि वे सत्य से कदापि दूर नही होतीं। भाषा मे सगीतात्मकता का माधुय है जो उन्हे कहानीकार के साथ साथ एक कलाकार के रूप म भी प्रतिष्ठित कर दता है। उन की कहानियो में अपनी परिस्थिति और परिवेश की गभीरता को समझन की उत्कठा स्पष्ट परिलक्षित होती हैं।

उषा प्रियम्वदा—समकालीन महिला रचनाकारा मे उषा प्रियम्वदा एक सुपरिचति हस्ताक्षर है। नारी के जीवन में आये परिवतन और उससे उत्पन्न परिस्थितियों को उषा प्रियम्वदा ने समझने की कोशिश की है, अपनी कहानियो के माध्यम से। उनकी कहानियो और सग्रहों के नाम हैं—'कितना बडा झूठ', 'फिर बसन्त आया', 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' उनकी कहानियो म प्रमुख और उत्कृष्ट कहानिया हैं—मछलिया, कोई नहो, खुले दरवाजे, वापसी, जिन्दगी और गुलाब के फूल।

आधुनिक भारत के निवासियां तथा उनक परिवारो मे जन्म लेता हुआ नयी और पुरानी पीढी का टकराव उनकी 'वापसी' कहानी म बखूबी उभर कर आया है। 'वापसी' के मुख्य पात्र गजाधर बाबू एक अवकाश प्राप्त रेलवे कमचारी थे और अब तक घर से बाहर ही रहते थे। अवकाश प्राप्ति के पश्चात वे चाहत हैं कि बाकी जीवन अपने भरे पूरे परिवार के साथ आनन्दपूवक बितायेंगे। परन्तु उनकी इस आकाक्षा पर तब तुषारापात हो जाता है जब वे देखते हैं कि कोई भी उनके रहने से खुश नहीं हैं, यहा तक कि उनका बिस्तर भी अचार आदि रखने की कोठरी मे लगा दिया जाता है तथा उनकी पत्नी भी अपनी सन्तानो के समक्ष कुछ कह नही पाती। आखिरकार गजाधर बाबू घर छोड कर जाने का फसला कर लेते हैं। वे अपनी पत्नी को साथ चलने का कहते हैं तो वह भी तैयार नही होती। इस प्रकार वे अकेले ही चलने को विवश हो जाते हैं, विडम्बना देखिये, कि भरे-पूरे परिवार के होते हुए भी वे अकेले हैं तथा उनकी पत्नी भी उनकी नही हो पाती तथा वे अकेले ही

चलते हैं। उनके घर से निकलते ही उनके कमर से उनकी चारपाई भी निकाली दी जाती है। "आश्चर्य देखिये कि उनके घर से जाने पर किसी का कोई दुख नहीं, आपत्ति नहीं। इस समय कोई आसू नहीं, रुदन नहीं, केवल एक दृष्टि उन्होंने अपने परिवार पर डाली, फिर दूसरी ओर देखने लगे और रिक्शा चल पड़ा।"

इतने बड़े परिवार के होते हुए भी गजाधर बाबू अपनी वापसी और अकेलापन ढोने को विवश हैं। उनके बच्चे उनसे इसलिए नाराज रहते हैं कि वह बड़े लड़के को वे हर वक्त बैठक मे लड़को को लाने तथा हसी मजाक करने को मना करते हैं, लड़की को पड़ोसियो के घर आने जाने को मना करते हैं। अपने ही बच्चो द्वारा वे उपेक्षित हो कर एकाकी जिन्दगी व्यतीत करने को मजबूर है। उनके एकाकी होने का दुख किसी को नही है। गजाधर बाबू जितने शौक और आकाक्षायें सजोये आये थे अपने परिवार के साथ रहने का वे सब विचार धाराओं की टकराहट म चकनाचूर हो गयी।

'मछलियां' कहानी मे उषा प्रियम्वदा ने परम्परागत नारी सुलभ शका और ईर्ष्या की मन स्थितियों का सफलतापूर्वक मूल्याकन किया है। विदेश मे रह रही मुकी के कारण विजी और मनीश के सबधो म अलगाव की स्थिति आ जाती है। इसके फलस्वरूप नटराजन और मुकी के सबधो को विवाह रूप म बदलते देख कर विजी को ईर्ष्या हो आती है। नटराजन विजी को सहानुभूतिवश हर प्रकार की सहायता प्रदान करता है परन्तु विजी को जब नटराजन के विवाह का समाचार मिलता है तो वह जाने से पहले उन दोनो के सबधो मे भी अलगाव उत्पन्न कर देती है और वह भी केवल ईर्ष्यावश इस घटना से दुखी मुकी रोते हुए कहती है—"जाने से पहले विजी मेरे पास आई थी। जिस सदा से उसने नफरत की, उसे यह बताये बिना कैसे चली जाती। उसी ने बताया कि तुमने पन्द्रह सौ डालर दिये हैं, डाक्टर के पास जाने और इण्डिया लौट जाने के लिए। पहले मैंने उस पर विश्वास ही नहीं किया। मुझे ख्याल भी न था कि तुम इतना आगे बढ जाओगे। पर पर आज फर्नीचर की दुकान से फोन आया कि मैंने जो चेक उन्हें दिया, वह बैंक से वापस लौट आया कि वहा धन नहीं है तब मुझे लगा कि।"

आर्थिक समस्या पर लिखी गयी उनकी कहानी 'परम्बुलेटर' है। अर्थ समस्या का प्रभाव मानवीय भावनाओ पर भी पड़ा है, इस कहानी से पता चलता है। कहानी की पात्रा पेरम्बुलेटर के प्रति मोहासक्त होते हुए भी बच्चे के स्वास्थ्य के लिए परम्बुलेटर बेच देती है।

'जिन्दगी और गुलाब के फूल' कहानी बेरोजगारी की समस्या का उद्घाटन करती है।

उषा प्रियम्वदा अधिकाशत विदेशी पृष्ठभूमि पर कहानियो की रचना

करती है परन्तु उनमे भी सस्कारो और परपराओ की दृढता कायम रहती हैं। परम्परागत मूल्यो का टूटना उनकी कहानियो का मुख्य विषय रहा है। जीवन के यथाथ स चुने हुए कथानक उनकी कहानी रचते हैं। शिल्प के प्रति वे विशेष रूप से जागरूक रहती है, पर तु ऐसा नही लगता कि इसके लिए वे विशेष प्रयास कर रही है, पात्रानुकूल शब्द भाषा स्वत ही आते चले जात हैं। सवेदनशीलता के साथ-साथ विचार शक्ति और ठहराव की प्रधानता है। एक नारी होन के नाते उषा प्रियम्वदा नारी सबधी विचार दृष्टि को विशेष आधार प्रदान करती हैं।

'पचपन खभे लाल दीवारें' म नारी एक प्रकार की कद मे घिर कर रह गया है और क्षण प्रतिक्षण मुक्ति की प्रतीक्षा कर रही है।

मन्नू भडारी—अपने सहज रचना सजन के कारण मन्नू भडारी तमाम महिला कथाकारो स अलग अपना एक विशेष स्थान निर्धारित कर चुकी है। मन्नू भडारी ने नारी को एक नारी के रूप मे ही चित्रित किया है न कि सती सावित्री के रूप मे, वह भी सुख दु ख झेलने वाली एक सामान्य नारी है इस बात को विशेष रूप से अपनी कहानिया मे दिखाया है। जीवन से उठाए गए कथ्य और स्थितिया ही उनकी कहानी रचत है। उनके प्रकाशित सग्रह है—'मैं हार गयी', 'तीन निगाहा की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सलाब', 'त्रिशकु'।

उनकी प्रमुख कहानियो म—'कील और कसक', 'ईसा के घर इसान', 'नशा', 'सजा' पमुख है।

'रानी मा का चबूतरा' कहानी म नारी की नियति और दीन हीन दशा का चित्रण किया गया है। ऐसी दीन हीन नारी भी समाज द्वारा निन्दा का पात्र बनाई जाती है। कहानी की नायिका गुलाबी को सब लोग चुडल कहत हैं। उस एव ककशा और बुरी कहते हैं। परन्तु एसा है नही। वह तो अपन ही दु ख से दु खी है। एक दिन जब गुलाबी अपन बच्चे का छाड कर काम करने चली जाती है तो उसका बच्चा नाली म गिर जाता है और मुहल्ले क लोग उसे उठाते नहीं। ऐसी परिस्थिति म वह हार कर यही कहती है—"आ हा! बडे आय बस्ती वाल। पहल कोठरी खोलकर जाती थी ता मरा छोरा सरकत सरकत मोरी म आकर गिर गया। किसी न उठाया तो नही। बडे अपने बनत हैं। छोरा भी ता जान किस माटी का बना हुआ है, सार दिन मोरी क सडे पानी म सडता रहा, पर मरा नही, मर जाता ता पाप कटता। जीवन के कठोर यथाथ न उसे दुस्साहसी और दबग के साथ-साथ स्वाभिमानी भी बना दिया है तभी तो वह कहती है—"हम क्या भिखमग हैं, जो किसी का दिया पहनेंगे। आज मेरे घर म कोई मूछा वाला नही बैठा है तो सब लोग सीख देन चल हैं थू है उन पर।'

'क्षय' कहानी की पात्रा कुन्नी एक शिक्षित नारी है परन्तु उसक बावजूद भी

उस शिक्षा इत्यादि छोड कर अपने परिवार के पालन हेतु अध्यापिका की नौकरी करनी पडती है, ऐसे मे उसे क्षयग्रस्त अपने पिता की देखभाल करनी पडती है, इन सब से घबराकर वह अपनी तुलना, अपने क्षयग्रस्त पिता से करती है— 'एकाएक कुन्ती को लगा कि उसकी यह खासी, यह खोखली आवाज, पापा की खासी से कितनी मिलती जुलती है हू ब हू वैसी ही तो है सहमकर उसने पापा के चेहरे पर ।" यह स्थिति उसे दयनीय बना देती है ।

प्रेम और स्त्री पुरुष के बीच काम सम्बन्धो को लेकर लिखी गई कहानियो मे मन्नू भडारी की 'एक बार और', 'यही सच है', 'नैरेटर'। 'यही सच है' मे प्रेम के भ्रमजाल को तोडा गया है और उसे यथार्थ धरातल पर ला कर सोचा गया है। नायिका इस द्वन्द्व म है कि वह निशीथ और सजय मे से किसे चुने। दीपा स्नेह की अभिव्यक्ति का सच मानती है—" मैं सब समझ गयी, निशीथ, सब समझ गयी। जो कुछ तुम इन चार दिनो मे नही कह पाये, वह तुम्हारे इस क्षणिक स्पर्श ने कह दिया। विश्वास करो, यदि तुम मेरे हो, तो मैं भी तुम्हारी हू, केवल तुम्हारी, एकमात्र तुम्हारी।" इसके विपरीत चार दिन बाद कलकत्ता से कानपुर पहुचते ही उसकी यह विचारधारा बदल जाती है, उसे लगता है, आलिंगन और चुबन से ही प्रणय की अभिव्यक्ति हो सकती है, मात्र भावनाओ के प्रदर्शन से नही,—"तभी मैं अपने गाल पर सजय के अधरो का स्पर्श महसूस करती हू और मुझे लगता है, स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था ।" दीपा के द्वन्द्व की परिणति आखिरकार निर्णयात्मक स्थिति मे पहुच जाती है।

'स्त्री सुबोधिनी' म विवाहित व्यक्ति से प्यार मे छली गयी युवती अपने अनुभव के आधार पर इस प्रकार की युवतियो को शिक्षा देने मे नही चूकती—वह युवती को शब्दजाल म फसा कर अपना शरीर और भावनायें उसके जिम्मे कर देता है और सारी पारिवारिक खिच खिच पत्नी के नाम। वह प्रेमिका को बार-बार समझाता है कि बीवी बनते ही औरत बहुत ऊबाऊ और त्रास दायक बन जाती है। इस तरह यौन शोषन का क्रम एक अरसे तक चलता रहता हैं।

'तीसरा आदमी' पति की मानसिक कमजोरी स्पष्ट करती है इसमे कुछ तथ्य न होकर आधार मात्र शक ही होता है, निराधार। 'अकेली' कहानी की बुआ जो कि सामाजिक सबधों को बनाकर रखना चाहती हैं परन्तु पुत्र की मृत्यु के पश्चात पति जब सन्यास ले लते हैं तो समाज मे उनका अपना ही अस्तित्व नष्ट हो जाता है।

नारी का व्यक्तिक और गृहस्थ स्तर पर परिवर्तन, रूढिमुक्त कामी हृदय का स्पन्दन और द्वन्द्व उसकी परिस्थितियो से उत्पन्न विद्रोहपूर्ण प्रवृत्तिया कहानी 'ईसा के घर इसान' म मिलती है।

मन्नू भडारी का महिला कथाकारों में विशिष्ट होने का सब से बडा और ठोस कारण है शिल्प का अत्यन्त सुगठित और सरल तथा व्यवहारिक होना। उपयुक्त कथ्य को उपयुक्त भाषा म ढालने की कला उन्हे आती है इसलिए किसी भी प्रकार के भावा

को उन्हे शब्दो मे बाधने मे किसी परेशानी का सामना नही करना पडता। चाहे उन्ह मुहावरेदार भाषा ही क्यो न लिखनी पडे। जैसे—'ब न्द दराजो के साथ' मे परेश की टिप्पणी—"विवाह होने से लेकर पति पर सन्देह होने तक का यह वणन एक व्यजनामय भाषा का अद्वितीय नमूना है। एक एक वाक्य का एक एक टुकडा देखने मे लचीला, अथ मे कसा हुआ और नारी मन में क्षण-क्षण ने परिवर्तित होने वाले गाढे रगा की छाया से रजित है। किसी भी टुकडे के आधे अक्षर को भी छुओ तो लगता है, रग ऊगली पर लगा आता है।"

'स्त्री सुबोधिनी' की भाषा म तल्खी और आक्रोश भरा हुआ है—"लब्बो लुवाव यह कि तुरुप के सार पत्ते उसके पास और मुझे मिले उसके दिय हुए छक्के—पजे यानी टोटके की पुडिया मे बधे, दाशनिक लफ्फाजी मे लिपटे हवाई प्यार के चन्द जुमले। इन टटपू जिया पत्ता के सहार मैं ज्यादा इतना ही कर सकती थी कि जि दगी भर उसकी पू छ पकडे रहती ।"

मन्नू भडारी अपनी कहानियो म स्पष्टता से काम लती हैं और पाठक को उलझाती नही। किसी भी प्रकार का पाठक इन कहानिया का रसास्वादन सरलता मे कर सकता है, बशर्ते वह सजग हो।

माकण्डेय —माकण्डेय आचलिक कहानिया लिखन वाल सफल कहानीकार है। ग्राम्य जीवन को उन्होंने अपनी कहानियो म उतारा है। वे ग्राम कथा का महत्व 'भूदान' मे बताते हुए कहते हैं—"प्रेमचन्द की परम्परा को तोडती हुई शहरी जीवन पर आधारित कहानिया मरणोन्मुखी प्रवृत्ति की हो गयी है, उससे हिन्दी कहानी को उभारने का श्रेय ग्राम्य कथा को है।"

माकण्डेय के प्रमुख कहानी सग्रह है—माही, बीच के लोग, महुए का पड, भूदान हसा जाइ अकेला, पान फूल, सहज और शुभ तथा 'पत्थर और परछाइ ।

उनकी प्रमुख कहानियो म हैं—हसा जाइ अकेला, प्रिया सैनी, भूदान, गुलरा के बाबा, नौ सौ रुपए और एक ऊटदाना, माई, आदर्शों का नायक, बीच के लोग, सेमल का फूल, चाद का टुकडा।

'हसा जाइ अकेला' माकण्डेय की चर्चित कहानी है जिसम मानवीयता, और यथार्थता का अकन है। कहानी 'लघु मानव' की है। उसके सम्पूण जीवन का जीवन्त चित्रण है।

'नौ सौ रुपय और एक ऊटदाना' कहानी स्वातन्त्र्योत्तर परिवर्तित राजनीति की अभिव्यक्ति है—"राजनीति तो गई ही महातमा के साथ चली गयी बच्चन। बिचार नही रहा अब अउर बिना विचार के नति कहा? देखा न अब काम धधा सब मे बविचारी आ गई। जो कुछ आग पानी हृदय मे रहा, वह बुत गया। हमको छोडा, नेता लोग को दखा, उनका भी वही हाल। जिस कुरसी पर बैठ गय—बस वह उनकी हो गई। अब तो कुरसी की नेति है। गद्दी महतमा का कुल काम धाम धरा रह गया। धरम के नाव पर ओट उगहान हैं। ठाकुर के ठाकुर, बाम्हन के बाम्हन कहा गयी गरीबी? कहा गया छूवाछूत—अब बिचार नहीं रहा, बस ओट रह गया है।'

अथ सकट पर लिखी गयी उनकी कहानी 'बाँदलो का एक टुकडा' है। कहानी के पात्र जसमा और उसके पति को लिये पैसे का उधार चुकाने के लिए अपनी बकरी और उसका बच्चा भी बेच देना पडता है—"अभी तो तुम्हीं ने तय किया है कि सूर म बकरी और उसका बच्चा देगी और सूद मे काम करोगी।" यहा तक कि खाने के लिए थोडा सा अन्न और पानी की भी समस्या है—"यह आग पानी से नही बुझेगी—उसने सोचा। लेकिन पानी पीने का बहाना करने मे क्या हर्ज है, आखिरकार तो जीना है—चाहे किसी भी बहाने और वह हाथ का गिलास लिए फिर रसोई मे लौट गया।"

खाने के स्थान पर लप्सी बन हुए कटोर को धोकर पीना ही उसका मानो भोजन है—"उसे ऐसी घबराहट महसूस होने लगी कि थोडी देर पहले जिस दिमागी बहलाव के कारण उसे आराम महसूस हो रहा था, वही अब उसे सबसे दुखद मालूम होने लगा। उसने अपने दात कस कर भीच लिए और कुछ भी न सोचने का निश्चय करते हुए एक उगली से कटोर के पानी को चलाने लगा। जब घोल अच्छी तरह बन गया तो उसने दोनो हाथ से कटोरा उठाया और एक सास मे गट गट सारा घोल पी गया। फिर गिलास का भी पानी पीकर रसोई से निकला और झिलगे म पडे हुए कुनाई को देखे बिना बाहर निकल गया।"

स्त्री-पुरुष सबधो पर आधारित कहानी 'प्रिया सैनी' आचलिकता से दूर है। कहानी की नायिका प्रिया सैनी जिस पुरुष स वतमान म प्रेम करती है उसे, उसके बार-बार जिद करने पर साफ साफ सब कुछ बता देती है और अपनी नृत्य नाटिका 'इसान की खोज' क माध्यम से बहुत प्रकट भी कर चुकी है परन्तु पुरुष का परम्परागत वही ईर्ष्यालु स्वभाव शक्की होने के साथ साथ सत्य का न सहन करना पाना है, जिसने अलगाव को जन्म दिया है—प्रिया अपने पूर्व पुरुष के विषय म साफ साफ लिखती है—"ऐसा कुछ भी बाकी नही है जिसे मैं शब्दो म कह सकू। लेकिन इन सब क लिए कोई खेद नही है—कोई आत्मदश नही। हा सकता है, मरी जगह पर कोई दूसरी स्त्री होती तो उसे होता पर मैं एकदम सहज रूप मे स्वीकार करती हू कि मेरे साथ जो कुछ हुआ उसम मैं सवथा शरीक थी—मन प्राण ही नही, शरीर से भी। यह इसलिए कह रही हू कि मरा सत्य यही है।"

मार्कण्डेय अपनी बात को सरलता और सहजता से कहने मे पूणत समर्थ है जिसका कारण शिल्प का स्वाभाविक होना है। आचलिक कहानिया लिखते समय विशेष ध्यान रखा गया है कि भाषा इतनी कठिन न हो जाय कि पाठक को उलझन होने लगे समझने म। ग्राम्य परिवेश उनकी कहानियो का होता है। ग्राम्य समाज क रीति रिवाज, व्यवहार और विकार का ब्योरा देते हुए वे ग्राम्य समाज मे उत्पन्न होता शोषण, रूढिवादिता, अधविश्वास और यथाथ पर विशेष रूप स ध्यान देते हैं।

हिमाशु जोशी—आम आदमी के जीवन को रेखाकित करने वाले कथाकार हिमाशु जोशी किसी भी वाद या धारा से अपने आप को नही जोडते। न ही उनकी कहानिया किसी भी विशेष आदोलन से प्रभावित है। इसलिए हिमाशु जोशी का कहना है—'जो रचना जीवन के जितना निकट रहती है, वह उतनी ही स्वाभाविक होती है।" उनके इस कथन की पुष्टि उनकी कहानियो से हो जाती है। उनके कहानी सग्रह हैं—अतत, रथचक्र, मनुष्य चिन्ह, जलते हुए डैने।

हिमाशु जोशी अपनी कहानियो म आज के युग मे अपनी अपनी यातना और सन्त्रास भोगत आदमी को विशेष महत्व देते है। डा॰ विवेकीराय का इस सम्बन्ध मे कथन है—"हिमाशु जोशी की कहानिया वस्तु रूप मे मुख्यत तीन केन्द्रो के इद गिद घूमती है। प्रथम पवताचल का ग्राम जीवन, भोले भावुक जन की रोमाचक दरिद्रता, अज्ञानता और शोषण नियति, द्वितीय समसामायिक पारिवारिक जीवन। उसके विविध आयाम, सवेदनीय कोण और परम्परा सघष तथा तीसरा महानगरीय मध्यवग का आधुनिक बोध।"

हिमाशु जाशी की कहानियो के पात्र असीम जिजीविषा समटे है। व सघष के लिए ता तत्पर है पर तु मत्यु के लिए हा अगर वैसे ही मौत आ जाए तो ठीक है, पर तु आत्महत्या करने की बात वे नही सोचते। यही स्थिति उनकी कहानी 'जीना मरना' म है। घर म मा की ता मत्यु हो ही चुकी है, बीमार बच्चा मृत्यु की तरफ बढ रहा है। कई वर्षो से घर म नय कपडे नही बने है। मानसिक स्थिति इतनी बिगड चुकी है कि उसे 'हाजिरी रजिस्टर' पर दस्तखत के बाद तारीख भी याद नही आती। मा की मत्यु के बाद वह बहन बरखा से कहता है—"अम्मा गुजर गई तो क्या हुआ। हम सब तो अभी जि दा ह !"

'बूद पानी' कहानी समय की परिवतनशीलता का परिचय देती है। कहानी का पात्र विश्वेश्वर कहता है—"कभी किला बडा हो जाता है थी थाल और कभी न हा, गुडडी की गेंद सा। वैसे ही कालि दी हमारी जि दगी भी है न। दिन तो निकल जाते है। समय तो बीत ही जाता है। लकिन वनमान जि दगी का न हा सा चाद थाल मा कैसे बनेगा।"

कुल मिलाकर हिमाशु जाशी की सभी कहानिया अत्य त ममस्पर्शी हैं।

ज्ञानरजन—समकालीन कथा साहित्य में ज्ञानरजन एक महत्वपूण नाम है। ज्ञानरजन ने अधिकाश कहानिया मैं शैली और आत्मालाप शैली मे लिखी हैं। उनकी कहानिया म—बुद्धिजीवी, याद और याद, शेष होते हुए पिता, मनहूस बगला, फॅस के इधर उधर, रचना प्रक्रिया, बाहर का फूल, अमरूद का पड, दिवास्वप्नी, छलाग और खननायिका प्रमुख है।

उनके कहानी सग्रह हैं—'फॅस के इधर उधर' 'सपना नही', मेरी प्रिय कहानिया।

'फॅस के इधर उधर' ज्ञानरजन की विशिष्ट कहानियो मे स एक है जिसमें परिवतित परिवेश और मूल्यो का अकन है। कहानी म उल्लिखित 'फॅस' है जिसके आर पार दा घर हैं परन्तु उस फॅस का कभी भी लाघा नही गया उनम इतना अजनबीपन है अपन पडोसियो के प्रति। फॅस क इधर क मकान वाले साचत हैं कि वे अति आधुनिक हैं और समाज की परवाह करन वाल नहीं हैं, जबकि हम हैं समाज स डरन वाले। व पडोसियो के विषय म व्यथ ही तरह-तरह की बातें अपन मन ही मन म साचत और अदाज लगात रहत हैं। जबकि उधर क पडोसियों म यह नहीं है।

'शेष होत हुए' कहानी पारिवारिक स्तर पर अलगाव को दृष्टिगत रखकर लिखी

गई है जहा आपसी सबधो मे ही तनाव व्याप्त है। छोटे को लगता है कि वे सब एक ही घर मे रहते हुए भी निता त अलग-अलग है।

मानरजन अपनी रचना प्रक्रिया के सम्बन्ध मे कहते हैं—"आज कहानी रचना बहुत कठिन हो गई है और अपने दयनीय, अभाग्यपूर्ण और व्यग्यात्मक जीवन से असम्पक्त होकर कहानी निर्मित करना अब हमार लिए सभव नही रहा। सुविधाओ अथवा 'इस्टब्लिशमेट' को स्वीकार करके ईमानदार और सच्चा लेखन लम्ब समय तक कर सकना काफी कठिन है, इसलिए सुविधाओ के अभाव म और 'इस्टब्लिशमेट' के प्रति विद्रोही भाव के साथ अपन कम लिखन का मेर मन मे किंचित भी विचलन नही है।"

'दिवास्वप्नी' कहानी यौन जीवन की कठिनाइया को लेकर लिखी गयी है। कहानी म पात्र मानसिक रूप से कमजोर हैं। इसी प्रकार उनकी 'रचना प्रक्रिया', कहानी मे एक अजनबी एक परिवार मे अजनबीपन का खाकर फिर पा लेता है। इस अजनबियत को पाने म उसे क्या क्या भोगना पडता है, इसका जीव त चित्रण है। 'कलह' परिवारो के टूटन की कहानी है। 'आत्महत्या' मत्यु और उसकी नियति की परिचायक है। 'पिता' कहानी दो पीढिया की विचारधाराआ म टकराव की है।

मानरजन की कहानिया म जो घटनाओ, स्थितिया और पात्रा की जि दगी की यथार्थता और सवेदनशीलता उभर कर आती है उसे भाषा द्वारा फैलाव और स्पष्टता न मिलन से एक प्रकार के अधूरेपन का अहसास रहता है। यही अधूरापन उनकी कहानिया की गभीरता को व्यक्त करता है।

कृष्णा सोवती —आधुनिकता बोध को अभिव्यक्ति देने म अत्य त सफल है कृष्णा सोवती। पजाबी पष्ठभूमि उनकी कहानिया की विशिष्टता है। जहा उनकी कहानियो म वयक्तिक मूल्या का सप्रेषण है वही प्रेम, वासना और जीवन के सघर्ष भी अकित है।

'मित्रो मरजानी' उनकी बहु चर्चित कहानी है। कहानी की मुख्य पात्रा मित्रो एक बहुआयामी व्यक्तित्व की स्वामिनी है। जहा वह प्रेम और वासना की पुतली है वही ममत्व और गौरव की मूर्ति। इस कहानी मे गुरुदास और धनवती बूढे माता-पिता के रूप म चित्रित हैं। बनवारी, सरदारी और गुलजारी उनके बटे हैं और सुहाग, मित्रो और फूला इस घर की बहुए हैं। जहा सभी पारिवारिक मर्यादाओ को निभात हैं वहा सरदारी की पत्नी मित्रो ऐसा नहीं कर पाती। उसम काम भावना की अग्नि प्रज्ज्वलित है, इसस उसका व्यवहार परिवार के सदस्यो के साथ ऐसा है जिससे सब परशान रहत हैं वह अपनी कटारी सी दो आखें नचा कर जेठ से कहती है—"सान सी अपनी दह झुर झुर कर जला लू या गुलजारी देवर की घरवाली की न्याई गु सिलाई के पीछे जान खपा लू ? सच तो यू, जेठ जी, कि दीन दुनिया बिसरा मैं मनुख की जात से हस-खेल लती हू। झूठ यू कि खसम का दिया राजपाट छोड मैं कोठे पर तो नही जा बैठी।" उसका पति सरदारी उसके चरित्र पर शक करता हुआ उसस कहता है—"तू छिनालो की भी छिनाल।"

मित्रो काम-पीडित होते हुए भी हृदय की सच्ची और साफ है। इस कहानी मे पारिवारिक परिस्थितियो म काम भावना के पक्ष को उभारा गया है।

कृष्णा सोबती की कहानी 'यारो के यार' कहानी ससार मे एक अत्य त साहसिक कहानी मानी जाती है जो क्लक क जीवन की गाथा है जिसे यथाथ के धरातल पर देखा गया है। आफिस म एक सवाद है—"याद रख गुरू का कहना—आदमी के हर पिल्ले को पैंट और पतलून सताते है।" आजकल जो उठता है रिश्वत के खमीर से नम्बर दो का पैसा जोड खानदानी अमीर बना फिरता है। यार लानत है तो हम सब पर है जा क्लक की कुर्सी पर ही पेशन पर जायेंगे।"

व्यक्ति मन की अभिव्यक्ति उनकी कहानी 'बादलो क घेरे' म हुई है जिसे अत्य त सुगठित शिल्प के माध्यम स प्रस्तुत किया है।

'तिन पहाड' कहानी प्रेम पर आधारित जिसे का यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। फे टेसी का प्रभाव अधिक है।

कृष्णा सोबती के कहानी सग्रह है—'मित्रो मरजानी', 'यारो के यार', 'तिन पहाड'।

परिमाण म इतना अल्प लिखते हुए भी उ होने जितना लिखा है वह ठास और महत्त्वपूण है। भाषा और शली की सहजता, सरलता अत्य त महत्त्वपूण है।

निष्कषत यदि देखा जाय तो समकालीन हि दी कहानी चि ता मे फस हुए और जूझते हुए आम आदमी की अभिव्यक्ति है। समकालीन कहानी घटनाओ, स्थितियो चीजो और पात्रो के अनुभव पर आधारित है। कहानीकारो की कहानियो के पात्र जीवन के सघष मे चरित्रवादी और व्यवस्था के विरुद्ध खडे होने न होने की स्थिति म हैं। इसीलिए उनकी कहानिया यथाथ को छूती हुई विचार और सवेदना के स्तर पर गहराई मे कुछ नया खोज कर सामने लाती हैं। यथाथ जि दगी स उसका रिश्ता गहरा है। य कहानिया किसी विशेष परिस्थिति की नही हैं बल्कि पूरे जीवन के सघर्षों की कहानी कहती हैं। इनम आम आदमी एक विचित्र प्रकार की यान्त्रिकता, घुटन, निराशा और हताशा का शिकार होकर समाज म जीने को विवश है। समकालीन कहानी म आदमी के परम्परागत सस्कार मौन सहिष्णुता और आज्ञाकारिता टूटन क कगार पर आ गये हैं।

'नयी कहानी का कहानीकार कहानी लिखता नही अपितु जीता है, भोगता है और अपने पात्रो के माध्यम स विचारो और सवेदनाओ को व्यक्त कर देता है। अपनी भाषा और शिल्प के माध्यम स सामा य पाठक क साथ एकात्मकता स्थापित करने का प्रयास करता है, इसीलिए समकालीन कहानी के अनेक सदभ उसकी बात उदघाटित करते हैं।

सदभ सामग्री

1 समकालीन कहानी—युगबोध का सन्दर्भ—डा० पुष्पपाल सिंह
2 हिन्दी कहानी के सौ वर्ष—डा वेद प्रकाश अमिताभ
3 नयी कहानी की भूमिका—कमलेश्वर
4 नयी कहानी के विविध प्रयोग—पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु
5 आलोचना और साहित्य—डा० इन्द्रनाथ मदान
6 एक दुनिया समानान्तर—राजेन्द्र यादव
7 स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी—कृष्णा अग्निहोत्री
8 आधुनिक हिन्दी कहानी—डा० लक्ष्मी नारायण लाल
9 साहित्य और सदभ—गोविन्द मिश्र

कथा साहित्य

1 अंधेरे का सलाब—स रा यात्री
2 राजा निरबसिया—कमलश्वर (मेरी प्रिय कहानिया)
3 मास का दरिया—कमलश्वर (मेरी प्रिय कहानिया)
4 दोपहर का भोजन—अमरका त
5 जि दगी और जोंक—अमरका त
6 ल दन की एक रात—निर्मल वर्मा (मरी प्रिय कहानिया)
7 सिक्का बदल गया—सम्पादन—डा० नरेन्द्र मोहन पृष्ठ 12
8 य तेरे प्रतिरूप—अज्ञेय
9 सिक्का बदल गया—अज्ञेय
10 वही—पृष्ठ 176
11 वही—पृष्ठ 219
12 वही—पृष्ठ 190
13 ये तरे प्रतिरूप—अज्ञेय
14 वही —अज्ञेय
15 सिक्का बदल गया—सम्पादक—डा० नरेन्द्र मोहन
16 जि दगी और गुलाब के फूल—उषा प्रियवदा—छुट्टी का दिन
17 कितनी कर्दें—मदुला गग

18 कितने सबंध—सन्नाटा—महीप सिंह
19 ठडक—मरी प्रिय कहानिया—महीप सिंह पृष्ठ 91
20 छुट्टी का दिन—राकेश वत्स
21 जि दगी और गुलाब के फूल—उषा प्रियवदा
22 वापसी जि दगी और गुलाब के फूल—उषा प्रियवदा
23 वापसी—जि दगी और गुलाब के फूल—उषा प्रियवदा
24 ,, —,,
25 ,, —,,
26 ,, —,,
—,, कितना बडा झूठ
27 अभी तलाश जारी है, हम बुरे नही थे—मणिका मोहिनी पृष्ठ—18
पुरस्कृत हिंदी कहानिया—सम्पादक श्री कृष्ण
29 ,, ,, — ,,
30 बद दराजा का साथ—एक प्लेट सलाब—मन्नू भडारी
31 मेरी प्रिय कहानिया—'तलाश'— कमलेश्वर
32 आक्टोपस—टीन के घेरे—कृष्णा अग्निहोत्री
33 'एक और जि दगी'—एक दुनिया समाना तर—मोहन राकेश
34 कितना बडा झूठ—सबध—उषा प्रियवदा
35 'एक खुली हुई साझ'—राजेन्द्र यादव
'टूटना तथा अ य कहानिया' पृष्ठ—84
36 पिक्चर पोस्टकार्ड—'परि दे' सग्रह—निमल वर्मा
37 लवर्स—जलती झाडी—सग्रह—निमल वर्मा
38 मरा तन मन तुम्हारा है—खेल खिलौने—सग्रह—राजेन्द्र यादव
39 झाडी—श्रीकात वर्मा —
40 जि दगी और गुलाब के फूल—उषा प्रियवदा
41 'निशाऽजी' तथापि सग्रह—नरेश मेहता पृष्ठ—42
42 'एक और जि दगी'—वारिस तथा अ य कहानिया पृष्ठ—21 22—मोहन राकेश
43 तीन दिन पहल की रात—राजा निरबसिया—सग्रह—कमलेश्वर पृष्ठ—115
44 बीच के लोग, बीच के लोग—मार्कण्डेय पृष्ठ सग्रह—39
45 खूटे, दीवारें ही दीवारें—सग्रह—भीमसेन त्यागी
46 हम सफर—पृष्ठ—78 मृणाल पाण्डे
सग्रह—'एक स्त्री का विदा गीत'

47 एक स्त्री का विदा गीत—मृणाल पाण्डे पृष्ठ—108
48 सम्बन्ध—पृष्ठ 69-70, मेरी प्रिय कहानियां संग्रह—ज्ञानरंजन
49 'गोष्ठ'—सपाट चेहरे वाला आदमी—पृष्ठ 27—दूधनाथ सिंह
50 'ए खान आकाश नाइ'—त्रिशंकु संग्रह से—मन्नू भंडारी पृष्ठ—178—179
51 वृद्ध मुक्ति—व्रत फलाहार—निरूपमा सेवती
52 घिर हुए क्षण, 'कौन' पृष्ठ—16—महीप सिंह
53 आतंक बीज, 'सब में से एक'—संग्रह—निरूपमा सेवती
54 'जीव'—प्रथम पुष्प—संग्रह—मनीषा जमाली पृष्ठ—3—24
55 मेज पर टिकी कुहनियां—रमेश बक्षी
56 जिन्दगी और गुलाब के फूल—उषा प्रियंवदा
57 दुश्मन—एक किश्ती और—पानू खोलिया पृष्ठ—128
58 'लन्दन की एक रात', मेरी प्रिय कहानियां—निर्मल वर्मा पृष्ठ—149—146

पत्र-पत्रिकायें

1 सारिका—जनवरी—1986
2 शरण बंधु—कुत्ते—1974—अक्तूबर
3 प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय (अलवर्जेंडर)—'आजकल' मार्च, 1971
4 राम कुमार वर्मा—(यात्रा)—सारिका, अक्तूबर 1962 पृष्ठ 15
5 सुदर्शन चोपड़ा—उत्कर्ष विशेषांक 67 पृष्ठ 160 (पंचा)
6 राजी सेठ—मनोरमा अक्तूबर, 1977
7 राजी सेठ (अनावृत्त कौन)—सारिका, जनवरी 1979
8 मणिका मोहिनी (ढाई आखर प्रेम का)—सारिका जनवरी 1—1979
9 गंगा प्रसाद विमल—सारिका—फरवरी 1972 (सिद्धार्थ का लौटना)
10 माहेश्वर—'आजकल'—कथा विशेषांक
(किसी एक फूल का नाम लो) सितंबर—1977
11 शशि प्रभा शास्त्री—कहानीकार पूर्णांक—41
(धुली हुई शाम)—मई जून—1974
12 राजी सेठ (योगदीक्षा)—महिला कथाकार विशेषांक
13 मालती जोशी (मध्यांतर)—धर्मयुग—29 सितंबर—1974
14 कृष्णा अग्निहोत्री—साप्ताहिक हिन्दुस्तान
(विडम्बना)—25 सितंबर—1977
15 सुधा अरोरा (दमनचक्र)—सारिका, मार्च 1975
16 मुहम्मद ताहिर (समय)—कहानी अक्तूबर, 1970

अन्य सदर्भ

1 एक दुनिया समानान्तर—राजेन्द्र यादव—भूमिका—पृष्ठ—34—35
2 नयी कहानी की भूमिका—कमलेश्वर पृष्ठ—48
3 स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी—कृष्णा अग्निहोत्री पृष्ठ 80 81
4 स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी—83— कृष्णा अग्निहोत्री
5 हिन्दी की नई कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन—निखिलेश रोहतगी पृष्ठ 50,54
6 हिन्दी कहानी अलगाव का दर्शन—गार्डन चार्ल्स राडरमल, अनुवादक राजेन्द्र यादव
7 समकालीन कहानी की रचना प्रक्रिया—यदुनाथ सिंह

अन्य सन्दर्भ

1 राजेन्द्र यादव—भविष्य के आस पास मडराता अतीत
2 निर्मल वर्मा—अंधेरे में (मेरी प्रिय कहानियाँ, संग्रह से) पृष्ठ 75,77
3 निर्मल वर्मा—दहलीज „ „ „ „ 19
4 राजेन्द्र यादव—खेल खिलौने—पृष्ठ 34—37
5 निर्मल वर्मा—(मेरी प्रिय कहानियाँ, संग्रह से) 'अन्तर' पृष्ठ 110 111
6 कमलेश्वर—मीखचे, पृष्ठ 16, 18, 19
7 मोहन राकेश—सुहागिनें पृष्ठ— 75
8 रामकुमार— कितना समय, पृष्ठ—74
9 कमलेश्वर—पराया शहर—पृष्ठ 135
10 उषा प्रियंवदा—कितना बड़ा झूठ संग्रह से, सुरंग,
11 राजेन्द्र यादव—'बिरादरी बाहर', किनारे से 'किनारे तक', संग्रह से ।